॥ श्रीजिनवरदेवाय नमः ॥

जैनश्वेताम्बर तेरापंथी कृत

जिनज्ञान दर्पण।

प्रथम भाग।

लेखक—

लाडणू निवासी श्रावक

महालचन्द बयद।

प्रकाशक—

ईसरचन्द चोपड़ा

गंगाशहर (बीकानेर)।

कलकत्ता,

२०१, हरीसन रोडके "नरसिंह प्रेस"में

बाबू रामप्रताप भार्गव

द्वारा मुद्रित।

प्रथम वार २००० —— विना मूल्य

पुस्तक मिलने के पते

(१) भैरुँदान ईसरचन्द चोपड़ा,
मु० गंगाशहर,
जि० बीकानेर।

(२) भैरुँदान ईसरचन्द चोपड़ा,
२ पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट,
कलकत्ता।

स्वभाव है अतः थोड़ी या बहुत भूलें प्रायः प्रत्येक मनुष्यसे हो ही जाती हैं। जिसमे मैं न तो कोई सुलेखक हूं और न लेखक ही हूं और यह मेरा प्रथम साहस है फिर मुझसे गलती होना क्या आश्चर्य है? यदि प्रमादवश या मेरी अल्पज्ञताके कारण कुछ भूल चूक या त्रुटियाँ रह गई हों तो उदारहृदय पाठक मुझे क्षमा करें। मैने यथावकाश इस पुस्तकको छपने बाद पढ़ लिया है। मेरी नज़रमे जहां जहां भूल दिखाई पड़ी वही वहीसे उनको चुन चुनकर शुद्धाशुद्ध पत्र छपा दिया है। विज्ञ पाठक शुद्धाशुद्ध पत्रसे मिलाकर अपनी अपनी पुस्तकोंको शुद्ध करलें और इस कष्टके लिये मुझे अवश्य क्षमा करें। भूलें रहनेका कारण यह है कि यह पुस्तक बहुतही जल्दी छपी है इससे प्रूफ देखने का समय कम मिला। सम्भव है कि छपते समय कुछ अक्षर और मात्राएँ टूट गई हों। जो भूलें पाठकोंकी नज़र तले आवें उनसे मुझे सूचित कर दें। इस कृपाके लिये मैं उनका चिरकृतज्ञ रहूंगा और दूसरी आवृत्तिमे हठ त्यागकर उन भूलोंको सुधार दूंगा।

यदि जिन-धर्म प्रेमी पाठक इस पुस्तकसे कुछ भी लाभान्वित होंगे तो मैं अपने परिश्रमको सार्थक

समझूंगा। यदि जिनेश्वर देवके वचनोंके विरुद्ध कुछ छप गया हो तो मुझे मिच्छामि दुक्कडं।

आपका हितेच्छु

श्रावक महालचन्द बयद।
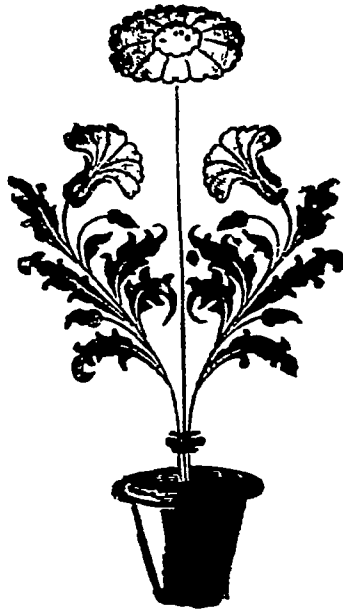
॥ गजल ॥

जिनेश्वर धर्म सारा है।
मेरे प्राणों से प्यारा है॥
जिनका ध्यान धर भाई।
श्रीजिनराज फरमाई॥
जिससे होत सुखदाई।
इसीसे दिल हमारा है॥ जिने ॥१॥
जिनेश्वर नाम जो गावे।
कि भव से पार होजावे॥
जनम वो फेर ना पावे।
होय भवसिन्धु पारा है॥ जिने॥ २॥
ऐसे जिनराज प्यारे हैं।
जिन्होंने भक्त त्यारे हैं॥
जिन्होंने कर्म मारे हैं।
उन्हीका मो आधारा है॥ जिने॥ ३॥
विमुख जो धर्म से होवे।
पकड़ सिर अन्तमे रोवे॥
जिनेश्वर धर्म वो खोवे।
जिन्होंको नर्क प्यारा है॥ जिने॥ ४॥

नहीं नर भव जनम हारें।
जिनेश्वर धर्म जो धारे॥
वोही यम फांसको टारे।
महालचंद दास थारा है॥ जिने॥ ५॥

दोहा। चौवीस जिन प्रणमी करी। वली भिक्षु गणीराज॥ प्रणम्यांथी शिव सुख लहै। पामे भवोदधि पाज॥ १॥ पंचम आरे अवतर्या। दान दया दिपाय॥ सांसण नन्दण वन समो। दिन २ तेज सवाय॥ २॥ वसु पट स्वाम कालुगणी। सादृश जेम जिणन्द॥ षटमत षट खण्ड साझवा। नवलज नाह नरिन्द॥ ३॥ तेरो सर्ण लइ प्रभु। "जिन ज्ञान दर्पण" ताज॥ करी प्रगट पढ़वा भणी। भव्य जीवों हित काज॥ ४॥ पामे गुरु पसायथी। समकित रत्न सुजोय॥ महालु कहै नित सेवियां। मनवांछित फल होय॥ ५॥

विषय-सूची

निवेदन

प्रिय पाठको ! मैंने यह "जिन ज्ञानदर्पण" नामक पुस्तक, अपनी अल्पबुद्धिके अनुसार, भव्य जीवोंके पठनार्थ, प्राचीन महर्षियों कृत चरचाके बोलोंके थोकड़ा, श्रीजिनेश्वर देव व पूज्य गणीराजके गुणोंके स्तवन, सभाय, ढाल, छन्द, सवैया गज़ल, और आषाढ़ मुनिको व्याख्यान सामायकरा बत्तीस दोष, चौंतीस अतिशय, पैंतीस वाणी, पञ्च मण्डलिका दोष, दशविधि, यति-धर्म, सतरह भेद-संयम, बयालीस दोष, बावन अणाचार, बहु श्रुति की सोलह उपमा, अष्ट सम्पदा, चौदह स्थानक समुर्छिम मनुष्य उपजे तथा एकलको चौढालियो इत्यादि संग्रह कर तैयार की है।

इस पुस्तकके तैयार करनेमे, भरसक सावधानी से काम लिया गया है; तथापि भूल करना मनुष्यका

॥ श्रीजिनायनमः ॥

अथ

॥ श्रीचउवीसजिनस्तुतिप्रारंभः ॥

प्रथम ऋषभजिनस्तवनं

रागप्रभाति ।

वेकरजोडीप्रणमुंसदा ॥ युगआदेआदिजिणंदा ॥ करमरिपुगजउपरे ॥ मृगराजमुणंदा ॥ प्रणमुंप्रथमजिणंदने ॥ जयजयजिणचंदा ॥१॥ एआंकणी ॥ अनुकूलप्रतिकूलममसह्यो ॥ तपविविधतपंदा ॥ चेतनतनभिन्नलिखव्यो ॥ ध्यानसुक्लध्यावंदा ॥ प्र० ॥२॥ पुदगलसुखअरिपेखिया ॥ दुःखहेतुभयाला ॥ विरक्तचित्तविगव्योइस्यो ॥ जाण्याप्रलचजाला ॥ प्र० ॥ ३ ॥ संवेगसरोवरजूलतां ॥ उपशमरसलीनो ॥ निंदास्तुतिसुखदुःख ॥ समभावसुचीनो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ वांसीचंदनसमपणे ॥ समचित्तजिनध्याया ॥ इमतनसारतजीकरी ॥ प्रभुकेवलपाया ॥ प्र० ॥ ५ ॥ हुंवलीहारीथाहरी ॥ वाहावाहाजिनराया ॥ वाइदशाकदआवसि ॥

मुझमनउमाया ॥ प्र० ॥ ६ ॥ संवतउगणीसेंभाद्रवे ॥ दशमीदित्यवार ॥ ऋषभजिनंदरटवेकरी ॥ हुउहर्ष-अपार ॥ प्र० ॥ ७ ॥

अथ अजितजिनस्तवन ।

अहोप्रभुअजितजिणेसरआपरो ॥ ध्यावुंध्यानहमेसहो ॥ अहोप्रभुअसरणसरणातुंहीसही ॥ मिटेशकल-कलेसहो ॥ अहोप्रभुतुमहीदायकशिवपंथना ॥ १ ॥ अहोप्रभुउपशमरसभरीआपरी ॥ वाणीसरससालहो ॥ अहोप्रभुत्तिनिसरणीमहामनोहरु ॥ सुण्यामिटेभ्रमजालहो ॥ अ० ॥ २ ॥ अहोप्रभुउभयबंधणआपआखिया ॥ रागद्वेषविकरालहो ॥ अहोप्रभुहेतुएनरकनि-गोदना ॥ राच्यामुरखवालहो ॥ अ० ॥ ३ ॥ अहोप्रभुरमणीराखशणीसमीकही ॥ विषयवेलमोहजालहो ॥ अहोप्रभुकामनेभोगकिंपाकशा ॥ दाख्यादीनदयाल-हो ॥ अ० ॥ ४ ॥ अहोप्रभुविविधउपदेशदेइकरी ॥ तेंताख्यानरनारहो ॥ अहोप्रभुभवसिंधुपोततुंहीसही तुंहीजगतआधारहो ॥ अ० ॥ ५ ॥ अहोप्रभुसरणेआयोतुजसाहेबा ॥ वसोरह्याहीयामांयहो ॥ अहोप्रभुआगमवयणअंगीकरी ॥ रह्योध्यांनतुजध्यायहो ॥ अ० ॥ ६ ॥ अहोप्रभुसंवतओगणीसेंनेभाद्रवे ॥ दसमीआदित्यवार-

हो ॥ अहोप्रभुआपतणा।गुणगावीया ॥ वर्त्योजयजय कारहो ॥ अ० ॥ ७ ॥

अथ संभवजिनस्तवन ।

संभवसाहिबसमरीये ॥ ध्यायोहोजिणनिर्मलध्यानकि ॥ एकपुद्गलदृष्टथापोने ॥ कीधोहेमनमेरुसमानकिसंभव साहिबसमरिये॥ १ ॥ एआंकणो ॥ तनचंचलतामेटने हुआहेजगथीउदासीनकि ॥ ध्यानसुक्लथिरचित्तकरी ॥ उपशमसुखमेंहोइरह्यालीनकि ॥ सं० ॥२॥ सुखइंद्रा-दिकनांसहु ॥ जाणयाहोप्रभुअनीतअसारकि ॥ भोग भयंकरकटुकफल ॥ पेख्याहेंदुरगतदातारकि ॥ सं० ॥ ॥ ३ ॥ सुधासंवेगरसेंकरी ॥ पेख्याहेंपुद्गलमोहपासकि अरुचअनादरआणीने ॥ आतमध्यानेकरतांविलासकि ॥ सं० ॥ ४ ॥ मंगकांडीमनवशकरी ॥ इंद्रियदमनकीही दुरदंतकि ॥ त्रिविधतपेकरीस्वामीजी ॥ घातीकर्मनो कीधोअंतकि ॥ सं० ॥ ५ ॥ हुंतुजसरणेआवियो ॥ कर्मविदारणतुंप्रभुवीरकि ॥ तेंतनमनवचनवशकिया ॥ दुःकरकरणोकरणमहाधीरकि ॥ सं० ॥ ६ ॥ संवतओ गणीसमेभादवे ॥ सुदिइग्यारसआणविनोदकि ॥ संभव साहिवसमरिया ॥ पामेहेमनअधिकप्रमोदकि ॥ सं० ॥ ७ ॥

अथ अभिनंदनजिस्तवन ।

तीर्थंकरहोचोथाजगभाणकांडिग्रहवासकरीमतिनिर्मलो ॥ विषयविटंबनाहोतजियाविषफलजाण ॥ अभिनंदनवंदुंनितमनरलो ॥१॥ एआंकणी ॥ दुःकरकरणीहोकोधीआपदयाल ॥ ध्यानशुधारससमदममनगलो ॥ संगछांडयोहोजाणीमायाजालकी ॥ अ० ॥२॥ वीररसेंकरीहोकीधोतपस्याविशाल ॥ अनित्यअशरणअसुभभावेंअगदलो ॥ जगभूठोहोजाण्योआपकृपाल ॥ अ० ॥३॥ आतममंत्रीहोसुखदातासमपरिणाम ॥ एहीजअमित्रअशुभभावेंकलकलो ॥ एहवीभावनाहोभायांजिनगुणधाम ॥ अ० ॥४॥ लीनसंवेगेंहोध्यायांशुक्लध्यान ॥ घायकश्रेणीचढीहुआकेवलो ॥ प्रभुपायाहोनिरावरणसुनाण ॥ अ० ॥५॥ उपशमरसनीहोवागरीप्रभुवाण ॥ तनमनप्रेमपायाजनसांभलो ॥ तुमवचधारीहोपाम्यापरमकल्याण ॥ अ० ॥६॥ जिनअभिनंदनहोगायातनमनधार ॥ संवतओगणीसेंनेभाद्रवे अगदलो ॥ सुदिइग्यारसहोहुओहर्षअपार ॥ अ० ॥७॥

॥ अथ सुमतिजिनस्तवन ॥

सुमतिजिणेसरसाहेबसोभता ॥ सुमतिकरणसंसार ॥ सुमतिजप्यांथीसुमतिवधेघणी ॥ सुमतिसुमतदातार ॥

सु० ॥ १॥ एआंकणी ॥ ध्यानसुधारसनिर्मलध्यायने ॥ पायाकेवलनाण ॥ वाणसरसवरजनवहुताख्या ॥ तिमरहरणजगभाण ॥ सु० ॥२॥ फिटिकसिंहासणजिन जौफावता ॥ तरुआशोकउदार ॥ छत्रचामरभामंडल झलकता ॥ सुरदुंदुभिझणकार ॥ सु० ॥३॥ पुष्पविष्टिवरसुरध्वनीदीपतां ॥ साहिबजगसिणगार ॥ अनंतज्ञानदर्शनसुखबलघणुं ॥ एदुवादशगुणश्रीकार॥ सु० ॥४॥ वाणीशुधारसउपशमरसभरी ॥ दुर्गतिमूलखपाय ॥ शिवसुखनाअरिशब्दादिककह्या ॥ जगतारकजिनराय ॥ सु० ॥५॥ अंतरजामीरेसरणेआपरे ॥ हुंआयोअवधार ॥ ध्यानतुमारोनिशदिनसांभरे ॥ सरणागतसुखकार ॥ सु० ॥६॥ संवतओगणीसेरेसुदपखभाद्रवे ॥ वारसमंगलवार ॥ सुमतिजिणेसरसाहिबसमरिया ॥ आणंदहर्षअपार ॥सु०॥७॥

अथ पद्मजिनस्तवन ।

निर्लेपपद्मजिसाप्रभु ॥ पद्मप्रभुपीछाण ॥ संयमलीधोतिणसमें ॥ पायाचोथोनाण ॥ पद्मप्रभुनितसमरिये ॥१॥ एआंकणी ॥ ध्यानशुक्लप्रभुध्यायने ॥ पायाकेवलसोय ॥ दीनदयालतणीदिशा ॥ कहणीनआवेकोय ॥ पद्म०॥२॥ समदमउपशमरसभरी ॥ प्रभुतुमतणीवाणि ॥ त्रिभु-

वनतिलकतुंहोसही ॥ तुंहीजनकसमान ॥ पद्म० ॥३
तुंप्रभुकल्पतरुसमो ॥ तुंचिंतामणीसोय ॥ समरण
करताश्रापरो ॥ मनवांछितहोय ॥ पद्म० ॥४॥ सुखदा
इसहुजगभणो ॥ तुंहीदीनदयाल ॥ सरणेआयोतुज
साहिबा ॥ तुंहीपरमकृपाल ॥ पद्म० ॥५॥ गुणगातां
मनगहगहे ॥ सुखसंपतजाण ॥ विघ्नमिटेसमरण
कियां ॥ पामेपरमकल्याण ॥ पद्म०॥५॥ संवतओगणी
सेनेभाद्रवे ॥ सुदिवारसदेख ॥ पद्मप्रभुरटाालाडणुं ॥
हूओहर्षविशेष ॥ पद्म०॥७॥

अथ सुपार्श्वजिनस्तवन।

सुपारससातमांजिणंदए ॥ त्यांनेसेवेसुरनरवृंदए ॥
सेवकपूरणआसए ॥ भजियेंनित्यस्वामिसुपासए ॥१॥
एआंकणी ॥ जनप्रतिबोधणकामए ॥ प्रभुवागरिवाण
अमामए ॥ संसारथीहुआउदाशए ॥भ०॥२॥ पाम्या
कामभोगथो उद्वेगए ॥ वलीउपजेपरमसंवेगए ॥ एह
वातुमवचनसरसविलासए ॥भ० ॥३॥ घणीमीठीचक्री
नीखीरए ॥ वलीखीरसमुद्रनोनीरए ॥ एहथीतुम
वचनअधिकविमासए ॥भ०॥४॥ सांभलनेजनवृंदए॥
रोमरोममेंपामेंआनंदए॥जियांरीमिटेनरकादिकत्रासए
॥भ० ॥५॥ तुंप्रभुदीनदयालए ॥ तुंहीअसरणासरणा

निहालए ॥ हुंछु तुमारोदासए ॥भ० ॥६॥ संवतओ गणीसिसोयए ॥ भाद्रवासुदितेरसजोयए ॥ पोचोम ननीआसए ॥भ०॥७॥

अथ चंद्रप्रभुजिनस्तवन ।

होप्रभुचंदजिनेसरचंदजिस्यो ॥ वाणीशीतलचंदसी निहालहो ॥ प्रभुउपशमरसजिनसांभले ॥ मिटेकर्म भ्रममोहजालहो ॥ प्रभु० ॥१॥ एआंकणो ॥ हो प्रभु सूरतमुद्रासोभती ॥ वारूरूपअनूपविशालहो ॥ प्रभु इंद्रसुचिजिननिरखतां ॥ तेतोटप्तनहुवेनिहालहो ॥ प्रभु०॥२॥ महावोतरागप्रभुतुंहीसहो ॥ तुमध्यानध्यावेचित्तरोकहो ॥ प्रभुतुमतुल्यतेहुवेध्यानथी॥ मनपाया पर्मसंतोषहो ॥ प्रभु०॥३॥ होप्रभुलीनपणेतुमेध्याविया ॥ पामेइंद्रादिकनीऋद्धिहो ॥ वलेविविधभांतसुखसं- पदा ॥ लहेआंमोसहीआदिलब्धिहो ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ नरेंद्रपदपामेसहो ॥ चरणसहीतध्यानतनमनहो ॥ वलेअहमिंद्रपदपावेसही ॥ निश्चलक्रियांधारोभजनहो॥ प्रभु० ॥५॥ होप्रभुसरणेआयोतुजसाहेवा ॥ तुमध्यान धरुंदिनरयणहो ॥ प्रभुतुमसिलवासुभमनउमह्यो ॥ तुमसरणाथीसुखचेनहो ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ संवतओगणीसेनेभाद्रवे ॥ सुदितेरसवुधवार हो ॥ प्रभुचंद्रजिनेश्वरसमरिया ॥ हुओआनंदहर्षअपारहो ॥ प्रभु: ॥७॥

अथ सुबुद्धिजिनस्तवन ।

सुबुद्धिकरीभजियमदा ॥ सुबुद्धिजिनेसरस्वामीहो ॥ पुष्पदंत्तनामेदुसरो ॥ जगअंतरजामीहो ॥ सुबुद्धिभजियेंसिरनामीहो ॥१॥ ऐश्रांकगी ॥ इंद्रनरिंद्रचंद्रते इंद्राणीअभिरामीहो॥ निरख निरख धापेनहो ॥ एह वोरूपअमामीहो सुः ॥ २ ॥ स्वेतवरणप्रभुसोभतां वारूवाणअमामीहो ॥ उपशमरसजनसांभल्यां ॥ मिटेभवभवखामीहो सुः ॥३॥ समोसरणविचफावतां ॥ त्रिभुवनतिलकतमामीहो ॥ इंद्रथकीउपेघणां ॥ शिवदायकस्वामीहो सुः ॥४॥ मधुमकरंदतणोपरें ॥ सुरनरकरतसलामीहो ॥ तोपणरागव्यापेनहो ॥ जीत्योमोहहरामीहो सुः ॥५॥ जेजोधाजगमेंघणा ॥ सिंघसाथेसगरामीहो ॥ तेमनइंद्रियवसकरी ॥ जोडीकेवलपामीहो ॥ सुः॥६॥ श्रोगणीसेंपुनमभाद्रवे ॥ प्रणमीसिरनामीहो ॥ मनचिंततवस्तुमिलें ॥ रटियाजिनस्वामीहो सुः ॥७॥

अथ शीतलजिनस्तवन ।

शीतलजिनशिवदायका ॥साहेबजी॥ शीतलचंदसमान हो ॥ निरनेही ॥ शीतलअमृतसारिखा ॥ साहेबजी ॥ तप्तमिटेतुजध्यानहो ॥ निस्नेही ॥ सूरतथारीमनवसी

साहिबजी ॥१॥ निंदेवंदेतोभगीसहिबजी ॥ रागद्वेषनहीं तामहो ॥ निस्नेहो ॥ मोहदावानलतेंमेटियो ॥साहिब-जी ॥ गुणनीपनतुजनामहो निस्नेही ॥सु०॥२॥ नृत्य करंतुजआगलेंसाहिबजी ॥ इंद्राणीसुरनारहो ॥ नि-स्नेहो ॥ रागभावनहीउपजे ॥ साहिबजी ॥ अंतरतम निवारहो ॥ निस्नेही ॥ सु० ॥३॥ क्रोधमानमायालो-भनो ॥ साहिबजी ॥ मगनमुंअधिकीआगहो ॥ निस्ने-हो ॥ शुक्लध्यानरूपजलकरी ॥ साहिबजी ॥ थयाशी-तलिभूतमाहाभाग्यहो॥ निस्नेही ॥ सु०॥४॥ इंद्रोनो इंद्रीआकरा ॥ साहिबजी ॥ दुरजयनेदुरदंतहो ॥ नि-स्नेहो ॥ तेंजीत्यामनथिरकरी ॥ साहिबजी ॥ धरिउप-शमचितसंतहो ॥ निस्नेहो ॥ सु० ॥५॥ अंतरजामी आपरो ॥ साहिबजी ॥ ध्यानधरुंदिनरयणहो ॥ नि-स्नेहो ॥ वाहोदिशाकदआवशे ॥ साहिबजी ॥ होसे उत्कृष्टचेनहो ॥ निस्नेहो ॥ सु० ॥६॥ उगणीसेपुनम भाद्रवे ॥ साहिबजी ॥ शीतलमोलवाकाजहो ॥ नि-स्नेहो ॥ शीतलजिननीनेममरिया ॥ साहिबजी ॥ छि योशीतलकुवोआजहो ॥ निस्नेहो ॥ सु० ॥ ७ ॥

अथ श्रीश्रेयांसजिनस्तवन ।

मोक्षमार्गश्रेयेसोभता॥ गिरवास्वामश्रेयांसउदाररे॥ जेजेश्रेयवस्तुसंसारमें॥ तेतेआपकरीअंगीकाररे २॥

श्रेयांसजिनेस्वरुप्रणमुनितवेकरजोडरे॥ १॥ समितगु प्तिदुधरगणा ॥ धर्मसुक्लध्यानउदाररे ॥ एश्रेयवस्तुशि वदायनी ॥ आपश्यादरीोहर्षअपाररे ॥ श्रे० ॥२॥ तन चंचलतामेटने ॥ पद्मासनआपविराजरे॥ उत्कृष्टोध्या नतिणाकियो ॥ अतंतश्रीजिनराजरे ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ इंद्रीयविषयविकारथी ॥ नरकादिकेरुलियोजीवरे ॥ कामनेभोगकिंपाकसा ॥ रहियेदुरथीदुरसदीवरे ॥श्रे० ॥४॥ संयमतपजपशीलए॥ शिवसाधनमहासुखकाररे॥ अनित्यअसरणअनंतए ॥ धर्मोनिर्मलध्यानउदाररे ॥ श्रे०॥ ॥५॥ स्त्रीयादिकनासंगते ॥ आलिंवनदुःखदा ताररे ॥ अशुद्धआलिंवनछांडने ॥ धर्मोध्यानआलंवन साररे ॥ श्रे०॥६॥ सरणेआयोतुजसाहिवा ॥ वार वारकरुंनमस्काररे ॥ उगणीसेपुनमभाद्रवे ॥ सुजव र्त्याजयजयकाररे ॥श्रे०॥७॥

अथ श्रीवासुपुज्यजिनस्तवन ।

द्वादशमाजिनवरभजिये ॥ रागद्वेगमच्छरमायात जिये ॥ लालवरणतनछविजाणी ॥ प्रभुवासपुज्यभजले प्राणी ॥ १ ॥ वनीताजाणीवितरणी ॥ शिवसुंदरवर वाहुंसघणी ॥ कामभोगतज्याकिंपाकजाणी ॥ प्र० ॥ २ ॥ अंजनमंजणसुअलगा ॥ वलीपुष्फविलेपननही वलगा ॥ कर्मकाप्याध्यानमुद्राधारी ॥ प्र० ॥३॥ इंद्र

घकीअधिकाओपे ॥ करुणागरकष्टेहिनहीकोपे ॥ वर साकरदुधनिसीवाणी ॥ प्र० ॥४॥ स्वीरनेहपासादुरदं ता ॥ फल्यानरकनिगोदतणापंथा ॥ छूहभवपरभव दु:खदाणी ॥ प्र० ॥५॥ गजकुंभदलमृगराजहणी ॥ पण दोहलीनिजआत्मादमणी ॥ इमसुणीवहुजीवचेत्याजा णी ॥प्र०॥६॥ भाद्रवापुनमओगणीसो ॥ करजोडनमु वासुपुज्यइसो ॥ प्रभुगातारोमरायहुलसाणी॥ प्र०॥७॥

अथ श्री विमलजिनस्तवन ।

मरणेतिहारिहोविमलप्रभु ॥ सेवकनीअरदाश ॥ आ योमरणातिहारेहो ॥ विमलकारणप्रभुविमलनाथजी ॥ विमलआपमलरहीत ॥ विमलध्यानधरताहुवेनिर्मल ॥ तनमनलागोप्रीत॥ साहिबसरणेतिहारेहो ॥१ ॥ विम लध्यानप्रभुआपध्याया ॥ तिणसुंहुआविमलजगदीस ॥ विमलध्यानवलीजेकोइध्यासी ॥ होसीविमलसरीस ॥ सा० ॥ २ ॥ विमलप्रहैवासिद्रव्यजिनंद्रथा ॥ दिक्षालि यांभावेसाध ॥ केवलउपनाभावेजिनेस्वर ॥ भावेविम लआराध ॥सा० ॥ ३ ॥ नामस्थापनाद्रव्यविमलथी ॥ कार्यनसरेकोय ॥ भावविमलथीकार्यसुधरे ॥भावजप्यां शिवहोय ॥ सा० ॥ ४ ॥ गुणगीरवागंभीरधीरतुंम ॥ तुंसेटणजमत्राम ॥ मेतुमवयणआगमसिरधारया ॥ तुं

सुजपूरणआस ॥सा०॥५॥ परमदयालकृपालसाहिब ॥ शिवदायकतुंमजगनाथ ॥ निश्चलध्यानकरितुमओल खि ॥ तोमिलितुमसंघात ॥ सा० ॥ ६ ॥ अंतरजामी आपउजागर ॥ मेतुममरगोलीध ॥ संवतओगणीसें भाद्रवेपुंनमवंवीतकार्यसिद्ध ॥ सा० ॥ ७ ॥

अथ श्री अनंतजिनस्तवन ।

अनंतनाथजिनचउदमा ॥ जिनरायारे ॥ द्रव्यचो थेगुणस्थान॥ स्वामिसुखदायारे ॥ भावेजिनहुआते रमे ॥ जिन० ॥ एटलेद्रव्यजिनजाण ॥ स्वामि०॥ १॥ जिनचक्रिसुरजुगलिया ॥ जि०॥ वासुदेववलदेव ॥ स्वामि०॥ पंचमगुणपावेनही ॥जि०॥ यांरीरीतअनादि खमेव ॥ स्वा०॥२॥ दीक्षालीधीतिणसमे ॥जि०॥ आ यासातमेगुंणस्थान ॥स्वा०॥ अंतरमुहूर्त्ततिहांरहो ॥ जि०॥ छठेवहुस्थितिजाण ॥ स्वा०॥३॥ आठमांथीदो यश्रेणीकहि॥ जि० ॥ उपशमखपकपिछाण ॥स्वा०॥ उप शमजायइग्यारमे ॥जि०॥ मोहदवावतोजाण ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ श्रेणीउपशमजिननवीलहि ॥ जि० ॥ खपकश्रे णीधरिखंत ॥स्वा०॥ चारित्रमोहखपावतां ॥ जि० ॥ चडीयाध्यानअत्यंत ॥स्वा०॥५॥ नवमेआदिसंजलचि हुं ॥जि०॥ अंतसमेएकलोभ ॥ दसमेसुक्ष्ममाचते ॥

जि० ॥ सागारउपयोगसोभ ॥ स्वा० ॥६॥ एकादश
मोमोलंघीने ॥ जि० ॥ वारमेंमोहखपाय ॥ स्वा०॥
त्रिकर्मएकसमयहण्या ॥जि०॥ तेरमेंकेवलपाय ॥स्वा०
॥७॥ तीर्थथापीयोगरु'धीने ॥ जि० ॥ चउदमांथीसि
द्धथाय ॥स्वा०॥ भोगणोसपुनमभाद्रवे ॥ जि०॥ अनंत
रत्याहरखाय ॥स्वा० ॥८॥

अथ श्रीधर्मजिनस्तवन ।

धर्मजिनधर्मतणाधोरी ॥ वकटमोहपासनाख्याती
डी ॥ तीरणधर्मआत्मसु'जोड़ी होप्रभुधर्मदेवप्यारा ॥१॥
सुक्लध्यानअमृतरसलीना ॥ संवेगरसेकरीजिनभीना ॥
प्यालाप्रभुउपशमनापीना ॥ हो० ॥२॥ पुद्गलसुखअरि
जाणयास्वामी ध्यानथिरचित्तआत्मधामी॥ जोडीजुगकें-
वल नीपामी ॥हो०॥३॥ जाण्याशब्दादिकमोहजाला ॥
रमणीसुखकिंपाकसमकाला ॥ हेतुनरकादिकदुःखमा
ला ॥हो०॥४॥ थाप्याप्रभुच्यारतीरथतायो ॥ भाख्यो
धर्मजिनआज्ञामांयो ॥ आज्ञावाहिरअधर्मदुःखदा
यो ॥ हो० ॥ ५॥ व्रतधर्मधर्मजिनअख्याता ॥ द्रुव्रत
कह्योअधर्मदुखदाता ॥ सावद्यनिरबद्यजूदाजूदाकह्या
खाता ॥ हो० ॥६॥ वहुजनतारीमुक्तिध्याया ॥ भोग
णीसेंआसोजधुरदिनआया ॥ धर्मजिनरटवेसुखपाया ॥
हो० ॥ ७ ॥

अथ श्रीसांतिजिनस्तवन ।

शांतिकरणप्रभुशांतिनाथजी ॥ सुखदायकशिवकं दकी ॥ वलिहारीहोसांतिजिणंदकी ॥ १ ॥ उपशमवा णीसुधारसअनुपम ॥ मेंटणमिथ्यात्वमंदकी ॥ व० ॥ ॥२॥ कामभोगरागद्वेषकटुकफल ॥ विषवेलमोहअं धकी ॥ व० ॥३॥ राचणीरमणीवेतरणी ॥ पापपुतली असुचदुरगंधकी ॥ व० ॥४॥ विविधउपदेशदेइजनता रयां ॥ हुं वलिहारीजाउं विश्वानंदकी ॥ व० ॥ ५ ॥ परमदयालगुणालक्रपानिधि ॥ तुजजयमालाआनंद की ॥व०॥६॥ उंगणीसेंआसोजविदिएकम ॥ सांभल तासुखकंदकी ॥ व० ॥ ७ ॥

अथ श्रीकुंथुजिनस्तवन ।

॥ रागप्रभाती ॥

कुंथुजिनेसरकरुणासागर ॥ त्रिभुवनसिरटीकोरे ॥ प्रभुजीकोसमरणकरनीकोरे ॥१॥ अद्भुतरूपअनूपमकुं थुजिन ॥ दर्शनजगप्रीयकोरे ॥ प्र० ॥ २ ॥ उपशमवा णीसुधारसअनूपम ॥ वालहोजिनवरवेकोरे ॥प्र०॥३॥ अ नुकंपादोयश्रोजिनभांषी ॥ मर्मएसमदृष्टीकोरे॥प्र०॥४॥ असंयतीरोजीवणोवंछे ॥ तेसावद्यतहतीकोरे ॥प्र०॥५॥ निरवद्यकरुणाकरीजिनताख्यां ॥ धर्मवेजिनजीकोरे ॥

प्र०॥६॥ उंगणीसेआसोजवदिपकम ॥ सरणोसाहिव जीकोरे ॥ प्र०॥ ७ ॥

अथ श्रीअरहजिनस्तवन ।

॥ रागशोरठ ॥

अरीजिनकर्मघरीनांहंता ॥ जगतउद्धारणजिहाज ॥ म्हांनिप्यारालागोछोजीअरिजिनराज ॥ म्हांनिवाला लागोछोजी ॥ अरिमहाराज ॥१॥ वारूंरेजिनेस्वररूप अनूपम ॥ तुंसुगुणासीरताज ॥म्हां०॥ २ ॥ परिसह उपसर्गरूपअरिहण्या ॥ पायाछोकेवलआज ॥ म्हां० ॥३॥ नयणनधापेनिरखतांजी ॥ इंद्राणीसुरराज ॥ म्हां० ॥४॥ वाणीविशालदयालपुरुषनी ॥ भूषणपाना वेभाज॥ म्हां०॥५॥ सरणेआयोस्वामरेजी ॥ अविचल सुखरेकाज ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ ओगणीसेआसोजवदो एकम ॥ आनंदउपनुंआज ॥ म्हां० ॥७॥

अथ श्रीमल्लीजिनस्तवन ।

रागप्रभाती ।

नीलवरणमल्लोजिनेस्वर ॥ ध्याननिर्मलध्यायो ॥ अल्पकालमां हेप्रभु ॥ परमज्ञानपायो ॥ मल्लीजिनेस्वर समरनाम ॥ असर्णांमरणआयो ॥१॥ कल्पपुष्पमाला जेम ॥ सुंगधतनसुहायो ॥ सुरवधुवरनयणभ्रमर ॥

अधिकहिलपटायो ॥म०॥२॥ स्वपरचक्रविविधविघने ॥ मिटततुजपसायो ॥ सिंहनादथकीगजेंद्रजेमदुरजायो ॥ म०॥ ३ ॥ वाणीविमलनिर्मलसुधा ॥ रससंवेगछायो ॥ नरसुरासुरतिय समजसुणतहरखायो ॥ म० ॥४॥ जगदयालतुंहीकृपाल ॥ जनकज्युंसुखदायो ॥ वत्सलनाथस्वामसाहिब ॥ सुजशतिलकपायो ॥ म० ॥ ५ ॥ जप्पजापखप्पपाप ॥ तप्पतहिमिटायो ॥ मल्लीदेवविविधसेव ॥ जगअक्केरोपायो ॥म० ॥६॥ ओगणीसेआसोजकृष्ण ॥ तिजसुदिनआयो ॥ कुंभनंदनकरआनंद ॥ हरषथीमेंगायो ॥म०॥७॥

अथ श्रीमुनीसुव्रतजिनस्तवन ।

शोरठ ।

सुमित्रानंदनश्रीमुनिसुव्रत॥ तीरथनाथजिनजाणी ॥ चारित्रलेइकेवलउपजायो ॥ उपशमरसनीवाणीरा ॥ प्रभुजीआपप्रवलवडभागी ॥ १ ॥ त्रिभुवनदायकसागिरा ॥ प्र० ॥ आ० ॥ एआंकणी ॥ चोत्रीसअतिशयपेंत्रीसवाणी ॥ निरखतसुरइंद्राणी ॥ उपशमरसनीवाणीसांभली ॥ हरखसुंआंखभराणीरा ॥प्र०॥आ०॥२॥ शब्दरूपरसगंधनेफरस ॥ तेप्रतिकूलनेहुवितुमआगे ॥ पांचदरशनथासुंपगनहीमंडे ॥ तिमअशुभशब्दादिकभागेरा ॥ प्र० ॥आ०॥३॥ सुरकृतजलस्थलपुष्फपुजवर ॥

तेढ्यांडीचितदीनो ॥ तुजनिश्वाससुगंधमुखपरिमल ॥ मनभमररसलीनोरा ॥ प्र: ॥ आ: ॥४॥ पंचेंद्रीयनरसुखीय, तुमसुंतेकिमदुःखदायो ॥ एकेंद्रीअनलतजे प्रतिकूलपणु ॥ वाजेगमतोवायोरा ॥प्र: आ: ॥ ५ ॥ रागद्वेषदुरदंततेदस्या ॥ जीत्याविषयविकारो ॥ दीनदयालआयोतुजसरणे ॥ तुंगतिमतिदातारोरा ॥ प्र: आ: ॥६॥ ओगणीसेंआसोजवीजकृस्न ॥ श्रीमुनिसुव्रतगाया ॥ सहेरलाडणुरूडीरीतें ॥ आनंदअधिकीपायारा ॥ प्र: ॥ आ: ॥७॥

अथ श्रीनमिजिनस्तवन ।

नमिनाथअनाथांरोनाथोरे ॥ नित्यनमणकरुंजोडी हाथोरे ॥ कर्मकाटणवीरविख्यातो ॥ प्रभुनमिनाथजी मुजप्यारारे ॥१॥ प्रभुध्यानसुधारसध्यायारे ॥ पदकेवल जोडोपाया रे ॥ गुणउत्तमउत्तम आया ॥प्र०॥२॥ वागरीप्रभुवाणविशालोरे ॥ खीरसमुद्रथीअधिकरसालोरे ॥ जगतारकदिनदयालो ॥ प्र० ॥३॥ थाप्यातीरथच्यारजिणंदारे ॥ मिथ्यातिमिरहरणनेमुणंदारे ॥ त्यानेसेवेमुरनरवृंदा ॥प्र०॥४ ॥ सुरअनुत्तरविमाननासेवेरे प्रश्नपूछ्यांउत्तरजिनदेवेरे ॥ अवधिग्यांनकरीजाणलेवे ॥ प्र: ॥५॥ तिहांबेठातेतुमध्यानध्यावेरे ॥ तुमेयोगमुद्राचित्तचावेरे ॥ तेपणआपरीभावनाभावे ॥ प्र: ॥

॥ ६॥ ओगणीसिआसोजउदारोरे ॥ करनतीजगायागुण सारोरे ॥ कहेआनंदहरषअपारो ॥प्र:॥७॥

अथ श्रीनेमजिनस्तवन ।

रिठनेमिस्वामितुंजगतार ॥ अंतरजामी ॥ तुंतो रणस्युफिरयोजिनस्वाम॥ अद्भूतवातकरीतेंअमाम ॥रि: ॥१ ॥ राजमतीछाड़ीनेजिनराय ॥ शिवसुंदरस्युंप्रीत लगाय॥ रि: ॥२॥ केवलपायाध्यानवरध्याय ॥ इंद्र सुचीनिरखतहरषाय ॥ रि: ॥३॥ नेरियापणपामेमन मोद ॥ तुजकल्याणसुरकरतविनोद ॥रि: ॥ ४ ॥ राग रहीतशिवसुखस्युंप्रीत ॥ कर्महणेवलीद्वेषरहीत ॥रि:॥ ॥५॥ अचरिजकारीप्रभुथारोरेचरित्र ॥ हुंप्रणमुंकरजो डीनित ॥ रि:॥६॥ ओगणीसेवदिचोथकुमार ॥ नेमज प्यांपायोसुखसार ॥ रि:॥७॥

अथ श्रीपार्श्वजिनस्तवन ।

लोहकंचनकरेपारसकाचो ॥तेकरकहोकुणलेवे हो:॥ पारसतुंप्रभुसाचोपारस॥आपसमोकरदेवे हो:॥२॥पार सदेवतुमारादर्शन ॥ भागभलासोइपावे २ हुंवारीजा उं ॥ जीवमगनहुइजावे हो:॥१॥ तुजमुखकमलपारस चमरावल ॥कनकक्रांततनसोहे हो:॥हंससेणजाणेपंकज सेवे ॥ देखतजनमनमोहे ॥हो:॥२॥ फिटकसिंघासण सिंघआकारे ॥बेठदेशनादेवेहो: ॥वनमृगआवेवाणीसुण

वा ॥ जाणकसिंहनेसेवे ॥ हो: ॥३॥ चंदसमोतुजमुख महासीतल॥नयणचकोरहरखावेहो:॥ इंद्रनरेंद्रसुरासुरसगो ॥ निरखततृपतनैपावे ॥ हो:॥४॥ आपनिरागी पाखंडीसरागी ॥ आपसमुद्रसगेहरीहो:॥ वैरभावपाखंडीराखे ॥ पिणआपथांरानहीवैरी ॥हो:॥५॥ जिमसूरजखुद्योतउपरें ॥ वैरभावनहीआणे हो: ॥ तिमतुंपिण प्रभुपाखंडीयामे ॥ खद्योतमरिखाजाणे ॥हो:॥६॥ परमदयालकृपालपारमप्रभु ॥ सवंतओगणीमेंगायाहो: ॥ आसोजक्रम्नतिथचोथलाडण ॥ आनंदअधिकोपाया ॥हो: ॥७ ॥

अथ श्रीमहावीरजिनस्तवन ।

॥ रागशोरठ ॥

चरम जिणंदचोवोससार ॥ अगहणमहावीर ॥ विकटतप वरध्यानकर ॥ प्रभु॥ पायाभवजलतीर ॥ नहीएसोदुसरोमहावीर ॥ १ ॥ परिसहउपसर्गजीतवा प्रभु ॥ सूर वीरजिमधीर ॥ नहीं० ॥ संगमेंदुखदियाआकरारे ॥ पणसुप्रसन्नजरदयाल ॥ जगउद्धारकुवेसोथओरे ॥ एडूवेडणकाल ॥ नही० ॥२॥ लोकाअनार्यजिनसह्यारे ॥ उपसर्गविविधप्रकार ॥ ध्यानसुधारसलीनतारे ॥ मनमें हर्षअपार ॥ नही० ॥ ३ ॥ इणोपरेकर्मखपायने प्रभु ॥ पायाकेवलनांण ॥ उपश-

मरसमांहिवाणरीप्रभु ॥ अधिकअनोपमवाण ॥नहीं०॥
॥ ४ ॥ पुद्गलसुखअरिशिवतणारे ॥ नरकतणादातार
छांडिरमणीकिंपाकवेल ॥ संवेगसंयमधार ॥ नहीं० ॥
॥ ५ ॥ निंदास्तुतिसुखदुःखेरे ॥ मानअनेअपमान ॥
हर्षशोकमोहपरहर्यारे ॥ पामे पदनिरवाण ॥नही०॥
॥ ६ ॥ इणिपरेबहुजनत्यारियाप्रभु ॥ प्रणमुं चरमजि-
णंद ॥ ओगणीसेआसोजचोथकृष्ण॥ पायोपरमानन्द ॥
नही० ॥ ७ ॥

इति श्रीभीषनजी स्वामी तस्यसीष्यभारीमालजी स्वामी,तस्यसीष्य रिषरायचंदजी,स्वामि तस्यसीष्यजीत मलजी स्वामी कृत चतुर्विंशतिजिनस्तुतिः समाप्तः

॥ दुहा ॥

नमुं देव अरि हंत नित जिनाधीपती जिणराय ॥
द्वादशगुण सहितजे वंदुमनवच काय ॥ १ ॥
नमु सिद्ध गुण अष्टयुत आचार्य मुनीराज ॥
गुंण षट तीस संयुक्तजे प्रणमुं भव दधि पाज ॥ २ ॥
प्रणमुं फुन उवझाय प्रति गुण पण वीस उदार ॥
नमुं सर्व साधु निर्मल सप्त वीस गुण धार ॥ ३ ॥
द्वादश अठ षट तीस फुन वली पण वीस प्रगट ॥
सप्त वीस-ए सर्व ही गुण वर इकसय अठ ॥ ४ ॥

नोकर वाली ना जिके मिणि यां जगत मझार ॥
एक २ जे गुण तणों एक २ मिणियोंसार ॥ ५ ॥

॥ णमोअरिहंताणं ॥

नमस्कार थावो अरिहंत भगवंतने ।

ते अरिहंत भगवंत किहवा छे १२ वारे गुणे करी सहित छे ते कहै छे अनन्तो ग्यांन १ अनन्तो दर्शण २ अनन्तो बल ३ अनन्तो सुख ४ देव ध्वनि ५ भा मण्डल ६ फटिक सिंघासण ७ आशोकवृच ८ पुष्प विष्टी ९ देव दुंदवी १० चमरवीजे ११ छत्र धारे १२

॥ णमोसिद्धाणं ॥

नमस्कार थावो सिद्ध भगवंतने ।

ते सिद्ध भगवंतकि हवा छे आठ गुणे करीसहित छे ते कहै छे केवल ग्यांन १ केवल दर्शण २ आत्मीक सुख ३ षायक समकित ४ अटल अवगाहणा ५ अमुर्त्तिभाव ६ अग्र लघुभाव ७ अन्तराय रहित ८

॥ णमो आयरियाणं ॥

नमस्कार थावो आचार्य महाराजने ।

ते आचार्य महाराज किहवा छे ३६ षट तीस गुणोकरी सहित छे ते कहै छे आरजदेस ना उपनां

१ आरज कुल ना उपनां २ जातवंत ३ रूपवंत ४ थिर संघयैण ५ धीरजवंत ६ आलोवणां दुसरा पासि कहे नहीं ७ पोतेरा गुण पोते वरणांन नेंकरे ८ कपटी नें होवे ९ सब्दादिक पांच इन्द्री जीते १० राग द्वेष रहित होवे ११ देस ना जाण होवे १२ काल नां जाण होवे १३ तीखण बुद्धी होवे १४ घणां देशांरी भाषा जाणे १५ पांच आचार सहित १६ सुत्रांरा जांण होवे १७ अर्थरा जांण होवे १८ सुत्र अर्थ दोनों राजाण होवे १९ कपटकरी पुछे तो छलावे नहीं २० हेतुनां जाण होवे २१ कारणरा जांण होवे २२ दिष्टान्त नां जाण होवे २३ न्यायरा जाण होवे २४ सीषणे समर्थ २५ पिराछितनां जाण होवे २६ थिर परिवार २७ आदेज वचन बोले २८ परीसह जीते २९ समय पर समय नां जाण ३० गंभीर होवे ३१ तेजवंत होवे ३२ पण्डित विचक्षण होवे ३३ सोमचन्द्रमांजोसा ३४ सूरवीर होवे ३५ बहु गुणी होवे ३६

पुनः

५ पांच इंद्री जीते ४ च्यार कषाय टाले नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य पालें ५ पंच महाव्रत पाले ५ पंच आचार पाले ग्यांन १ दर्शण २ चारित्र ३ तप ४ विर्य ५ ।

पंच सुमती पाले इर्या १ भाषा २ अेषणा ३ इयांण भंडमत नषेवणा ४ उचारपासवण ५ ३ तीन गुप्ती मन १ वचन २ कायगुप्ती ३

इति षट वीस गुण संपूर्ण ।

॥ णमोउवज्झायाणं ॥

नमस्कार थावो उप्पाध्याय महाराजने ।

ते उप्पाध्याय महाराजकी हवा छे २५ पचवीस गुणे करी सहित छे ते कहे छे १४ चवदे पूरव ११ इग्यारे अंग भणे भणावे ।

पुन:

११ इग्यारे अंग १२ बारे उपंग भणे भणावे ।

॥ णमोलोएसव्वसाहुणं ॥

नमस्कार थावो लोकने विखे सर्व साधु मुनी राजोंने ।

ते साधु मुनी राजकीहवाछे सत्तवीस गुणे करो सहित छे ते कहे छे ५ पंच महाव्रत पाले ५ इंद्री जीते ४ च्यारकषायटाले भाव संचैय १५ करण संचैय १६ जोग संचैय १७ क्षम्यांवंत १८ वैराग्यवंत १९ मनसमांधारणीया २० बचन समांधारणीया २१ कायसमांधारणीया २२ नांणसंपना २३ दर्श

न संपना २४ चारित्र संपना २५ वेदनी आयांसमो अहियासे २६ मरणआयां समो अहियासे २७ ॥

इति संपूर्णम् ।

सामायक लेणेकी पाटी ॥

करेमि भन्ते सामाइयं सावज्जं जोगं ।

पच्चखामी जाव नियम (महुरत एक) पजवासामी दुविहेणं तिविहेणं नकरेमी नकारवेमी मनसा वायसा कायसा तस्स भन्ते पडिक्कमामि निंदामी गरिहामी अप्पाणं वोसरामि ॥

सामायेक पारणेकी पाटी ।

नवमा सामायक विहरमाण व्रतके विषें ज्यो कोई अतीचार दोष लागोहुवे ते आलोउं सामायक में सुमता नेकीधि विकथाकीधि हुवे अणपूरी पारी होय पारतां विसारयो होय मन वचन कायाका जोग माठा परिवरताया होय सामायकमें राज कथा देश कथा स्त्री कथा भक्त कथा करी होय तस्स मिच्छामि दोकडं ।

॥ अथा तिख्खुताकी पाटी ॥

तिख्खुतो अयाहीणं पयाहीणं वंदामि नमंसामि

सक्कारेमि सम्माणेमी कल्लाणं मंगलं देइयं चेइयं पज्जु वासामी मत्थेण वंदामी ।

॥ अथः पंचपद वन्दणा ॥

पहिले पदे श्री सीमंधर स्वामी आदि देई जघन्य २० (वीस) तीर्थंकर देवाधिदेवजी उत्कृष्टा १६० (यकसहमाठ) तीर्थंकर देवाधिदेवजी पंचमाहाविदेह खेत्रांकि विषे विचरेछे अनन्त ज्ञानका धणी अनन्त दरिशनका धणी अनन्त चारित्रका धणी अनन्त वल का धणी एक हजार आठ लछनाका धारणहार चौसट इन्द्राका पूजनीक चौतीस अतिसय पैतीस वाणी द्वादस गुन सहित विराजमान छे ज्यां अरि-हन्ता सें मांहरी वंदना तिख्खुत्ताका पाठसे मालुम होज्यो ।

दूजे पदे अनन्ता सिद्ध पंनरा भेदे अनन्ती चोवीसी आठ कर्म खपायसिध भगवांन मोक्ष पहुँता तिहां जनम नही जरा नही रोग नहीं सोग नही मरण नहीं भव नहीं संजोग नही विजोग नहीं दुःख नहीं दारिद्र नहीं फिर पाछा गर्भा वासमे आवे नहीं सदा काल सास्वता सुखामे विराजमानछे इसा उत्तम सिद्ध भगवंतासें मांहरी वंन्दना तिख्खुत्ताका पाठसें मालुम होज्यो ।

तीजे पदे जघन्य दोय कोड़ केवली उत्कृष्टा नव कोड़ केवली पञ्चमाहविदेह खेवामे विचरेछे केवल ज्ञान केवल दरिशनका धारक लोकालोक प्रकाशक सर्व द्रव्यखेत कालभाव जाणे देखे छै ज्यां केवलीजी सें मांहरी वन्दना तिख्खुत्ताका पाठसें मालुम होज्यो ॥

चौथे पदे गणधरजी आचार्यजी उपाध्यायजी थविरजी तेगणधरजी महाराजकेवाछे अनेक गुणां विराजमान छै आचार्यजी महाराज केवाछे पट तीस गुणां विराजमान छै उपाध्यायजी महाराज केवाछे पचवीसगुणां विराजमान छै थविरजी माहाराज केवा छै धर्मसें डिगता हुया प्राणी नें थिरकरी राखे शुद्ध आचार पाले पलावे ज्यां उत्तम पुरुषां से मांहरी वन्दना तिख्खुत्ताका पाठसें मालुम होज्यो ।

पञ्चमे पदे माहारा धर्म आचारज गुरु पुज्य श्री श्रीश्री १००८ श्रीश्रीकालूरामजी स्वामी (वर्तमान आचारजको नांव लेणो.) आदि जघन्य दोय हजार कोड़ साधू साधवी जाभेरा उत्कृष्टा नवहजार कोड साधू साधवी अढ़ाई द्वीप पन्दरे खेवांमे विचरे छै ते माहा उत्तम पुरुष केवाछे पञ्च महाव्रतका पालणहार छव कायानां पीहर पञ्च सुमति सुमता तीन

गुप्ती गुप्ता नववाडसहितब्रह्मचर्य्यका पालक-दसविधी यतीधर्मका धारक बारे भेदे तपस्याका करणहार सतरे भेदे संजमका पालणहार बावीस परीसहका जीतणहार सतावीस गुणे करी संयुक्त बयालीस दोष टाल आहार पांणीका लेवणहार बावन अनाचारका टालणहार निरलोभी निरलालची संसार नांत्यागी मोचनां अभीलाषी संसारमें पूठा मोक्षसे सामा सचित्तका त्यागी अचित्तका भोगी अस्वादी त्यागी वैरागी तेडीया आवै नही नोंतीया जीमे नहि मोलकी वस्तु लेवे नही कनककामणीसें न्यारा वायरानी परे अप्रतिबन्ध विहारी इसा माहापुरुषासें माहरी वन्दना तिखुत्ताका पाठसें मालूम होज्यो ॥

॥ पच्चीस बोल ॥

॥ अथ: पचवीस बोलको थोकडो ॥

१ पहिले बोले गति च्यार ४

- नर्कगति १ तिर्यंचगति २ मनुष्यगति ३ देवगति ४

२ दूजेबोले जातिपांच ५

एकेन्द्री बेइन्द्री तेइन्द्री चोरेन्द्री पचेंन्द्री

३ तीजे बोले काया छव ६

अथ श्रीसांतिजिनस्तवन ।

शांतिकरणप्रभुशांतिनाथजी ।। सुखदायकशिवकंदकी ॥ बलिहारीहोसांतिजिणंदकी ॥ १ ॥ उपशमवाणीसुधारसअनुपम ॥ मेटणमिथ्यात्वमंदकी ॥ ब० ॥ ॥२॥ कामभोगरागद्वेषकटुकफल ॥ विषवेलमोहअंधकी ॥ ब० ॥३॥ राचणीरमणीवितरणी ॥ पापपुतली असुचदुरगंधकी ॥ ब० ॥४॥ विविधउपदेशदेइजनताणां ॥ हुंबलिहारीजाउंविश्वानंदकी ॥ ब० ॥ ५ ॥ परमदयालगुवालकृपानिधि ॥ तुजजयमालाआनंदकी ॥ब०॥६॥ उंगणीसेंआसोजविदिएकम ॥ सांभलतासुखकंदकी ॥ ब० ॥ ७ ॥

अथ श्रीकुंथुजिनस्तवन ।

॥ रागप्रभाती ॥

कुंथुजिनेसरकरुणासागर ॥ त्रिभुवनसिरटीकोरे ॥ प्रभुजीकोसमरणकरनीकोरे ॥१॥ अद्भुतरूपअनूपमकुंथुजिन ॥ दर्शनजगप्रीयकोरे ॥ प्र० ॥ २ ॥ उपशमवाणीसुधारसअनूपम ॥ वालहोजिनवरवेकोरे ॥प्र०॥३॥ अनुकंपादोयश्रीजिनभांषी ॥ मर्मएसमदृष्टीकोरे॥प्र०॥४॥ असंयतीरोजीवणोवंछे ॥ तेसावद्यतहतीकोरे ॥प्र०॥५॥ निरवद्यकरुणाकरीजिनताखां ॥ धर्मवेजिनजोकोरे ॥

प्र०॥६॥ उंगणीसेआसोजवदिएकम ॥ सरणोसाहिब जीकोरे ॥ प्र०॥ ७ ॥

अथ श्रीअरहजिनस्तवन ।

॥ रागशोरठ ॥

अरीजिनकर्मअरीनांहंता ॥ जगतउद्धारणजिहाज ॥ म्हांनेप्यारालागोछोजीअरिजिनराज ॥ म्हांनेवाला लागोछोजी ॥ अरिमहाराज ॥१॥ वारूंरेजिनेस्वररूप अनूपम ॥ तुंसुगुणासोरताज ॥म्हां०॥ २ ॥ परिसह उपसर्गरूपअरिहण्या ॥ पायाछोकेवलआज ॥ म्हां० ॥३॥ नयणनधापेनिरखतांजी ॥ इंद्राणीसुरराज ॥ म्हां० ॥४॥ वाणीविशालदयालपुरूषनी ॥ भूषणछाजा वेभाज॥ म्हां०॥५॥ सरणेआयोस्वामरेजी ॥ अविचल सुखरेकाज ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ ओगणीसेआसोजवदी एकम ॥ आनंदउपनुंआज ॥ म्हां० ॥७॥

अथ श्रीमल्लीजिनस्तवन ।

रागप्रभाती ।

नीलवरणमल्लीजिनेस्वर ॥ ध्याननिर्मलध्यायो ॥ अल्पकालमां हेप्रभु ॥ परमज्ञानपायो ॥ मल्लीजिनेस्वर समरनाम ॥ असर्णसरणआयो ॥१॥ कल्पपुष्पमाला जेम ॥ सुंगधतनसुहायो ॥ सुरवधुवरनयणभ्रमर ॥

अधिकहिलपटायो ॥म०॥२॥ स्वपरचक्रविविधविघने ॥
मिटततुजपसायो ॥ सिंहनादथकीगजेंद्रजेमदुरजा
यो ॥ म०॥ ३ ॥ वाणीविमलनिर्मलसुधा ॥ रससंवे
गछायो ॥ नरसुरासुरतिय समजसुणतहरखायो ॥ म०
॥४॥ जगदयालतुंहीक्रपाल ॥ जनकज्युंसुखदायो ॥
वत्सलनाथस्वामसाहिब ॥ सुजशतिलकपायो ॥ म०
॥ ५ ॥ जन्नजापखन्नपाप ॥ तन्नतहिमिटायो ॥ मल्लीदे
वविविधसेव ॥ जगअक्रेरोपायो ॥म० ॥६॥ ओगणीसे
आसोजकृस्न ॥ तिजसुदिनआयो ॥ कुंभनंदनकर
आनंद ॥ हरषथीमेंगायो ॥म०॥७॥

अथ श्रीमुनीसुब्रतजिनस्तवन ।

शोरठ ।

सुमित्रानंदनश्रीमुनिसुब्रत॥ तोरथनाथजिनजाणी ॥
चारित्रलेइकेवलउपजायो ॥ उपशमरसनीवाणीरा ॥
प्रभुजीआपप्रबलवडभागी ॥ १ ॥ त्रिभुवनदायकसागि
रा ॥ प्र० ॥ आ० ॥ एआंकणी ॥ चोवीसअतिशयपेंत्री
सवाणी ॥ निरखतसुरइंद्राणी ॥ उपशमरसनीवाणी
सांभली ॥ हरखसुंआंखभराणीरा ॥प्र०॥आ०॥२॥ शब्द
रूपरसगंधनेफरस ॥ तेप्रतिकूलनेंहुवेतुमआगे ॥ पां
चदरशनथासुंपगनहीमंडे ॥ तिमअशुभशब्दादिकभा
गेरा ॥ प्र० ॥आ०॥३॥ सुरकृतजलस्थलपुष्पपुजवर ॥

तेछांडीचितदीनो ॥ तुजनिश्वाससुगंधमुखपरिमल ॥ मनभमररसलीनोरा ॥ प्र: ॥ श्रा: ॥४॥ पंचेंद्रीयनरसु रवीय, तुमसुंतेकिमदुःएदुखदायो ॥ एकेंद्रीअनलतजे प्रतिकूलपणु ॥ वाजेगमतोवायोरा ॥प्र: आ: ॥ ५ ॥ रागद्वेषदुरदंततेदम्या ॥ जीत्याविषयविकारो ॥ दीन दयालआयोतुजसरणे ॥ तुंगतिमतिदातारोरा ॥ प्र: आ: ॥६॥ ओगणीसेंआसोजवीजक्रस्न ॥ श्रीमुनिसुव्रत गाया ॥ सहेरलाडणुंरूडीरीतें ॥ आनंदअधिकोपा यारा ॥ प्र: ॥ आ: ॥७॥

अथ श्रीनमिजिनस्तवन ।

नमिनाथअनाथांरोनाथोरे॥ नित्यनमणकरुंजोडी हाथोरे॥ कर्मकाटणवीरविख्यातो ॥ प्रभुनमिनाथजी मुजप्याराेरे ॥१॥ प्रभुध्यानसुधारसध्यायारे ॥ पदकेव ल जोडोपाया रे ॥ गुणउत्तमउत्तम आया ॥प्र०॥२॥ वागरीप्रभुवाणविशालोरे ॥ खीरसमुद्रथीअधिकरसा लोरे ॥ जगतारकदिनदयालो ॥ प्र० ॥३॥ थाप्यातीरथ च्यारजिणंदारे॥ मिथ्यातिमिरहरणनेमुणंदारे ॥ त्याने सेवेसुरनरवृंदा ॥प्र०॥४ ॥ सुरअनुत्तरविमाननासेवेरे प्रश्नपूछ्यांउत्तरजिनदेवेरे ॥ अवधिग्यांनकरीजाण लेवे ॥ प्र: ॥५॥ तिहांबेठातितुमध्यानध्यावेरे ॥ तुमेयो गमुद्राचित्तचावेरे ॥ तेपणआपरीभावनाभावे ॥ प्र: ॥

॥ ६॥ श्रीगणीसेआसोजउदारोरे ॥ कर्सनतीजगायागुण सारोरे ॥ ह्वओआनंदहरषअपारो ॥प्र:॥७॥

अथ श्रीनेमजिनस्तवन ।

रिठनेमिस्वासितुं जगतार ॥ अंतरजामी ॥ तुं तो रणस्युफिरयोजिनस्वाम॥ अद्भूतवातकरीतेंअमाम ॥रि: ॥१ ॥ राजमतीछाडीनेजिनराय ॥ शिवसुंदरस्युंप्रीत लगाय॥ रि: ॥२॥ केवलपायाध्यानवरध्याय ॥ इंद्र सुचीनिरखतहरषाय ॥ रि: ॥३॥ नेरियापणपामेमन मोद ॥ तुजकल्याणसुरकरतविनोद ॥रि: ॥ ४ ॥ राग रहीतशिवसुखस्युंप्रीत ॥ कर्महणेवलीद्वेषरहीत ॥रि:॥ ॥५॥ अचरिजकारीप्रभुथारोरेचरित्र ॥ हुं प्रणामुं करजो डीनित ॥ रि:॥६॥ ओगणीसेवदिचोथकुमार ॥ नेमज प्यांपायोसुखसार ॥ रि:॥७॥

अथ श्रीपार्श्वजिनस्तवन ।

लोहकंचनकरेपारसकाचो ॥तेकरकहोकुणलेवे हो:॥ पारसतुं प्रभुसाचोपारस॥आपसमोकरदेवे हो:॥२॥पार सदेवतुमारादर्शन ॥ भागभलासोइपावे २ हुं वारीजा उं ॥ जीवमगनहुइजावे हो:॥१॥ तुजमुखकमलपारस चमरावल ॥कनकक्रांततनसोहे हो:॥हंससेणजाणेपंकज सेवे ॥ देखतजनमनमोहे ॥हो:॥२॥ फिटकसिंघासण सिंघआकारे ॥बेठदेशनादेवेहो: ॥वनमृगआवेवाणीसुण

वा ॥ जाणक्रसिंहनेसेवे ॥ हो: ॥३॥ चंदसमोतुजमुख महासीतल॥नयणचकोरहरखावेहो:॥ इंद्रनरेंद्रसुरासुर रसणो ॥ निरखततत्वपतनैपावे ॥ हो:॥४॥ आपनिरागी पाखंडीसरागी ॥ पापसमुद्रमगेहरीहो:॥ वैरभावपाखंडीराखे ॥ पिणआपथांरानहीवैरी ॥हो.॥५॥ जिमसूरजउद्योतउपरे ॥ वैरभावनहीआणे हो: ॥ तिमतुंपिण प्रभुपाखंडीयाने ॥ खद्योतसरिखाजाणे ॥हो:॥६॥ पर मदयालकृपालपारसप्रभु ॥ सवंतद्योगणीसेंगायाहो: ॥ पामोजकृष्नतिथचौथलाडण ॥ आनंदअधिकोपाया ॥हो: ॥७॥

अथ श्रीमहावीरजिनस्तवन ।

॥ रागशोरठ ॥

चरम जिणंदचोवोससारे ॥ अगहणयामहावीर ॥ विकटतप वरध्यानकर ॥ प्रभु॥ पायाभवजलतीर ॥ नहीएसोदुमरोमहावीर ॥ १ ॥ परिसहउपसर्गजीतवा प्रभु ॥ सूर वीरजिमसधीर ॥ नही० ॥ संगमेंदुखदि- याआकरारे ॥ पणसुप्रसन्नजरदयाल ॥ जगउद्धार- हुवेसोधकीरे ॥ एडूवेडूणकाल ॥ नही० ॥२॥ लोक- अनार्यजिनसञ्चारे ॥ उपसर्गविविधप्रकार ॥ ध्यान- सुधारसलीनतारे ॥ मनमे हर्षअपार ॥ नही० ॥ ३ ॥ दुणीपरिकर्मखपायने प्रभु ॥ पायाकेवलनांण ॥ उपश-

मरसमांहिवागरीप्रभु ॥ अधिकअनोपमवाग ॥नहीं०॥
॥ ४ ॥ पुद्गलसुखअरिशिवतणारे ॥ नरकतणादातार
छांडिरमणीकिंपाकवेल ॥ संवेगसंयमधार ॥ नहीं० ॥
॥ ५ ॥ निंदास्तुतिसुखदुःखेरे ॥ मानअनेअपमान ॥
हर्षशोकमोहपरहर्यारे ॥ पामें पदनिरवाग ॥नहीं०॥
॥ ६ ॥ इणिपरेबहुजनत्यारियाप्रभु ॥ प्रणमुं चरमजि-
णंद ॥ ओगणीसिआमोजचोथकृस्न॥ पायोपरमानन्द ॥
नहीं० ॥ ७ ॥

इति श्रीभीषनजी स्वामी तस्यसीष्यभारीमालजी
स्वामी,तस्यसीष्य रिषरायचंदजी,स्वामि तस्यसीष्यजीत
मलजी स्वामी कृत चतुर्विंशतिजिनस्तुतिः समाप्तः

॥ दुहा ॥

नमुं देव अरिहंत नित जिनाधीपती जिणराय ॥
द्वादशगुण सहितजे वंदुमनवच काय ॥ १ ॥
नमु सिद्ध गुण अष्टयुत आचार्य मुनीराज ॥
गुंण षट तीस संयुक्तजे प्रणमुं भव दधि पाज ॥ २ ॥
प्रणमुं फुन उवझाय प्रति गुण पण बीस उदार ॥
नमुं सर्व साधु निर्मल सप्त बीस गुण धार ॥ ३ ॥
द्वादश अठ षट तीस फुन बली पण बीस प्रगट ॥
सप्त बीस-ए सर्व ही गुण वर इकसय अठ ॥ ४ ॥

नोकर वाली ना जिके मिगि यां जगत मझार ॥
एक २ जे गुण तणों एक २ मिणियोंसार ॥ ५ ॥

॥ णमोअरिहंताणं ॥

नमस्कार थावो अरिहंत भगवंतने ।

ते अरिहंत भगवंत किहवा छे १२ बारे गुणे करी सहित छे ते कहे छे अनन्तो ग्यांन १ अनन्तो दर्शण २ अनन्तो वल ३ अनन्तो सुख ४ देव ध्वनि ५ भा मण्डल ६ फटिक सिंघासण ७ आशोकवृक्ष ८ पुष्प विष्टी ९ देव दुंदवी १० चमरवीजे ११ छत्र धारे १२

॥ णमोसिद्धाणं ॥

नमस्कार थावो सिद्ध भगवंतने ।

ते सिद्ध भगवंतकि हवा छे आठ गुणे करीसहित छे ते कहे छे केवल ग्यांन १ केवल दर्शण २ आत्मीक सुख ३ पायक समकित ४ अटल अवगाहणा ५ अमुर्त्ति भाव ६ अग्र लघुभाव ७ अन्तराय रहित ८

॥ णमो आयरियाणं ॥

नमस्कार थावो आचार्य महाराजने ।

ते आचार्य महाराज किहवा छे ३६ षट तीस गुणेकरी सहित छे ते कहे छे आरजदेस ना उपनां

१ आरज कुल ना उपनां २ जातवंत ३ रूपवंत ४ थिर संघयेण ५ धीरजवंत ६ आलोवणां दुसरा पासि कहे नहीं ७ पोतेरा गुण पोते वखांन नेंकरे ८ कपटी नें होवे ९ सन्द्रादिक पांच इन्द्री जीते १० राग द्वेष रहित होवे ११ देस ना जाण होवे १२ काल नां जाण होवे १३ तीखण बुद्धी होवे १४ घणां देशांरी भाषा जाणे १५ पांच आचार सहित १६ सुत्रांरा जांण होवे १७ अर्थरा जांण होवे १८ सुत्र अर्थ दोनीं राजाण होवे १९ कपटकारी पुछे तो छलावे नहीं २० हेतुनां जाण होवे २१ कारणारा जांण होवे २२ द्रिष्टान्त नां जाण होवे २३ न्यायरा जाण होवे २४ मीषणे समर्थ २५ पिराछितनां जाण होवे २६ थिर परिवार २७ आदेज वचन वोले २८ परीसह जीते २९ समय पर समय नां जाण ३० गंभीर होवे ३१ तेजवंत होवे ३२ पण्डित विचक्षण होवे ३३ सोमचन्द्रमांजीसा ३४ सूरवीर होवे ३५ बहु गुणी होवे ३६

पुनः

५ पांच इंद्री जीते ४ च्यार कषाय टाले नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य पाले ५ पंच महाव्रत पाले ५ पंच आचार पाले ग्यांन १ दर्शण २ चारित्र ३ तप ४ विर्य ५ ५

पंच सुमती पाले इर्या १ भाषा २ एषणा ३ इयांण भंडमत नषेवणा ४ उचारपासवण ५ ३ तीन गुप्ती मन १ वचन २ कायगुप्ती ३

इति षट तीस गुण संपूर्ण ।

॥ णमोउवज्झायाणं ॥

नमस्कार थावो उप्पाध्याय महाराजने ।

ते उप्पाध्याय महाराजकि हवा छे २५ पचवीस गुणे करी सहित छे ते कहे छे १४ चवदे पूरव ११ इग्यारे अंग भणे भणावे ।

पुनः

११ इग्यारे अंग १२ वारे उपंग भणे भणावे ।

॥ णमोलोएसव्वसाहुणं ॥

नमस्कार थावो लोकने विषे सर्व साधु मुनो राजोंने ।

ते साधु मुनी राजकिहवाछे सप्तवीस गुणे करो सहित छे ते कहे छे ५ पंच महाव्रत पाले ५ इंद्री जीते ४ च्यारकषायटाले भाव संचेय १५ करण संचेय १६ जोग संचेय १७ क्षम्यांवंत १८ वैरा ग्यवंत १९ मनसमांधारणीया २० वचन समांधारणी या २१ कायसमांधारणीया २२ नांणसंपना २३ दर्श

न संपना २४ चारित्र संपना २५ वेदनी आयांममो अहियासि २६ मरणआयां समो अहियासि २७ ॥

इति संपूर्णम् ।

सामायक लेणेकी पाटी ॥

करेमि भन्ते सामाइयं सावजं जोगं ।

पच्चखामी जाव नियम (महुरत एक) पजवा-सामी दुविहेणं तिविहेणं नकरेमी नकारवेमी मनसा वायसा कायसा तस्स भन्ते पडिक्कमामि निंदामी गरिहामी अप्पाणं वो सरामि ॥

सामायेक पारणेकी पाटी ।

नवमा सामायक विहरमाण व्रतके विषें ज्यो कोई अतीचार दोष लागोहुवे ते आलोउं सामायक में सुमता नेकीधि विकथाकीधि हुवे अणपूरी पारी होय पारतां विसार्‍यो होय मन वचन कायाका जोग माठा परिवरताया होय सामायकमें राज कथा देश कथा स्त्री कथा भक्त कथा करी होय तस्स मिच्छामि दोक्कडं ।

॥ अथा तिख्खुताकी पाटी ॥

तिख्खुतो अयाहीणं पयाहीणं वंदामि नमंसामि

सक्कारेमि सम्माणेमी कल्लाणं मंगलं देवूयं चेइयं पज्जु वासामी मत्थेण वंदामी ।

॥ अथः पंचपद् वन्दणा ॥

पहिले पदे श्री सीमंधर स्वामी आदि देई जघन्य २० (वीस) तीर्थंकर देवाधिदेवजी उत्कृष्टा १६० (यकसहसाठ) तीर्थंकर देवाधिदेवजी पंचमाहाविदेह खेतांकि विषे विचरेछे अनन्त ज्ञानका धणी अनन्त दरिशनका धणी अनन्त चारित्रका धणी अनन्त वल का धणी एक हजार आठ लछनाका धारणहार चौसट इन्द्राका पूजनीक चौतीस अतिसय पैतीस वाणी द्वादस गुन सहित विराजमान छै ज्यां अरि- हन्ता सें मांहरी वंदना तिखुत्ताका पाठसे मालुम होज्यो ।

दूजे पदे अनन्ता सिद्ध पंनरा भेदे अनन्ती चोवीसी आठ कर्म खपायसिध भगवांन मोक्ष पहुँता तिहां जनम नही जरा नही रोग नहीं सोग नही मरण नहीं भय नही संजोग नही विजोग नहीं दुःख नहीं दारिद्र नहीं फिर पाछा गर्भा वासमे आवे नहीं सदा काल सास्वता सुखामें विराजमानछे इसा उत्तम सिद्ध भगवंतांसें मांहरी वन्दना तिखुत्ताका पाठसें मालुम होज्यो ।

तीजे पदे जघन्य दोय कोड़ केवली उत्कृष्टा नव कोड़ केवली पञ्चमाहविदेह खेत्रामे विचरेछे केवल ज्ञान केवल दरिशनका धारक लोकालोक प्रकाशक सर्वं द्रव्यखेत्र कालभाव जाणे देखे छै ज्यां केवलीजी सें मांहरी वन्दना तिख्खुत्ताका पाठसें मालुम होज्यो ॥

चौथे पदे गणधरजी आचार्यजी उपाध्यायजी थविरजी तेगणधरजी महाराजकेवाछे अनेक गुणां विराजमान छै आचार्यजी महाराज केवाछे षट तीस गुणां विराजमान छै उपाध्यायजी महाराज केवाछे पचवीसगुणां विराजमान छै थविरजी माहाराज केवा छै धर्मसें डिगता हुया प्राणी नें थिरकरी राखे शुद्ध आचार पाले पलावे ज्यां उत्तम पुरुषां से मांहरी वन्दना तिख्खुत्ताका पाठसें मालुम होज्यो ।

पञ्चमे पदे माहारा धर्म आचारज गुरु पुज्य श्री श्रीश्री १००८ श्रीश्रीकालूरामजी स्वामी (वर्तमान आचारजको नांव लेणो.) आदि जघन्य दोय हजार कोड़ साधू साधवी जाझेरा उत्कृष्टा नवहजार कोड साधू साधवी अढ़ाई द्वीप पन्दरे खेत्रांमे विचरे छै ते माहा उत्तम पुरुष केवाछै पञ्च महाव्रतका पालणहार छव कायानां पीहर पञ्च सुमति सुमता तीन

गुप्ती गुप्ता नववाडसहितब्रह्मचर्य्यका पालक-दसविधी यतीधर्मका धारक वारे भेदे तपस्याका करणहार सतरे भेदे संजमका पालणहार वावीस परीसहका जीतणहार सतावीस गुणे करी संयुक्त वयालीस दोष टाल आहार पांणीका लेवणहार वावन अनाचारका टालणहार निरलोभी निरलालची संसार नांत्यागी मोक्षनां अभीलाषी संसारसें पूठा मोक्षसे सामा सचित्तका त्यागी अचित्तका भोगी अस्वादी त्यागी वैरागी तेडीया आवे नही नोंतीया जीमें नहि मोलकी वस्तु लेवे नही कनककामणीसें न्यारा वायरानी परे अप्रतिवन्ध विहारी इसा माहापुरुषासें माहरी वन्दना तिक्खुत्ताका पाठसें मालूम होज्यो ॥

॥ पच्चीस वोल ॥

॥ अथः पचवीस वोलको थोकडो ॥

१ पहिले वोले गति च्यार ४

नर्कगति १ तिर्यंचगति २ मनुष्यगति ३ देवगति ४

२ दूजेवोले जातिपांच ५

एकेन्द्री वेइन्द्री तेइन्द्री चोरेन्द्री पचेंन्द्री

३ तीजे वोले काया छव ६

पृथ्विकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वाउकाय ४ वनस्पतिकाय ५ त्रसकाय ६

४ चोथे बोले इन्द्री पांच ५

श्रोतेइन्द्री १ चक्षूइन्द्री २ घ्राणइन्द्री ३ रस-इन्द्री ४ स्पर्शइन्द्री ५

५ पांचमें बोले पर्याय छव ६

आहारपर्याय १ शरीरपर्याय २ इन्द्रीय पर्याय ३ श्वासोश्वासपर्याय ४ भाषापर्याय ५ मनपर्याय ६

६ छठै बोले प्राण दस १०

श्रोतेंद्री बलप्राण १ चक्षूइन्द्रीबलप्राण २ घ्राण इन्द्रीबलप्राण ३ रसेन्द्रीबलप्राण ४ स्पर्शइन्द्री बलप्राण ५ मनबलप्राण ६ वचनबलप्राण ७ काया बलप्राण ८ श्वासोश्वासबलप्राण ९ आउषोबलप्राण १०

७ सातमें बोले शरीर पांच ५

औदारिक शरीर १ वैक्रियशरीर २ आहारिक शरीर ३ तैजसशरीर ४ कार्मणशरीर ५

८ आठवे बोले जोग पंदरा १५

४ च्यारमनका

सत्यमनजोग १ असत्यमनजोग २ मिश्रमनजोग ३ व्यवहारमनजोग ४

४ च्यारबचनका

सत्यभाषा १ असत्यभाषा २ मिश्रभाषा ३ व्यवहार भाषा ४

७ सातकायाका

औदारिक १ औदारिक मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रिय मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिक मिश्र ६ कार्मणाजोग ७

९ नवमें बोले उपयोग बारे १२

५ पांच ज्ञान

मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मनपर्यवज्ञान ४ केवलज्ञान ५

३ तीन अज्ञान

मतिअज्ञान १ श्रुतिअज्ञान २ विभंगअज्ञान ३

४ च्यार दरिशन

चक्षुदर्शण १ अचक्षुदर्शण २ अवधिदर्शण ३ केवल दर्शण ४

१० दसमे बोले कर्म आठ ८

ज्ञानावरणी कर्म १ दर्शणावरणी कर्म २ वेदनी कर्म ३ मोहणी कर्म ४ आयुष्यकर्म ५ नामकर्म ६ गोत्रकर्म ७ अंतरायकर्म ८

११ इग्यारामे बोले गुण स्थान चौदा १४

१ पहिलो मिथ्याती गुणस्थान ।

२ दूजो सादृस्वादान समदृष्टि गुणस्थान ।

३ तीजो मिश्र गुणस्थान ।

४ चौथो अव्रती समदृष्टी गुणस्थान ।

५ पांचमो देशविरती श्रावक गुणस्थान ।

६ छट्ठो प्रमादी साधू गुणस्थान ।

७ सातवों अप्रमादी साधू गुणस्थान

८ आठवों नियट वादर गुणस्थान

९ नवमो अनियट वादर गुणस्थान

१० दसवों सुत्तम संप्राय गुणस्थान

११ इग्यारमूं उपशान्ति मोह गुणस्थान

१२ बारमूं चीणमोहनी गुणस्थान

१३ तेरमूं, संयोगी केवली गुणस्थान

१४ चौदमूं अयोगी केवली गुणस्थान

१२ बारमें बोले पांच इन्द्रीयांका तेवीस विषय

श्रोतइन्द्रीका तीन विषय

जीव शब्द १ अजीव शब्द २ मिश्र शब्द ३

चन्तु इन्द्रीका पांच विषय

कालो १ पीलो २ धोलो ३ रातो ४ लीलो ५

घ्राण इंद्रीका दोय विषय

सुगंध १ दुर्गंध २

रस इन्द्रीका पांच विषय

खट्टो १ मीठो २ कडवो ३ कसायलो ४ तीखो ५

स्पर्श इन्द्रीका आठ विषय

हलको १ भारी २ खरदरो ३ सुहालो ४ लूखो ५ चोपड्यो ६ ठंडो ७ उन्हो ८

१३ तेरमे वोले दस प्रकारका मित्थ्याती

१ जीवने अजीव सरदै ते मिथ्याती

२ अजीवने जीव सरदै ते मिथ्याती

३ धर्मनें अधर्म सरदै ते मिथ्याती

४ अधर्मनें धर्म सरदै ते मिथ्याती

५ साधूने असाधू सरदै ते मिथ्याती

६ असाधूनें साधू सरदै ते मिथ्याती

७ मार्गनें कुमार्ग सरदै ते मिथ्याती

८ कुमार्गनें मार्ग सरदै ते मिथ्याती

९ मोक्षगयानें अमोक्षगयो सरदै ते मिथ्याती

१० अमोक्षगयानें मोक्षगयो सरदै ते मिथ्याती

१४ चोदमें वोले नवतत्वको जांण पणों तीका

११५ एकसो पंदरा वोल

१४ चोदेजीवका—

सुक्ष्म एकेंद्रीका दोयभेद :—

१ पहिलो अपर्याप्तो २ दूसरो पर्याप्तो

वादर एकेन्द्रीका दोय भेद :—

३ तीजो अपर्याप्तो ४ चौथो पर्याप्तो

बे इन्द्रीका दोयभेद :—

५ पांचमूँ अपर्याप्तो ६ छट्टो पर्याप्तो

ते इन्द्रीका दोय भेद :—

७ सातमूं अपर्याप्तो ८ आठमूं पर्याप्तो

चो इन्द्रीका दोय भेद :—

९ नवमूं अपर्याप्तो १० दसमूं पर्याप्तो

असन्नी पंचेन्द्रीका दोय भेद :—

११ इग्यारमूँ अपर्याप्तो १२ बारमूं पर्याप्तो

सन्नी पंचेन्द्रीका दो भेद :—

१३ तेरमूँ अपर्याप्तो १४ चोदमूँ पर्याप्तो

१४ चौदे अजीवाका भेद :—

धर्मास्ति कायका ३ तीन भेद :—

खंध, देस, प्रदेस,

अधर्मास्ति कायका ३ तीन भेद :—

खंध, देस, प्रदेस,

आकास्ति कायका ३ तीन भेद :—

खंध, देस, प्रदेस,

कालको दसमूँ भेद (ये दस भेद अरूपीके)

पुद्गलास्ति कायक ४ च्यार भेद :—

खंध, देस, प्रदेस, प्रमाणू

९ पुन्य नव प्रकारे

अन्नपुन्ने १ पाणपुन्ने २ लैणापुन्ने* ३ सयणापुन्ने* ४ वत्थपुन्ने ५ मनपुन्ने ६ वचनपुन्ने ७ कायापुन्ने ८ नमस्कारपुन्ने ६

१८ पाप अठारे प्रकार :—

प्राणातिपात १ मृखावाद* २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ६ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अवाख्यान १३ पैसुन्य* १४ परपरिवाद १५ रतिअरति १६ मायामृषा १७ मिथ्यादर्शन सल्य १८

२० वीस आश्रवका :—

मिथ्यात्व आश्रव १ अव्रत आश्रव २ प्रमाद आश्रव ३ कषाय आश्रव ४ जोग आश्रव ५ प्राणातिपात आश्रव ६ मृषावाद आश्रव ७ अदत्तादान आश्रव ८ मैथुन आश्रव ६ परिग्रह आश्रव १० श्रुत इन्द्री मोकली मेलिते आव ११ चक्षुइंद्री मोकली मेलि ते आश्रव १२ घ्राण इंद्री मोकली मेलि ते आश्रव १३ रस इंद्री मोकली मेलि ते आश्रव १४ स्पर्शइन्द्री मोकली मेलि ते आश्रव १५ मनप्रवर्तावि ते आश्रव १६ वचनप्रवर्तावि-ते आश्रव १७ कायाप्रवर्तावे ते आश्रव १८

---

*लेण=जगा जमीनादिक *सयण=पाट बाजोटा दिक
*वाद=बोलना *पैसुन्य=चुगली

भण्डोपकरणमेलताअजयणाकरै * ते आश्रव १६
सुई कुसाग्रमात्र सेवे ते आश्रव २०

२० बीस संवरका :—

सम्यक् ते संवर १ व्रत ते संवर २ अप्रमाद ते संवर ३ अकषाय संवर ४ अजोग संवर ५ प्राणातिपात न करे ते संवर ६ मृषावाद न बोले ते संवर ७ चोरी न करे ते संवर ८ मैथुन न सेवे ते संवर ६ परिग्रह न राखे ते संवर १० श्रुत इन्द्री वसकरे ते संवर ११ चक्षुइन्द्री वसकरे ते संवर १२ घ्राणइन्द्री वसकरे ते संवर १३ रसेन्द्री बसकरे ते संवर १४ स्पर्शइन्द्री वसकरे ते संवर १५ मन वसकरे ते संवर १६ वचन बसकरे ते संवर १७ काया वसकरे ते संवर १८ भण्डउपगरणमेलतां अजयणानकरे ते संवर १६ सुई कुसाग्र न सेवे ते संवर २०

१२ निरजरा बारे प्रकारे :—

अणसण * १ उणोदरी * २ भिक्षाचरी ३ रसपरित्याग ४ कायाक्लेश ५ प्रतिसंलेषना ६ प्रायश्चित

---

* अजयणा = यत्ना नीं।

* अणसण = उपवासादिक।

* उणोदरी = कमखाना।

७ विनय ८ वेयावच्च ६ सिज्झाय १० ध्यान ११ विउसग्ग * १२

४ बंध च्यार प्रकारे :—

प्रकृतिबंध १ स्थितिबंध २ अनुभागबन्ध ३ प्रदेशबन्ध ४

४ मोक्ष च्यार प्रकारे :—

ज्ञान १ दर्शण ३ चारित्र ३ तप ४

१५ पंद्रमें बोले आत्मा आठ :—

द्रव्य आत्मा १ कषाय आत्मा २ योग आत्मा ३ उपयोग आत्मा ४ ज्ञान आत्मा ५ दर्शण आत्मा ६ चारित्र आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८

१६ सोलमे बोले दंडक चोवीस १२ :—

१ सातनारकीयांको येक दंडक

१० दसदंडक भवनपतिका :—

असुर कुमार १ नाग कुमार २ सोवन कुमार ३ विद्युत कुमार ४ अग्निकुमार ५ दीप कुमार ६ उदधि कुमार ७ दिशा कुमार ८ वायुकुमार ९ स्तनित कुमार १०

५ पांचथावरका पंच दंडक :—

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय ४ वनस्पतिकाय ५

---

* विउसग्ग = नियर्तवो।

१ बे इन्द्री को सतरमों
१ ते इन्द्री को अठारमों
१ चौ इन्द्री को उगणीसमों
१ तिर्यञ्च पंचेन्द्री को वीससों
१ मनुष्य पंचेन्द्री को इकवीसमों
१ वानव्यंतर देवतांको वावीससों
१ जोतषी देवतांको तेवीसमों
१ वैमानिक देवतांको चौवीससों

१७ सतरवें बोलि लेस्या छव ६ :—
क्रष्णलेस्या १ नील लेस्या २ कापोत लेस्या ३ तेजुलेस्या ४ पद्म लेस्या ५ शुक्ल लेस्या ६

१८ अठारमें बोलि द्दष्टी ३ तीन :—
सम्यक् द्दष्टी १ मित्यश द्दष्टी १ समसिथ्या द्दष्टी ३

१९ उगणीसमें बोलि ध्यान ४ च्यार :—
आर्तध्यान१रौद्र ध्यान २ धर्मध्यान३सुक्लध्यान ४

२० बीसमें बोल षट द्रव्यको जांण पणो
धर्मास्तिकायनें पांचां बोला ओलखीजे :—
द्रव्यथकी येक द्रव्य खेत्रथी लोक प्रमाणे काल थकी आदि अन्त रहीत भावथी अरूपी गुणथ-की जीव पुदलगने हालवा चालवाको साभ्म,

अधर्मास्तिकायने पांचा वोलां ओलखीजे :—
द्रव्यथी येक द्रव्य खेत्रथी लोकप्रमाणे काल-
थकी आदि अन्तराहित भावथी अरूपी गुणथी
थिररहवानों साभ्र, आकासास्तीकायनैं पांच
वोलकरी ओलखीजे :—द्रव्यथी एक द्रव्य
खेत्रथी लोक अलोक प्रमाणे कालथी आदि
अंत रहित भावथी अरूपी गुणथी भाजन गुण
कालनें पांचां वोलां ओलखीजे :—द्रव्यथी
अनन्ता द्रव्य खेतथी अढ़ाई द्वीप प्रमाणे
कालथी आदि अन्त रहित भावथी अरूपी
गुणथी वर्त्तमानगुण पुद्गलास्तिकायने पांच
वोलकरी ओलखीजे:—द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य
खेत्रथी लोक प्रमाणे कालथी आदि अन्त
रहित भावथी रूपीगुणथी गलै* मलै, जीवा-
स्तिकायने पांच वोल करी ओलखीजे:-द्रव्यथी
अनन्ता द्रव्य खेत्रथी लोक प्रमाणे कालथी
आदि अंत रहित भावथी अरूपी गुणथी
चैतन्य गुण।

२१ एक वीसमें वोलै रासि २ दोय :—
जीवरासि १ अजीवरासि २

२२ वाविसमें वोले श्रावक का १२ वारै व्रत :—

---

* गलै मलै: गठे वधे; अथवा: जुदा येकत्र होय।

१ पहिला व्रतमें श्रावक स्थावर जीव हणवाको प्रमाण करै और त्रस जीव हालतो चालतो हणवाका सें उपयोग त्याग करै।

२ दूजा व्रतमें मोटकी झूँट बोलवाकासें उपयोग त्याग करै।

३ तीजा व्रतमें श्रावक राजडण्डे लोकभण्डे इसी मोटकी चोरी करवाका त्याग करै।

४ चौथा व्रतमे श्रावक मरियाद उपरांति मैथुन सेवाका त्याग करै।

५ पांचमो व्रतमे श्रावक मरियाद उपरांति परिग्रह राखवाका त्याग करै।

६ छट्टा व्रतके विखैश्रावक दसौं दिसिमें मरियाद उपरान्ति जावाका त्याग करै।

७ सातवा व्रतके विखे श्रावक उपभोग परिभोग का बोल २६ छावीस छै जिणारी मरियाद उपरांति त्याग करे तथा पंदरे कर्मादानकी मरियाद उपरांति त्याग करे।

८ आठमा व्रतके विखे श्रावक मरियाद उपरांति अनर्थ दण्डका त्याग करे।

९ नवमां व्रतके विखे श्रावक सामायककी मरियाद करै।

१० दसमां व्रतके विखे श्रावक देसावगासी संवरकी मरियाद करे ।

११ इगारमूं व्रत श्रावक पोसह करे ।

१२ वारमूं व्रत श्रावक सुध साधू निग्रंथनें निर्दोष आहार पाणी आदि चवदे प्रकार दान देवे ।

२३ तेवीसमे वोले साधूजीका पंच महाव्रत :–

१ पहिला महाव्रतमें साधूजी सर्वथा प्रकारे जीव हिन्सा करे नही करावे नहीं करतानें भलो जाणे नही मनसें वचनसें कायासें ।

२ दूसरा महा व्रतमें साधूजी सर्वथा प्रकार झूठ वोले नही वोलावे नहीं वोलतां प्रते भलो जाणे नहीं मनसें वचनसें कायासें ।

३ तीजा महा व्रतमें साधूजी सर्वथा प्रकारे चोरी करे नही करावे नही करतां प्रते भलोजाणे नहीं मनसें वचनसें कायासें ।

४ चौथा महा व्रतमें साधूजी सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवे नहीं सेवावे नहीं सेवतां प्रते भलोजाणे नहीं मनसें वचनसें कायासें ।

५ पंचमां महाव्रतमें साधूजी सर्वथा प्रकारे परिग्रह राखे नहीं रखावे नहीं राखतां प्रते भलोजाणै नहीं मनसें वचनसें कायासें ।

२४ चौवीसमें वोलि भांगा ४६ गुणचास :—

करण ३ तीन जोग ३ तीनसें हुवे।

करण ३ तीनका नाम—करूं नहीं कराउं नही अनुमोदूं, नहो जोग ३ तीनका नाम—मनसा, वायसा कायसा।

आंक ११ इगाराको भांगां १२ :—

एक करण एक जोगसें कहणां; करूं नहीं मनसा, करूं नहीं वयसा, करूं नहीं कायसा, कराऊं नहीं मनसा, कराऊं नही वयसा, कराऊं नहीं कायसा; अनुमोदू नहीं मनसा, अनुमोदूं नही वयसा, अनुमोदूं नही कायसा।

आंक १२ वाराको भांगा ६ :—

एक करण दोय जोगसे, करूँ नहीं मनसा वायसा, करुँ नहीं मनसा कायसा, करूँ नही वायसा कायसा, कराऊँ नहीं मनसावायसा, कराउं नहीं मनसा कायसा, कराऊं नहीं वायसा कायसा, अणमोदूं नही मनसावायसा, अनुमोदूँ नही मनसाकायसा, अनुमोदूँ नहीं वायसा कायसा।

आंक १३ तेराको भांगा ३ तीन :—
एक करण तीन जोगसें; करूं नहीं मनसा वायसा कायसा, कराऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा।

आंक २१ को भांगा ९ :
दोय करण एक जोगसें, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा, करूं नहीं कराऊं नहीं वायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीमनसा, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा।

आंक २२ बावीसको भांगा ९ नव :—
दोय करण दोयजोगसें, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा वायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा कायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं वायसा कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं

वायसा कायसा, कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं
मनसा वायसा, कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं
मनसा कायसा, कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं
वायसा कायसा ।

आंक २३ तेवीसको भांगा ३ तीन :—
दोय करण तीन जोगसें करूँ; नहीं कराऊँ
नहीं मनसा वायस कायसा, करूँ नहीं
अनुमोदूँ नहीं मनसा वायसा कायसा, कराऊँ
नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा वायसा कायसा ।

आंक ३१ इकतीसको भांगा ३ तीन :—
तीन करणएक जोगसें; करूँ नहीं कराऊँ
नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा, करूँ नहीं
कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं वायसा, करूँ
नहीं कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं कायसा ।

आंक ३२ बतीसको भांगा ३ तीन :—
तीन करण दोयजोगसें: करूँ नहीं कराऊँ
नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा वायसा, करूँ नहीं
कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा कायसा,
करूँ नहीं कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं वायसा
कायसा ।

आंक ३३ तेतीसको भांगो १ एक :—

तीन करण तीन जोगसें: करूं नहीं कराऊँ नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा।

२५ पच्चीसमें बोलि चारित्र ५ पांच :—

सामायक चारित्र १ छेदो स्थापनीय चारित्र २ पडिहार विशुद्ध चारित्र ३ सूक्ष्म संपराय चारित्र ४ यथाख्याति चारित्र ५

॥ इति पच्चीस बोल सम्पूर्ण ॥
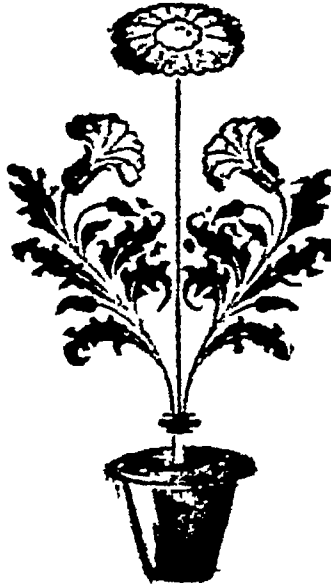
॥ अथ पानाकी चरचा ॥

१ जीव रुपीकि अरुपी; अरुपी किणन्याय कालो पीलो नीलो रातो धोलो ए पांच वर्ण नहीं पावे इण न्याय ।

२ अजीव रुपीकि अरुपी; रुपी अरूपी दोनूं ही छै किणन्याय धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकास्तिकाय काल ये च्यारुँ तो अरुपी और पुद्गलास्तिकाय रुपी ।

३ पुन्य रुपोकि अरुपी, रुपीतै किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म, कर्म ते पुद्गल, पुद्गल ते रुपी ही छै ।

४ पाप रूपीकि अरूपी, रुपी ते किणन्याय पापते अशुभ कर्म कर्मते पुद्गल पुद्गलते रूपी ही छै

५ आश्रव रूपीकि अरूपी, अरूपीते किणन्याय आश्रव जीवका परिणामछै, परिणामते जीव छै, जीव ते अरूपी छै, पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय ।

६ संवर रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण पावे नहीं ।

७ निर्जरा रुपीकि अरूपी अरुपी छै ते किणन्याय निर्जरा जीवका परिणाम छै पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय ।

८ बंध रूपीके अरूपी; रूपी किणन्याय बंध ते शुभ अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते रूपी छै ।

९ मोक्षरूपी के अरूपी अरूपी छै ते किणन्याय समस्त कर्ममें मुकावे ते मोक्ष अरूपी ते जीव सिद्ध थया ते मां पांच वर्ण पावे नहीं इणन्याय ।

॥ छठी दूजी सावद्य निर्वधकी ॥

१ जीव सावद्यके निर्वद्य दोनूं ही छै ते किणन्याय चोखा परिणामां निर्वद्य खोटा परिणामा सावद्य छै ।

२ अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै ।

३ पुन्य सावद्य निर्वद्य; दोनू नही अजीव छै ।

४ पाप सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै ।

५ आश्रव सावद्यके निर्वद्य; दोनूं ही छै ते किणन्याय मिथ्यात्व आश्रव अव्रत आश्रव प्रमाद आश्रव, कषाय आश्रव, ये च्यार तो येकान्ति सावद्य छै, शुभ जोगां से निरजरा होय जिण आंसरी निर्वद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै ।

६ संवर सावद्यके निर्वद्य निर्वद्य छै ते किणन्याय कर्मां नें रोके ते निर्वद्य छै ।

७ निरजरा सावद्यकि निर्वद्य निर्वद्य छै ते किण-
   न्याय कर्म तोड़वारा परिणाम निर्वद्य छै ।

८ बंध सावद्यकि निर्वद्य दोनूं नहीं ते किणन्याय
   अजीव छै दूण न्याय ।

९ मोक्ष सावद्यकि निर्वद्य; निर्वद्य छै, सकल कर्म
   मूकाय सिद्ध भगवंत थया ते निर्वद्य छै ।

॥ लड़ी तीर्जा आज्ञा मांहि बाहिरकी ॥

१ जीव आज्ञा मांहि कि बारे, दोनूं छै ते किण-
   न्याय, जीवका चोखा परिणाम आज्ञा मांहि
   छै, खोटा परिणाम आज्ञा बाहिर छै ।

२ अजीव आज्ञा मांहि बाहिर; दोनूं नहीं, अजीव
   छै ।

३ पुन्य आज्ञा मांहि कि बाहिर दोनूं नहीं अजीव
   छै दूण न्याय ।

४ पाप आज्ञा मांहि बारे दोनूं नहीं, अजीव छै ।

५ आश्रव आज्ञा मांहिकि बारे, दोनूं माहि छै, ते
   किणन्याय, आश्रवा नां पांच भेद छै तिणमें
   मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद कषाय ए च्यार तो
   आज्ञा बाहिर छै अने जोग नां दोय भेद शुभ
   जोग तो आज्ञा मांहि छै अशुभ जोग आज्ञा
   बाहिर छै ।

६ संवर आज्ञा मांहि के बाहिर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम आज्ञा मांहि छै ।

७ निर्जरा आज्ञा मांहिके बाहर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय कर्म तोडवारा परिणाम आज्ञा मांहि छै ।

८ बंध आज्ञा मांहिके बाहर; दोनूं नहीं ते किण-न्याय, आज्ञा मांहि बाहर तो जीव हुवे ए बंध तो अजीव छै इणन्याय ।

९ मोक्ष आज्ञा मांहिके बाहर; आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय, कर्म नूं काय सिद्ध थया ते आज्ञा मे छै ।

॥ लडी चौथी जीव अजीव की ॥

१ जीव ते जीव छै के अजीव; जीवते किणन्याय सदाकाल जीवको जीव रहेसे अजीव कदे हुवे नहीं

२ अजीव ते जीव छै के अजीव छै; अजीव छै अ-जीवको जीव किण ही कालमे हुवे नहीं ।

३ पुन्य जीव छै के अजीव छै; अजीव छै ते किण-न्याय पुन्यतेसुभकर्म शुभ कर्म पुद्गल छै पुद्गल ते अजीव छै।

४ पाप जीव छै की अजीव छै; अजीव छै किण-
न्याय पाप ते अशुभ कर्म पुद्गलछे पुद्गल ते
अजीव छै ।

५ आश्रव जीव छै की अजीव छै जीव; छै तें किण-
न्याय शुभ अशुभ कर्म ग्रहै ते आश्रव छै कर्म
ग्रहै ते जीव ही छै ।

६ संवर जीवकी अजीव, जीव छै ते किणन्याय
कर्म रोकै ते जीव ही छै ।

७ निर्जरा जीवकी अजीव, जीव छै किणन्याय कर्म
तोडे ते जीव छै ।

८ बंध जीवकी अजीव छे, अजीव छै ते किणन्याय
शुभ अशुभ कर्मको बंध अजीव छै ।

९ मोक्ष जीवकी अजीव, जीव छे, किणन्याय समस्त
कर्म मूकावे ते मोक्ष जीव छै ।

॥ लडी पांचवी जीव चौरके साहूकार ॥

१ जीव चोरकी साहूकार, दोनूं छै किणन्याय
चोखा परिणामां साहूकार छै मांठा परिणामां
चोर छे ।

२ अजीव चोरकी साहूकार, दोनूं नहीं किणन्याय
चोर साहूकार तो जीव हुवे ये अजीव छै ।

३ पुन्य चोरके साहूकार, दोनूं नही अजीव छै ।

४ पाप चोरके साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

५ आश्रव चोरके साहूकार, दोनूं छै किणन्याय च्यार आश्रव तो चोर छै, अनें अशुभ जोग पण चोर छै शुभ जोग साहूकार छै।

६ संवर चोरके साहूकार; साहूकारछै किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम साहूकार छै।

७ निर्जरा चोरके साहूकार, साहूकारछै किणन्याय कर्म तोडवारा परिणाम साहूकार छै।

८ बंध चोरके साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

९ मोक्ष चोरके साहूकार साहूकार किणन्याय कर्मसूं कायकर सिद्ध थया ते साहूकार छै।

लडी छटी जीव छांडवा जोगके आदरवा योगकी।

१ जीव छांडवा जोगके आदरवा जोग छांडवा जोग छै किणन्याय पोते जीवनूं भांजन करे अनेरा जीव पर मिमत भाव न करे।

२ अजीव छांड वा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग छै किणन्याय अजीव छै।

३ पुन्य छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा

जोग छे ते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म पुद्गल छे कर्म ते छांडवा ही जोग छे ।

४ पाप छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग छे किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म छे जीवनें दुखदाई छे ते छांडवा जोग छे।

५ आश्रव छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग छे किणन्याय आश्रव द्वारे जीवरे कर्म लागे छे आश्रव कर्म आवानां बारणा छे ते छांडवा जोग छे ।

६ संवर छांडवा जोग आदरवा जोग ; आदरवा जोग छे किणन्याय कर्म रोके ते संवर छे ते आदरवा जोग छे ।

७ निर्जरा छांडवा जोगके आदरवा जोग; आदरवा जोग छे किणन्याय देसथी कर्म तोडे देसथी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा छे ते आदरवा जोग छे ।

८ बन्ध छांडवा जोगके आदरवा जोग ; छांडवा जोग, छे, ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म नों बन्ध छांडवा जोगही छे ।

९ मोक्ष छांडवा जोगके आदरवा जोग आदरवा जोग ते किणन्याय सकल कर्म खपावे जीव

निरमल थाय सिद्ध हुवे इणन्याय आदरवा जोग छै।

॥ छद्रव्यपरलडो सातमो रूपी अरुपी की ॥

१ धर्मास्ति काय रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नही पावे इणन्याय।

२ अधर्मास्ति काय रूपीकि अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नही पावे इणन्याय।

३ आकास्तिकाय रूपीकि अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

४ काल रूपीकि अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

५ पुद्गल रूपीकि अरूपी, रूपी, किणन्याय पांच वर्ण पावे इणन्याय।

६ जीव रूपीकि अरूपी अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

॥छ द्रव्यपर लडी आठमो जीव अजीवकी॥

१ धर्मास्ति काय जीवकि अजीव, अजीव छै।

२ अधर्मास्ति काय जीवकि अजीव, अजीव छै।

३ आकास्ति काय जीवकि अजीव, अजीव छै।

४ काल जीवकि अजीव, अजीव छै।

५ पुद्गलास्ति काय जीवके अजीव, अजीव, छै।

६ जीवास्ति काय जीवके अजीव, जीव छै।

॥छव द्रव्यपर लडी नवमी सावद्य निर्वद्य की॥

१ धर्मास्ति काय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

२ अधर्मास्ति काय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

३ आकास्ति काय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

४ काल सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं, अजीव छै।

५ पुद्गलास्ति काय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

६ जीवास्तिकाय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं छै खोटा परिणामा सावद्य छै चोखा परिणामा निर्वद्यछै।

॥ छव द्रव्यपर लडी दशमी एक अनेक की ॥

१ धर्मास्ति काय एक छैके अनेक छै, एक छै, किणन्याय, द्रव्यथकी एकही द्रव्य छै।

२ अधर्मास्ति काय एक छैके अनेक छै: एक छै, द्रव्यथकी एकही द्रव्य छै।

३ आकास्ति काय एकके अनेक, एक छै, लोक अलोक प्रमाणे एकही द्रव्य छै ।

४ काल एक छैके अनेक छै, अनेक छै द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य छै इणन्याय ।

५ पुद्गल एक छै के अनेक छै, अनेक छै, द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य छै इणन्याय ।

६ जीव एक छै के अनेक छै, अनेक छै अनंता द्रव्य छै इणन्याय ।

छवद्रव्यपर छडी इग्यारमी आज्ञामांहिबाहेरकी

१ धर्मास्ति काय आज्ञा मांहिके वाहर दोनूं नही ते किणन्याय आज्ञा मांहि वाहर तो जीव छै अने ए अजीव छै ।

२ अधर्मास्ति काय आज्ञा मांहिके वाहिर दोनूं नही किणन्याय अजीव छै ।

३ आकास्ति काय आज्ञा मांहिके वाहिर दोनूं नही किणन्याय अजीव छै ।

४ काल आज्ञा मांहिके वाहिर दोनूं नहीं किण-न्याय अजीव छै ।

५ पुद्गल आज्ञा मांहिके वाहिर दोनूं नहीं किणन्याय अजीव छै ।

६ जीव आज्ञा मांहिके वाहिर दोनूं छै किणन्याय

निर्वद्य करणी आज्ञा मांहि छै सावद्य करणी आज्ञा बाहर छै इणन्याय ।

छव द्रव्यपर लडो बारमी चोर साहूकारकी

१ धर्मास्ति काय चोरके साहूकार दोनूं नही किणन्याय चोर साहूकार तो जीव छै ए धर्मास्ति काय अजीव छै इणन्याय ।

२ अधर्मास्ति काय चोरके साहूकार दोनूं नही अजीव छै ।

३ आकास्ति काय चोरके साहूकार दोनूं नही अजीव छै ।

४ काल चोरके साहूकार दोनूं नही अजीव छै ।

५ पुद्गल चोरके साहूकार दोनूं नही अजीव छै ।

६ जीव चोरके साहूकार, दोनूं छै किणन्याय, मांठा परिणाम आंसरी चोर छै चोखा परिणांमां आंसरी साहूकार छै ।

॥ छवमे नवमें की चरचा ॥

१ कर्मांकोकर्त्ता छव द्रव्यमें कोंण नव तत्वमें कोंण उत्तर छवमें जीव नवमें जीव आश्रव ।

२ कर्मांको उपावता छवमे कोंण नवमें कोंण उ: छवमें जीव नवमें जीव आश्रव ।

३ कर्मांको लगावता कवमे कोंग नवमें कोण उः कवमे जीव नवमे जीव आश्रव।

४ कर्मांको रोंकता कवमे कोंग नवमे कोंग उत्तर कवमें जीव नवमे जीव संवर।

५ कर्मांको तोडता कवमे कोंग नवमे कोंग कवमें जीव नवमे जीव निर्जरा।

६ कर्मांको वान्धता कवमें कोण नवमे कोण कवमें जीव नवमें जीव आश्रव।

७ कर्मांको छूकावता कवमे कोण नवमें कोण कवमे जीव नवमे जीव मोक्ष।

८ अठारे पाप सेवे ते कवमें कोण नवमे कोण कवमें जीव नवमे जीव आश्रव।

९ अठारे पाप सेवाका त्याग करे ते कवमे कोण नवमे कोण कवमे जीव नवमे जीव निर्जरा।

१० सामायक कवमे कोंग नवमें कोण कवमें जीव नवमें जीव संवर।

४ व्रत कवमें कोंग नवमें कोंग कवमें जीव नवमें जीव संवर।

५ अव्रत कवमें कोण नवमें कोण कवमें जीव नवमें जीव आश्रव।

६ अठारे पापको वेरमण कवमें कोंग नवमें कोंग कवमें जीव नवमें जीव सम्वर।

७ पंच माहा व्रत छवमें कोण नवमें कोंण छवमें जीव नवमें जीव सम्वर ।

८ पंच चारित्र छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव सम्वर ।

९ पांच सुमति छवमें कोण नवमें कोण छवमे जीव नवमें जीव निर्जरा ।

१० तीन गुप्ती छवमें कोंण नवमें कोण छवमें जीव नवमे जीव सम्वर ।

११ वारे व्रत छवमे कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव सम्वर ।

१ धर्म छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव सम्वर निर्जरा ।

२ अधर्म छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव आश्रव ।

३ दया छवमें कोंण नवमें कोंण छवमें जीव नवमें जीव सम्वर निर्जरा ।

४ हिंस्या छवमें कोंण नवमें कोंण छवमें जीव नवमें जीव आश्रव ।

५ जीव छवमें कोंण नवमें कोंण छवमें जीव नवमें जीव आश्रव सम्वर निर्जरा मोक्ष ।

६ अजीव छवमें कोंण नवमें कोंण छवमें पांच नवमें अजीव पुन्य पाप बन्ध ।

७ पुन्य छवमें कोंग नवमें कोग छवमें पुद्गल नववें अजीव पुन्य वन्ध।

८ पाप छवमें कोग नवमें कोग छवमें पुद्गल नवमें अजीव पाप वन्ध।

९ आस्रव छवमें कोग नवमें कोग छवमें जीव नवमें जीव आस्रव।

१० सम्वर छवमें कोग नवमें कोग छवमें जीव नवमे जीव सम्वर।

११ निर्जरा छवमे कोग नवमे कोग छवमे जीव नवमे जीव निर्जरा।

१२ बंध छवमें कोंग नवमें कोग छवमे पुद्गल नवमें अजीव पुन्य पाप वंध।

१३ मोक्ष छवमें कोग नवमें कोग छवमें जीव नवमें जीव मोक्ष।

१ धर्मास्ति छवमें कोग नवमें कोग, छवमें धर्मास्ति नवमे अजीव।

२ अधर्मास्ति छवमें कोग नवमें कोग, छवमें अधर्मास्ति नवमे अजीव।

३ आकास्ती छवमे कोग नवमें कोग, छवमें आकास्ती नवमें अजीव।

४ काल छवमें कोण नवमें कौन, छवमें काल नव-
में अजीव ।

५ पुद्गल छवमें कौंण नवमें कोण, छवमें पुद्गल
नवमें अजीव पुन्य पाप वंध ।

६ जीव छवमें कोण नवमे कोण, छवमे जीव नवमे
जीव आश्रव संवर निर्जरा मोक्ष ।

७ कागद को पानों छवमे कोण नवमे कोण; छव-
मे पुद्गल नवमे अजीव ।

८ लकडी को पाटो छवमे कोण नवमे कोण; छवमें
पुद्गल नवमें अजीव ।

९ पातो छवमें कोण नवमें कोण; छवमें पुद्गल
नवमें अजीव ।

१० रजोहरण छवमें कोण नवमें कोण; छवमें पुद्-
गल नवमें अजीव ।

११ श्रीसिद्ध भगवान छवमें कोण नवमें कोण; छवमें
जीव नवमें जीव मोक्ष ।

१ पुन्य और धर्म एक को दोय; दोय, किणन्याय
पुन्य तो अजीव छै धर्म जीव छै ।

२ पुन्य और धर्मास्ति एक के दोय; दोय, किण-
न्याय पुन्य तो रूपी छै धर्मास्ति अरूपी ।

३ धर्म और धर्मास्ति एक के दोय; दोय, किण-
न्याय धर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै।

४ अधर्म और अधर्मास्ति एक के दोय दोय किण-
न्याय अधर्म तो जीव छै अधर्मास्ति अजीव
छै।

५ पुन्य अनें पुन्यवान एक के दोय; दोय, किण-
न्याय पुन्य तो अजीव छै पुन्यवान जीव छै।

६ पाप अने पापी एक के दोय; दोय, किणन्याय
पाप तो अजीव छै पापी जीव छै।

७ कर्म अनें कर्मांको करता एक के दोय; दोय,
किणन्याय कर्म तो अजीव छै कर्मारो करता
जीव छै।

८ आठ कर्मा मे पुन्य कितना पाप कितना;
ज्ञानावरणी दर्शणा वरणी, मोहनी, अंतराय;
ये च्यार कर्म तो एकान्ति पाप छै, वेदनी,
नांम, गोत, आयुष, ए च्यार कर्म पुन्य पाप
दोनुं ही छै।

९ कर्म जीवके अजीव; अजीव।

१ कर्म रूपीके अरूपी, रूपी छै।

२ कर्म सावद्य के निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

३ कर्म आज्ञा मांहिके बारै दोनूं नहीं अजीव छै।

४ कर्म छांडवा जोग कि आदरवा जोग; छांडवा जोग छै।

५ पुन्य धर्म कि अधर्म, दोनूं नहीं किणन्याय धर्म अधर्म जीव छै, पुन्य अजीव छै।

६ पाप धर्म कि अधर्म; दोनूं नहीं किणन्याय, धर्म अधर्म, तो जीव छै पाप अजीव छै।

७ बंध धर्म कि अधर्म, दोनूं नहीं किणन्याय धर्म अधर्म तो जीव छै बंध अजीव छै।

८ धर्म जीव कि अजीव, जीव छै।

९ धर्म सावद्य कि निर्वद्य, निर्वद्य छै।

१० धर्म रूपी कि अरूपी, अरूपी छै।

११ धर्म पुन्य कि पाप, दोनूं नहीं, किणन्याय धर्म तो जीव छै पुन्य पाप अजीव छै।

१२ धर्म चोर कि साहूकार साहूकार छै।

१३ धर्म आज्ञा मांहि कि बाहिर, श्री वीतराग देव की आज्ञा मांहि छै।

१४ धर्म छांडवा जोग कि आदरवा जोग, आदरवा जोग छै।

१५ अधर्म जीव कि अजीव, जीव छै।

१६ अधर्म रूपी कि अरूपी, अरूपी छै।

१७ अधर्म आज्ञा मांहि कि बाहर, बाहर छै।

१८ अधर्म चोर के साहूकार, चोर छै।

१९ अधर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग।

२० कर्म अने धर्म एक के दोय; दोय छै किण-न्याय कर्म तो अजीव छै धर्म जीव छै।

२१ पाप अने धर्म एक के दोय; दोय छै किण-न्याय पाप तो अजीव छै धर्म जीव छै।

१ सामायक जीव के अजीव, जीव छै।

२ सामायक सावद्य के निर्वद्य, निर्वद्य छै।

३ सामायक रूपी के अरूपी, अरूपी छै।

४ सामायक आज्ञा मांहि के बाहर, आज्ञा मांहि छै।

५ सामायक चोर के साहूकार, साहूकार छै।

६ सामायक छांडवा जोग के आदरवा जोग आदरवा जोग छै।

७ सावद्य जीव के अजीव; जीव छै।

८ सावद्य सावद्य छै के निर्वद्य; सावद्य छै।

९ सावद्य आज्ञा मांहि के बाहर; बाहर छै।

१० सावद्य चोर कै साहूकार; चोर छै।

११ सावद्य रूपी के अरूपी; अरूपी छै।

१२ सावद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग; छांडवा जोग छै।

१३ निर्वद्य जीव के अजीव; जीव छै ।

१४ निर्वद्य सावद्य के निर्वद्य; निर्वद्य छै ।

१५ निर्वद्य चोर के साहूकार साहूकार छै ।

१६ निर्वद्य रूपीके अरूपी; अरूपी छै ।

१७ निर्वद्य आज्ञा मांहि के वाहिर; मांहि छै ।

१८ निर्वद्य पुन्य के पाप; पुन्य पाप दोनूं नहीं किणन्याय पुन्य पाप तो अजीव छै निर्वद्य जीव छै।

१९ सावद्य पुन्य के पाप; पुन्य पाप दोनूं नहीं, किणन्याय पुन्य पाप तो अजीव छै सावद्य जीव छै ।

२० निर्वद्य धर्मके अधर्म; धर्म छै।

२१ निर्वद्य छांडवा जोगके आदरवा जोग; आदरवा जोग छै।

२२ अधर्म अने अधर्मास्ति येकके दोय; दोय किणन्याय, अधर्म तो जीव छै अधर्मास्ति अजीव छै।

२३ धर्मास्ति अने अधर्मास्ति येक के दोय; दोय, किणन्याय, धर्मास्ति को तो चालवा नो सहाय छै, अने अधर्मास्तिनो थिर रहवानों सहाय छै ।

२४ धर्म अने धर्मी येक के दोय; येक छै, किण-

न्याय धर्म जीवका चोखा परिणाम छे ।

२५ अधर्म अने अधर्मी येक के दोय; येकछै किण-न्याय अधर्म जीवका खोटा परिणाम छै ।

॥ नवपदार्थ की चरचा ॥

१ नव पदार्थमें जीव कितना पदार्थ अने अजीव कितना पदार्थ; जीव, आश्रव, संवर निर्जरा, मोक्ष, ये पांच तो जीव छै अनें अजीव पुन्य पाप बंध येच्यार पदार्थ अजीव छै ।

२ नव पदार्थ मे सावद्य कितना निर्वद्य कितना; जीव अनें आश्रव ये दोय तो सावद्य निर्वद्य दोनुं छै, अजीव, पुन्य, पाप, बंध, ये सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं, संवर, निर्जरा, मोक्ष ये तीन पदार्थ निर्वद्य छै ।

३ नव पदार्थ मे आज्ञा मांहि कितना आज्ञा बाहर कितना; जीव, आश्रव, ये दोय तो आज्ञा मांहि पण छै, अने आज्ञा बाहर पण छै, अजीव, पुन्य, पाप, बंध, ये च्यार आज्ञा मांह बाहर दोनुं नहीं संवर, निर्जरा, मोक्ष, ए आज्ञा मांह छै ।

४ नव पदार्थ में रूपी कितना अरूपी कितना; जीव, आश्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष, ए पांच तो

अरूपी छै; अजीव रूपी अरूपी दोनूं छै पुन्य पाप बंध रूपी छै।

५ नव पदार्थ में चोर कितना साहूकार कितना; जीव, आश्रव, तो चोर साहूकार दोनूंही छै अजीव पुन्य, पाप, बंध ए चोर साहूकार दोनूं नहीं; संवर, निर्जरा, मोक्ष, ए तीन साहूकार छै।

६ नव पदार्थमें छांडवा जोग कितना आदरवा जोग कितना; जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आश्रव, बंध, ए छव तो छोड़वा जोग छै संवर निर्जरा, मोक्ष, ए तीन आदरवा जोग छै।

७ छव द्रव्यमें जीव कितना अजीव कितना; येक जीव पांच अजीव।

८ छव द्रव्यमें रूपी कितना अरूपी कितना; जीव, धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकास्ति, काल, ये पांच तो अरूपी छै पुद्गल रूपी छै।

९ छव द्रव्य में आज्ञा मांह कितना आज्ञा बाहर कितना; जीवतो आज्ञा मांह बाहर दोनू छै बाकी पांच आज्ञा मांह बाहर दोनू नहीं।

१० छव द्रव्य में चोर कितना साहूकार कितना; जीवतो चोर साहूकार दोनू छै; बाकी पांच द्रव्य चोर साहूकार दोनू नहीं अजीव छै।

इन्द्रियां कितनी	५ पांचोही
पर्याय कितनी	५ पांच, मन भाषाभेली लेखवी
प्राण कितना	१० दसों ही

१७ देवताकी पूछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	देव गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रीयां कितनी	५ पांचोंही
पर्याय कितनी	५ मन भाषा भेली लेखवी
प्राण कितना	१० दसोंही

१८ मनुष्यकी पूछा असन्नी की

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांच
पर्याय कितनी	३॥
प्राण कितना	७॥श्वासलेवेतोउश्वासनहीं,

१९ सनी मनुष्य की पूछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांच
पर्याय कितनी	६ छव
प्राण कितना	१० दस

१ तुमे सन्नीकि असन्नी:—सन्नी, किणन्याय मनछै

२ तुमे सुत्त्मकि बादर:—बादर, किण० दीखू छूं

३ तुमे त्रसकि स्थावर:—त्रस, किण० हालू चालू छूं

४ येकेन्द्री सन्नीकि असन्नी:--असन्नी, किणन्याय मन नहीं

५ येकेन्द्री सुत्त्मकि बादर:--दोनूं हीं छै, किण० येकेन्द्री दोय प्रकार की छै दीखे छे ते बादर छै, नहीं दीखे ते सुत्त्म छै

६ येकेन्द्री त्रस कि स्थावर:--स्थावर छै, हाले चाले नहीं

७ येकेन्द्री सन्नीकि असन्नी:--असन्नी किण० मन नहीं

८ पृथ्वीकाय अप्पकाय वायुकाय तेउकाय वनस्पतिकाय

प्रश्न	उत्तर
सन्नीके असन्नी	असन्नी छै मन नहीं
सुक्ष्म कि वादर	दोनूं ही प्रकार की छै
त्रस कि स्थावर	स्थावर छै

९ वेइन्द्री तेइन्द्री चौ इन्द्री की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी कि असन्नी	असन्नी छै मन नहीं
सुक्ष्म कि वादर	वादर छै
त्रस कि स्थावर	त्रस छै

१० तिर्यंच पंचेन्द्री की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी कि असन्नी	दोनूं ही छै
सुक्ष्म कि वादर	वादर छै
त्रस कि स्थावर	त्रस छै

११ असन्नी मनुष्य चउदै स्थानकमें निपजे

प्रश्न	उत्तर
सन्नी कि असन्नी	असन्नी छै
सुक्ष्म कि वादर	वादर छै
त्रस कि स्थावर	त्रस छै

१२ सन्नी मनुष्य ते गर्भमें उपजै जिणारी पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी कि असन्नी	सन्नी छै
त्रसकि स्थावर	त्रस छै
सुक्ष्म कि वादर	वादर छै

१३ नारकी का नेरीयाकी पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी कि असन्नी	सन्नी छै
सुक्ष्म कि वादर	वादर छै
त्रस कि स्थावर	त्रस छै

१४ देवता की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सुक्ष्म के वादर	वादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१५ गाय भैंस हाथी घोड़ा बलद पंखो आदि पसू ज्यानवरकी पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नो के असन्नी	दोनूंही प्रकारका छै क्षमो क्षमके मन नही, गर्भजके मन छै
सुक्ष्म के वादर	वादर छै, नेत्रसें देखवा में आवै छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै हाले चालेछै

१ येकेन्द्रीमें वेद कितना पावै:—ऐक नपुसग वेद पावै

२ पृथ्वी पाणी वनस्पति वायरो अगनो यां पांचां में वेद कितनां पावै:—१ एक नपूसगही छै

३ वेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्रीमे वेद कितना पावै :— ऐक नपूसग वेदही पावै छै

४ पंचेन्द्रीमें बेद कितना पावैः—सन्नीमें तो तीनों ही बेद पावै छै, असन्नी में ऐक नपूंसग बेदहीछै

५ मनुष्यमे बेद कितना पावैः—असन्नी मनुष्य चौदे थानक में उपजै जीवां में तो बेद ऐक नपूंसग ही पावै छै, सन्नी मनुष्य गर्भमें उपजै जिणांमें बेद तीनों ही पावैछै

६ नारकी में बेद कितना पावैः—ऐक नपूंसग बेदही पावै छै

७ जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर यां पांच प्रकारका तिर्यंचामें बेद कितना पावैः—छमोछम उपजे ते असन्नीछै जिणांमे तो बेद नपूंसग ही पावै छै, अनें गर्भमें उपजै ते सन्नीछै जीवांमें बेद तीनोंही पावै छै

८ देवतामें बेद कितना पावै :—उत्तर, भवन पती वाणव्यन्तर जोतषी पहिला दूजा देव लोक तांई तो बेद दोय, स्त्री १ पुरुष २ पावै छै, और तीजा देवलोकसें स्वार्थ सिद्ध तांई बेद एक पुरुष ही छै

९ चोबीस दंडक का जीवांकै कर्म कितना :—उगणीस दंडकका जीवांमें तो कर्म आठही पावै छै, अने मनुष्यमें सात आठ तथा च्यार

१ धर्म व्रतमे के अव्रतमे :-व्रतमें

२ धर्म आज्ञा मांहि के बाहर:--श्री वीतरागदेवकी आज्ञा मांह छै

३ धर्म हिन्सामें के दया मे :-दया में

४ धर्म मोलमिले के नही मिले:-नहीं मिले धर्म तो अमूल्य छै

५ देव मोल मिले के नहीं मिले:--नही मिले अमूल्य छै

६ गुरु मोललीयां मिले के नहीं मिले:--नही मिले अमूल्य छै

७ साधूजी तपस्या करैते व्रतमें के अव्रत में:--व्रतमें ते निर्जरा अधिक धर्म छै

८ साधूजी पारणो करै ते व्रतमे के अव्रत में :--व्रत मे किणन्याय साधू के कोई प्रकार अव्रतही नही सर्व सावद्य जोगका त्याग छै

९ श्रावक उपवास आदि तपकरै ते व्रतमें के अव्रतमें :-व्रत मे

१० श्रावक पारणूं करै ते व्रतमें के अव्रत में:-अव्रत में किणन्याय श्रावक को खाणों पीणों पहरणों ए सर्व अव्रतमें श्रीउवाई तथा सुयगडांग सूत्रमें विसतार छै

११ साधूजी ने सूज तो निर्दोष आहार पाणी दीयां कांईहोवे व्रतमें के अव्रत में:-अशुभ कर्म खयथाय तथा पुन्यबंध छै और १२ वारमूं व्रत निपजै

१२ साधूजीनें असूज तो दोषसहित आहार पाणी दीयां कांई होवै तथा व्रतमें के अव्रत में:-श्री-भगवती सूत्र में कह्यो छै तथा श्री ठाणांग सूत्र के तीजे ठाणें कह्यो छै अल्प आयुषबंधै अ-कल्याणकारी कर्म बंधै तथा असूज तो दीधो तै व्रत में नहीं

१३ अरिहंतदेव देवता के मनुष्य :-मनुष्य छै

१४ साधू देवता के मनुष्य:-मनुष्य छै

१५ देवता साधूनीं वंछा करै के नहीं करै:-करै साधू तो सबका पूजनीक छै

१६ साधू देवताकी वांछा करै के नहीं करै:- नही करै

१७ सिद्ध भगवान देवता के मनुष्य:-दोनूं नहीं

१८ सिद्ध भगवान सुक्षमके बादर:-दोनूं नही

१९ सिद्ध भगवान त्रसके स्थावर:-दोनूं नही

२० सिद्ध भगवन सन्नीके असन्नी :-दोनूं नही

२१ सिद्ध भगवान पर्याप्ता के अपर्याप्ता :-दोनूं नहीं

॥ इति पानाकी चरचा ॥

१ असंयति अव्रतीने दीयां कांई होवे:-श्रीभगवती सूत्र के आठमे सतक छटे उदेसे कह्यो असंयति अव्रती नें सूजतो असूजतो सचित अचित च्यार प्रकार को आहारदीयां येकान्ति पाप होय निर्जरा नही होय

२ असंजति अव्रती जीवको जीवणो वंछणो के के मरणो वंछणो:-असंजतिको जीवणो वंछणो नही मरणो वंछणो नही, संसार समुद्र सें तिरणो वंछणो ते श्रीवीतरागदेव को धर्म छे

३ कसाई जीवोंने मारे तिणवेल्यां साधू कसाई नें उपदेश देवे के नही देवे:-अवसर देखे तो उप-देश देवे के नही देवे :-अवसर देखे तो उपदेश देवे हिन्साका खोटाफल कहै।

प्रश्नः--जीवोंको जीवणो वांछ कर उपदेश देवे के कसाईनें तारवा निमित्त उपदेश देवे :-

उत्तर--कसाई नें तारवा निमित्त उपदेश देवे ते वीतराग को धर्म छे

४ कोई वाडामें पसू ज्यानवर दुखिया छे अने साधू जिणारसते जाय रह्या छे तो जीवां की अनू-कंपा आणी छोडे के नही छोड़े:-नहीं छोड़े, क्रिणन्याय उ० श्रीनिसीत सूत्रके १२ वारमें

उदेसे कह्यो छे अनूकम्पा करितम जीव बांधै बंधावे अनुमोदे तो चौमासी प्रायश्चित् आवे, तथा बंध्या जीवां नें अनुकम्पा आणी छोड़े छुड़ावे अनुमोदे तो चौमासी प्रायश्चित् आवे तथा साधू संसारी जीवांकी सार संभार करे नही साधू तो संसारिक कर्तव्य त्यागदिया ।

॥ अथ तेरा द्वार ॥

❋ प्रथम मूल द्वार ❋

१ मूल १ दृष्टान्ति २ कुण ३ आतमा ४ जीव ५ अरूपी ६ निर्वद्य ७ भाव ८ द्रव्य गुण प्रजाय ९ द्रव्या दिक १० आज्ञा ११ चिनय १२ तलाव १३ ए तेराद्वार जांणवा: प्रथम मूलद्वार कहे छे जीव ते चेतना लक्षण, अजीव ते अचेतना लक्षण, पुन्य ते शुभ कर्म, पाप ते अशुभ कर्म, कर्म ग्रहते आश्रव, कर्म, रोकि ते संवर, देशथ की कर्म, तोडी देशथी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा जीव संघाते शुभाशुभ कर्म बंध्या ते बंध समस्त कर्मां सें मूकावे ते मोक्ष, ।

॥ इति प्रथम द्वार सम्पूर्ण ॥

॥ दूसरो दृष्टान्ति द्वार ॥

२ जीव चेतन का २ दोय भेदः—

एक सिद्ध, दूजो संसारी सिद्ध करमां रहित छै; संसारी करमां सहित छै, तिणरा अनेक भेद छै सुक्ष्म अने बादर त्रसने स्थावर सन्नी अने असन्नी तीन वेद चार गति पांच जाति छव काय चोदे भेद जीवनां चौवीस दंडक इत्यादिक अनेक भेद जाणवा ते चेतन गुण ओलखवानें सोनांरो दृष्टान्ति कहै छै, जिम सोनांनीं गहणों भांजी भांजीनें ओर ओर आकारे घडावे तो आकार नीं विनासथाय पण सोनानीं विनास नथी, जिमकर्मों नां उदय थी जीव की पर्याय पलटे पण मूल चेतन गुण नीं विनास नहीं ।

अजीव अचेतन तिणरा पांच भेदः ।

धर्मास्ति अधर्मास्ति आकास्ति काल पुद्गलास्ति, तिणमे च्यारांकी पर्याय पलटे नहीं एक पुद्गलास्ति की पर्याय पलटे ते ओलखवांनें सोनानीं दृष्टान्ति कहै छै जिम कोई सोनानीं गहणो भांजी भांजी और ओर आकारे घडावे

तो आकारनों विनास पण सोनानों विनास नहीं, ज्यूं पुद्गल की पर्याय पलटे पण पुद्गल गुण को बिनास नही ।

पुन्य तेशुभ कर्म पापते अशुभ कर्म, ते पुन्य पाप ओलखवानें पथ्य अपथ्य आहार नो दृष्टान्ति कहै छै, कदेक जीवके पथ्य आहार घटे और अपथ्य आहार वधे तो जीवके निरोगपणो घटै अने सरोगपणों वधै, कदे जीवरे पथ्य आहार वधे अपथ्य घटै तव जीवरै सरोगपणो घटै अनें निरोगपणों वधै पथ्य अपथ्य दोनूं घटजाय तो प्राणी मर्ण पामे, ज्यों जीवके पुन्य घटै अरुपाप वधै तो सुख घटै अने दुख वधै, कदे जीव के पाप घटै और पुन्य वधै तो सुख वधै अने दुख घटै, पुन्य पाप दोनूं खय होय तो जीव मोक्ष पामें, कर्म ग्रहते आश्रव ते ओलखवाने तीन दृष्टान्ति पांच कहण कहै छै

१ प्रथम कहण ।

१ तलाव रे नालो ज्यूं जीवरे आश्रव
२ हवेली के बारणों ज्यों जीवरे आश्रव
३ नावांके छेद्र ज्यों जीवरे आश्रव इमकह्याथकां

कोइ जीवने आश्रव दोय सरधे तिणने एक सरधावा ने

२ दूजो कहण कहैछै ।

१ तलाव अने नालो एक ज्यूं जीव आश्रत एक
२ हवेलो वारणों एक ज्यों जीव आश्रव एक
३ नावां अनें छेद्र एक, ज्यूं जीव आश्रव एक

३ कर्म आवे ते आश्रव ते ओलखवानें

३ तीजो कहण कहै छै

१ पांणी आवे ते नालो ज्यों कर्म आवै ते आश्रव ।
२ मनुष्य आवे ते वारणों ज्यों कर्म आवै ते आश्रव ।
३ पांणी आवै ते छेद्र ज्यों कर्म आवै ते आश्रव ।

४ इम कह्या थकां कोई कर्म अनें आश्रव येक सरधै तेहनें दोय सरधावानें

चोथों कहण कहै छै ।

१ पांणी अनें नालो दोय ज्यों कर्म अनें आश्रव दोय।
२ मनुष्य अनें वारणों दोय ज्यों कर्म अनें आश्रव दोय ।
३ पांणी छेद्र दोय ज्यों कर्म अने आश्रव दोय ।

५ विशेष ओलखवानै पांचमूं कहण कहे छै

१ पांणी आवे ते नालो पण पांणी नालो नही ज्यों कर्म आवैं ते आश्रव पण कर्म आश्रव नहीं।

२ मनुष्य आवै ते बारणों पण मनुष्य बारणों नहीं, ज्यों कर्म आवै ते आश्रव पण कर्म आश्रव नही।

३ पांणी आवै ते छेद्र पण पांणी छेद्र नही ज्यों कर्म आवे ते आश्रव पण कर्म आश्रव नही ।

कर्म रोके तें संवर तें ओलखवानें तीन दृष्टान्ति कहै छै ।

१ तलाव रो नालो रूंधै ज्यों जीवै रे आश्रव रूंधे ते संवर ।

२ हवेलीरो बारणों रूंधे ज्यों जीवरै आश्रव रूंधे ते संवर ।

३ नावांरे छैद्र रूंधे ज्यूं जीवरे आश्रव रूंधै ते संवर ।

देसथकी कर्म तोड़ी जीव देसथी उज्जल थायते निर्जरा ओलखवानै तीन दृष्टान्ति कहै छै ।

१ तलवारो पांणी मोरीयादिक करी नें काढ़े ज्यों

जीव भला भाव प्रवर्तावी नें जीव रूपीयो तलावरो कर्म रूपीयो पांणी काढ़े ते निर्जरा।

२ हवेलीरो कचरो पूंजी पूंजी नें काडे ज्यों भला भाव प्रावर्तावी नें जीव रूपणी हवेलीरो जीव कर्म रूपीयो कचरो काडे ते निरजरा।

३ नावां को पांणी उलेची २ नें काडे ज्यूं जीव भला भाव प्रवर्तावी नें जीव रूपणी नावांका कर्म रूपीयो पांणी काडे तै निर्जरा।

जीव संघाते कर्म वंधिया हुयाते वंध ते ओलखवानै छव बोल कहै छै।

१ पहिले वोले कह्यो स्वामीजी जीव अने कर्म नीं आदि छै ये वात मिले अथवा न मिले। गुरू वोल्या न मिलै (प्रश्न) क्यूं नें मिले गुरू वोल्या ए उपनों नही।

२ दूजे वोले कह्यो स्वामीजी पहिली जीव और पाछै कर्म ये वात मिले। गुरू वोल्या नही मिलै: प्रश्न—क्यो न मिलै: उ०—कर्म विनाजीव रह्यो किहां मोक्ष गयो पाछो आवे नही यों न मिलै।

३ तीजै बोलै कह्यो स्वामीजी पहली कर्म अनें पछै जीव ये मिलै गुरू कहै नहीं मिलें।

प्र०—क्यों न मिलै। गुरू कहै कर्म कीयां बिना हुवै नहीं तो जीव बिना कर्म कुण किया

४ चौथे बोले कह्यो स्वामीजी जीव कर्म येक साथ उपना ये मिले गुरू कहै न मिले।

प्र०—किणन्याय। उ०—जीव कर्म यां दोयां नें उपजावण वालो कुण।

५ पांच में बोलि जीव कर्म रहीत छै ये वात मिलै गुरू कहै न मिले। प्र०—किणन्याय। उ०—ये जीव कर्म रहीत होवै तो करणी करवारी खप (चूंप) कुणकरै मुक्ति गयो पाछे आवे नहीं।

६ छठे बोलै कह्यो स्वामीजी जीव अने कर्म नों मिलाप किण विधि थाय छैं गुरू कहै अपछा न पूर्व पणे अनादि कालसें जीव कर्म मिलाप चल्यौ जाय छे।

तिण बंधरा ४ च्यार भेद छै।

प्रकृति बंध कर्म सभावरे न्याय १ स्थिति बंध काल व्यवहाररे न्याय २ अनुभाग बंध रस विपाकरैं न्याय ३ प्रदेश बंध जींव कर्म लोलो भूतरे न्याय ४

ते ओलखवानै तीन दृष्टांत कहैछै ।

१ तेल अने तिल लोली भूत ज्यों जीव कर्म लोली भूत ।

२ घृत दूध लोली भूत ज्यों जीव कर्म लोली भूत ।

३ धातू माटी लोली भृत ज्यों जीव कर्म लोली भूत ।

समस्त कर्मासें मूकावे ते मोक्ष तें ओलखवानै तीन दृष्टांत कहै छै ।

१ घांणीयांदिकनूं उपायकरी तेल खल रहित होवे ज्यों तप संजमादि करी जीव कर्मां रहित होवे ते मोक्ष ।

२ झेरणादिक को उपायकरी घृत छाछ रहित होवे ज्यूं तप संजमकरी जीव कर्मां रहित होवे ते मोक्ष ।

३ अग्नियांदिकनूं उपायकरी धातू माटी अलग होवे ज्यों तप संजमकरी जीव कर्मां रहित होवे ते मोक्ष ।

॥ तीजो कोण द्वार कहै छै ॥

जीव चेतन छवद्रवांमे कोंण नव पदार्थों मे कोंण:

छद्रवांमें तो एक जीव नव पदार्थों मे पांच। जीव १ आश्रव २ संवर ३ निर्जरा ४ मोक्ष ५

अजीव अचेतन छवमे कोंण नवमे कोंण:- छवमें ५ पांच, नवमें ४ च्यार, छवद्रवां मे तो धर्मास्ति १ अधर्मास्ति २ आकास्ति ३ काल ४ पुद्‌गलास्ति ५, नव पदार्थों मे अजीव १ पुन्य २ पाप ३ बंध ४

पुन्यते शुभ कर्म छवमें कोंण नवमे कोंण: छवमें एक पुद्‌गल, नवमें तीन, अजीव १ पुन्य २ बंध ३

पाप ते अशुभ कर्म छवमे कोंण नवमे कोण: छवमें एक पुद्‌गल,नवमे तीन अजीव१ पाप२ बंध ३

कर्म ग्रह ते आश्रव छवमें कोंण नवमे कोण:— छवमें जीव, नवमें जीव १ आश्रव २

कर्म रोके ते संवर छवमें कोंण नवमे कोण:— छवमें जीव नवमें जीव संवर

देशथी कर्म तोडी देशथी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा छवमें कोंण नवमें कोंण:—छवमें जीव, नव मे जीव १ निर्जरा २

बंध छवमें कोंण नवमें कोंण:—छवमें पुद्‌गल नवमें अजीव १ पुन्य २ पाप ३ बंध ४

मोक्ष छवमे कोंगा नवमे कोंगा:—छवमें जीव नवमे जीव मोक्ष

चालै ते कोंगा चालवानों साभ्फ किगारो:—चालै ते जीव पुद्गल, अनें साभ्फ धर्मास्तिकायनों

थिर रहै ते कोंगा थिर रहवानों साभ्फ किगारो:—थिर रहै जीव पुद्गल, साभ्फ अधर्मास्तिकाय नो

वस्तु ते कोंगा भाजन किगारो:—वस्तु तो जीव पुद्गल, भाजन आकास्तिकायनों

वरतै ते कोंगा वर्ते किण ऊपर:—वरते तो काल अने वरतै जीव अजीव उपर

भोगवै ते कोंगा अने भोगमे आवै ते कोगा:—भोगवै ते जीव, भोगमें आवे ते पुद्गल दोय प्रकारे एक तो शब्दादिक पगों दूजो कर्म पगो

कर्मां रो करता कोण कीधाहोवे ते कोगा:—करता तो जीव कीधाहुवा कर्म

कर्मांरो उपाय ते कोंगा उपनां ते कोंगा:—उपाय तो जीव उपना ते कर्म

कर्मांनि लगावे ते कोंगा लाग्या हुवा ते कोंगा:—लगावै ते जीव, लागै ते कर्म

कर्म रोकै ते कोंगा रूक्या ते कोंगा:—रोकै तो जीव, रूक्या ते कर्म

कर्मां नैं तोडै ते कोण तृष्या ते कोण:—तोडे ते जीव अने तृष्या ते कर्म

कर्मां नैं बांधै ते कोंण बंध्या ते कोंण बांधै ते जीव बंध्या ते कर्म

कर्मां नैं खपावै ते कोंण अने खयथया ते कोंण खपावै ते जीव खयथया ते कर्म

॥ इति तृतीय द्वारम् ॥

॥ अथ चोथो आतमा द्वार कहै छै ॥

जीवचेतन ते आतमा छै अनेरो नही।

अजीव अचेतन आतमा नही अनेरो छै।

आतमारे काम आवै छै पण आतमा नहीं कोंण कोंण काम आवै ते कहै छै।

धर्मास्तिकाय अवलम्ब नैं चालै छै।

अधर्मास्तिकाय अवलम्ब नैं स्थिर रहै छै

आकास्तिकाय अवलम्ब नैं वसै छै।

काल अवलम्बनैं कार्य करै छै।

पुद्गल खाय छै, पीवे छै, पहरे छै, ओडे छै इत्यादि अनेक प्रकारे आतमारे काम आवे छै पण आतमा नही। पुन्यते शुभ कर्म आतमारे शुभ पणैं उदय आवे छै पण आतमां नहीं

पापते अशुभ कर्म आतमारे अशुभ पर्णे उदय आवे छे पण आतमां नही ।

शुभाशुभ कर्म ग्रह ते आश्रव आतमां छे अनेरो नही ।

कर्म रोके ते सम्बर आतमा छे अनेरो नहीं देसथकी कर्म तोडी देसथकी जीव उज्जलथाय ते निर्जरा आतमां छे अनेरो नही

जीव संघाते कर्म बंधाणा ते बंध आतमां नही अनेरो छे आतमां नैं बांध राखीछे पण आतमां नही ।

समस्त कर्मां सें मूकावे ते मोक्ष आतमां छे अनेरो नही ।

इति चतुर्थं द्वारम् ।

॥ अथः पांचमूं जीव द्वार कहे छे ॥

जीव ते चेतन तिण जीवनैं जीव कहिजे जीवेंने आश्रव कहिजे जीवनें संबर कहिजे जीव नें निर्जरा कहिजे जीव नें मोक्ष कहिजे ।

अजीव अचेतन नें अजीव कहिजे पुन्य कहिजे पाप कहिजे बंध कहिजे ।

पुन्यते शुभ कर्म तेहनैं पुन्य कहिजे तेहनें अजीव कहिजे तेहनें बंध कहिजे ।

पाप ते अशुभ कर्म तेहनें पाप कहिजे अजीव कहिजे बंध कहिजे।

कर्म ग्रह ते आश्रव कहिजे तेहनें जीव कहिजे कर्म रोके ते संबर कहिजे जीव कहिजे।

देसथकी कर्म तोडी देसथकी जीव उज्जलथाय तेहनें निर्जरा कहिजे जीव कहिजे।

जीव संघाते कर्म बंधाणा ते बंध कहिजे अजीव कहिजे। पुन्य कहिजे। पाप कहिजे।

समस्त कर्म मुकावे ते मोक्ष कहिजे जीव कहिजे हिवे येहनों ओलखणा न्याय सहित कहै छै।

जीवनें जीव किणन्याय कहिजे, गये काल जीव छो बर्तमान काल जीव छै आगमें काल जीव को जीव रहसी इणन्याय।

अजीव नें अजीव किणन्याय कहिजे, गये काल अजीव छो बर्तमानकाल अजीव छै आगमें काल अजीव को अजीव रह छै।

पुन्य नें अजीव किणन्याय कहिजे, पुन्य ते शुभ कर्म छै कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल ते अजीव छै।

पाप नें अजीव किणन्याय कहिजे, पाप ते अशुभ कर्म छे कर्म ते पुद्गल छे पुद्गल ते अजीव छै।

आश्रव नें जीव किणन्याय कहिजे:—आश्रव तो

कर्म ग्रह छे कर्मांरो करता छे कर्मांरी उपाय छे उपाय ते जीव ही छे।

१ मित्यात आश्रव नें जीव किणन्याय कहिजे विपरीत सरधान ते मिथ्यात आश्रवविपरीत सरधान जीवरा परिणाम छे।

२ अवर्त आश्रव नें जीव किणन्याय कहिजे अत्याग भाव ते जीवरी आसा वांछा अवर्त आश्रव छे ते जीवरा परिणाम छे।

३ परमाद आश्रव नें जीव किणन्याय कहिजे अण उत्साहपणों ते पर्माद आश्रव छे ते जीवरा परिणाम छे।

४ कषाय आश्रव नें जीव किणन्याय कहिजे कषाय आतमा कही छे कषाय ते जीवरा परिणाम छे ते जीव छे।

जोग आश्रवानें जीव किणन्याय कहिजे जोग आतमा कही छे जोग ते जीवरा परिणाम छे जोग नाम व्यापार तीनूं ही जोगांरो व्यापार जीवरो छे।

संवर नें जीव किणन्याय कहिजे समाई पच्चखाण संयम संवर विवेक विउसग ये छउं आतमां कही छे वलि चारित्र आतमां कहीछे चारित्र जीवरा परिणाम छे इणन्याय।

निर्जरा नें जीव किणन्याय कहिजे भला भाव प्रवर्तावी नें जीव देसथी उजलो हुवे ते जीव छे ।

बंधने अजीव किणन्याय कहिजे बंध तो शुभ अशुभ कर्म छे कर्म ते पुद्गल छे, पुद्गल ते अजीव छे ।

मोक्षनें जीव किणन्याय कहिजे समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष कहिजे निर्वांण कहिजे सिद्ध भगवांन कहिजे सिद्ध भगवांन ते जीव छे इणन्याय मोक्षनें जीव कहिजे ।

॥ इति पंचमूं द्वारम् ॥

॥ अथः छट्ठो रूपी अरूपी द्वार कहै छै ॥

जीव अरूपी छे अजीव रूपी अरूपी दोनूं छे पुन्य रूपी छे पाप रूपी छे आश्रव अरूपी छे संवर अरूपी छे निर्जरा अरूपो छे बंध रूपी छे मोक्ष अरूपी छे हवे एहनी ओलखना कहै छे ।

जीवनें अरूपी किणन्याय कहिजे छव द्रवमें जीवनें अरूपी कह्यो छे पांच वर्ण पावे नहीं ।

अजीव नें अरूपी रूपी दोनूं किणन्याय कहिजे अजीवका पांच भेद धर्मास्ति अधर्मास्ति. आकास्ति काल, पुद्गल इणामें च्यार तो अरूपी छे यामें पांच वर्ण पावे नहीं एक पुद्गल रूपी छे ।

पुन्य नें रूपी किगान्याय कहिजे पुन्य तो शुभ कर्म छे कर्म ते पुदगल छे पुदगल ते रूपी छे

पापनें रूपी किगान्याय कहिजे पाप ते अशुभ कर्म छे कर्म ते पुद्गल छे पुदगल ते रूपी छे।

आश्रव नें अरूपी किगान्याय कहिजे कृष्णादिक छवों भाव लेस्या अरूपी कही छे।

मित्थ्यात आश्रव नें अरूपी किगान्याय कहिजे मित्थ्या दृष्टी अरूपी कही छे।

अवर्त आश्रव नें अरूपी किगान्याय कहिजे अत्याग भाव परिणाम जीवरा अरूपी कह्या छे।

प्रमाद आश्रव नें अरूपी किगान्याय कहिजे अणाउछाहपणों ते प्रमाद आश्रव छे जीवरा परिणाम छे ते जीव छे जीवते अरूपी छे।

कषाय आश्रव नें अरूपी किगान्याय कहिजे श्रीठाणांग दसमें ठाणें जीव परिणामीरा दस भेदां में कषाय, परिणामी कह्यो छे अनें ज्ञान दर्शन चारित परिणामी कह्या छे ये जीव छे तिम कषाय परिणामी जीव छे कषायपणें परिणमे ते कषाय परिणामी आश्रव छे जीव छे जीव ते अरूपी छे

जोग आश्रव नें अरूपी किगान्याय कहिजे तीनों

ह्वीं जोगांरो उठाण कर्म बल वीर्य पुर्षाकार पराक्रम अरुपी छै ।

संवर ने अरुपी किणन्याय कहिजे अठारे पाप ठाणांरो विरमण अरुपी कह्यो छै ।

निर्जरा नें अरुपी किणन्याय कहिजे कर्म तोड़-वारो उठांण कर्म बल वीर्य पुरषाकार प्राक्रम अरुपी छै ।

बंधनें रुपी किणन्याय कहिजे बंधते शुभाशुभ कर्म छै कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल ते रुपी छै ।

मोक्ष नें अरुपो किणन्याय कहीजे समस्त कर्मां नें मूकावे ते जीव छै तेहने मोक्ष कहोजे सिद्ध भग-वांन कहीजे सिद्धभगवांन ते अरुपी छै ।

॥ इति छठो द्वारम् ॥

॥ अथः सातमूं सावद्यनिवद्य द्वार ॥

जीव तो सावद्य निर्वद्य दोनूं छै । अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं । पुन्य पाप सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं, अजीव छै । आश्रव का पांच भेद, मिथ्यात आश्रव, अव्रत आश्रव, प्रमाद आश्रव, कषाय आश्रव, ए च्यार तो सावद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै शुभ जोग निर्वद्य छै । इणन्याय आश्रव सावद्य निर्वद्य दोनुं छै । संबर निर्वद्य छै । निर्जरा निर्वद्य छै

वंध सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै। मोक्ष निर्वद्य छै।

॥ इति सप्तम द्वारम् ॥

॥ अथः आठमूं भावद्वार कहै छै ॥

भाव ५ पांचः—उदय भाव १ उपशम भाव २ क्षायक भाव ३ क्षयोपशम भाव ४ परिणामिक भाव ५

उदय तो आठ कर्मनों अनें उदय निपन्नरा दोय भेदः—जीव उदय निपन्न १ दूजो जीवरे अजीव उदय निपन्न२ तिणमे जीव उदय निपन्नरा३३ तेतीस भेद ते कहै छै ४ च्यार गति ६ छव काय ६ छव लेस्या ४ च्यार कषाय ३ तीन वेद एवं २३ मिथ्याती २४ अवर्ती २५ असन्नी २६ अनाणी २७ आहारता २८ संसारता २९ असिद्ध ३० अकेवली ३१ छद्मस्त ३२ संजोगी ३३

हिवे जीवरे अजीव उदय निष्पन्नरा ३० तीस भेद ते कहै छै ५ पांच सरीर ५ पांच सरीररे प्रयोग परणिम्यां द्रव ५ पांच वर्ण २ दोय गंध ५ पांच रस ८ आठ स्पर्स एवं तीस।

उपशमरादोय भेद एकतो उपशम १ दूजो उपशम निष्पन्न भाव उपशम तो एक मोहणी कर्मनों

होय उपशम निष्पन्नरा दोय भेद. उपशम समकित १ उपशम चारित्र २

क्षायकरा दोय भेद एक तो क्षायक दूजो क्षायक निष्पन्न, क्षायक तो आठ कर्मां को होय अने क्षायक निष्पन्नरा १३ तेरा भेद ते कहै छै।

केवल ज्ञान १ केवल दर्शन २ आतमिक सुख ३ क्षायक समकित ४ क्षायक चारित्र ५ अटल अवगाहना ६ अमुर्तिकपणों ७ अगुरु लघूपणों ८ दान लब्धि ९ लाभ लब्धि १० भोगलब्धि ११ उपभोग लब्धि १२ वीर्य लब्धि १३

क्षयोपशमरा दोय भेद. येक तो क्षयोपशम १ दूजो क्षयोपशम निष्पन्न भाव २ क्षयोपशम तो च्यार कर्म को ज्ञाना वर्णी दरशनावरणी मोहनी अंतराय, अने क्षयोपशम निष्पन्न भावरा ३२ बत्तीस बोल ते कहै छै।

ज्ञानावरणी कर्मरो क्षयोपशम होयतो ८ आठ बोलपासें, केवल वरजी ४ च्यार ज्ञान ३ तीन अज्ञान १ एक भणवो गुणवो।

दरशनावरणी कर्मरो क्षयोपशम होयतो आठ बोलपासें ५ पांच इन्द्री ३ तीन दरशन केवल वरजी।

मोहनी कर्मरो क्षयोपशम होयतो आठ बोलपामें ४ च्यार चारित्र १ एक देसवरत ३ दृष्टी

अंतराय कर्मरो क्षयोपशम होवे तो आठ बोल पामे ५ पांच लब्धि ३ तीन वीर्य।

परिणामिकरा दोय भेद सादिया परिणामि १ अनादिया परिणामी २ अनादिया परिणामिकरा १० दस भेद, तिणमें ६ छव द्रव्य धर्मास्ति आदि ७ सातमूं लोक ८ आठमूं अलोक ६ नवमूं भवी १० दसमूँ अभवी। अने सादिया परिणामीरा अनेक भेद जाणवा। गांम नगर गडा पहाड़ पर्वत पताल समुद्र द्वीप भुवन विमान इत्यादि अनेक भेद आदि सहित परिणामिकरा जांणवा।

जीव आंश्री जीव परिणामीरा १० दस भेद ते कहे छै।

गति परिणामी १ इन्द्रीय परिणामी २ कषाय परिणामी ३ लेस्या परिणामी ४ जोग परिणामी ५ उपयोग परिणामि ६ ज्ञान परिणामी ७ दरशन परिणामी ८ चारित्र परिणामी ६ वेदपरिणामी १०

हीवे जीव आंश्री अजीव परिणामीरा १० दस भेद कहे छै।

बन्धन परिणामी १ गई परिणामी २ संठाण

परिणामी ३ भेद परिणामी ४ वर्ण परिणामी ५ गन्ध परिणामी ६ रस परिणामी ७ स्परस परिणामी ८ अगुरु लघू परिणामी ९ शब्द परिणामी १० ॥ जीव में भाव पावै ५ पांचूं ही, अजीव पुन्य पाप बन्धमे भाव एक परिणामिक ।

आश्रव भाव दोय:—उदय, परिणामिक ।

संबर भाव ४ च्यार उदय बरजी ने ।

निर्जरा भाव ३ तीन चायक, चयोपशम, परिणामिक ।

मोच भाव २ दोय चायक, परिणामिक ।

इति अष्टम द्वारम् ।

॥ अथः नवमूँ द्रव्य गुण पर्याय द्वार ॥

द्रव्य तो जीव असंख्यात प्रदेशी गुण८आठ ज्ञान, दरशन, चारित्र, तप, वीर्य, उपयोग, सुख, दुख, ए एक एक गुणारी अनन्ती अनन्ती पर्याय ।

ज्ञानें करी अनन्ता पदार्थ जाणें तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

दरशनें करी अनन्ता पदारथं सरधे तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

चारित्र थी अनन्त कर्म प्रदेश रोके तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

तपकरी अनन्त कर्म प्रदेश तोड़े तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

वीर्यनी अनन्ती शक्ति तिणसूं अनन्ती पर्याय।

उपयोग थी अनन्त पदार्थ जाणें देखे तिणसूँ अनन्तो पर्याय।

सुख अनन्त पुन्य प्रदेशसूँ अनन्त पुद्गलिक सुख वेदे तिणसूँ अनन्ती पर्याय वलि अनन्त कर्म प्रदेश अलग हुयां थी अनन्त आत्मीक सुख प्रगटे तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

दुख अनन्त पाप प्रदेश सूँ अनन्त दुख वेदे तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

अजीव नां पांच भेद:—धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकास्ति, काल, पुद्गलास्ति यांको द्रव्य गुण पर्याय कहे छे।

द्रव्य तो एक धर्मास्ति, गुण चालवानों साझ पर्याय अनन्त पदार्थ नें चालवानों साझ तिणसूँ अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो एक अधर्मास्ति गुण थिर रहैवानोसाज पर्याय अनन्ता पदार्थ ने थिर रहवानोसाझ तिणसू अनंन्तो पर्याय।

द्रव्य तो एक आकास्ति गुण भाजन पर्याय अनन्त पदार्थां नों भाजन तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

द्रव तो काल, गुण वर्तमान, पर्याय अनन्ता पदार्थां पर वरते तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

द्रव तो पुद्गल, गुण अनन्त गले अनन्त मिले, तिणसूं अनन्ती पर्याय।

द्रव तो पुन्य, गुण जीवके शुभ पणे उदय आवे पर्याय अनन्त प्रदेश सुभ पणे उदय आवे सुख करे तिणसूँ अनन्तो पर्याय।

द्रव तो पाप, गुण जीवरे अनन्त प्रदेश अशुभ पणे उदय आवे, अनन्त दुख करे तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

द्रव तो आश्रव गुण कर्म ग्रहवानों पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश ग्रह तिणसूं अनन्ती पर्याय।

द्रव तो संवर गुण कर्म रोकवारो, पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश रोके तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

द्रव तो निर्जरा, गुण देशथकी कर्म प्रदेश तोडी देश थी जीव उजलो थाय, पर्याय अनन्त कर्म प्रदेश तोडे तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

द्रव तो बंध, गुण जीवनें बांधराखवारो, पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश करी बांधे तिणसूँ अनन्ती पर्याय

द्रव्य तो मोक्ष, गुण आतमिक सुख, पर्याय अनन्त कर्म प्रदेश खयहुयां अनन्त सुख प्रगटे तिणसूं अनन्तो पर्याय ।

इति नवमूं द्वारम् ।

॥ अथः दसमूं द्रव्यादिकरी ओलखनाद्वार ॥

जीवनें पांचां वोलांकरी ओलखीजे

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्रथी लोक प्रमाणे, कालथकी आदि अंत रहित, भावथी अरूपी, गुणथी चेतन गुण

अजीव नें पांचा वोलांकरी ओलखीजे

द्रव्य थकी अनन्ताद्रव्य खेतथी लोकालोक परमाणे, कालथकी आदि अंत रहित, भावथी रूपी अरूपी दोनूं, गुणथकी अचेतन गुण

पुन्य नें पांचां वोलांकरी ओलखीजे

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य, खेत्रथकी जीवांकनें, कालथकी आदि अंत रहित, भावथकी रूपी गुणथकी जीव के शुभ पणें उदय आवै

पाप ने पांचां वोलांकरी ओलखीजे

द्रव्य थकी अनंता द्रव्य खेतथी जीवांकनें काल-

थकी आदि अंत रहित, भावथकी रूपी, गुण-
थकी जीवरै अशुभ पणै उदय आवै

आश्रव नें पांचां बोलांकरी ओलखीजे

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य, खेत्रथकी जीवांकनैं, काल-
थकीरा ३ तीन भेदः—एकेक आश्रवरी आदि
नहीं अंत नही ते अभोइ आसरी एकेक आश्रवरी
आदि नहीं पण अंत छै ते भोइ आंसरी, एकेक
आश्रवरी आदि छै अंत छै ते पडवाई समदृष्टी
आंसरी तेहनीस्थिति जघन्य अंतर महूर्त उतकृष्टी
देस उणी अर्ध पुदगल प्रावर्तन, भावथकी अरूपी,
गुणथकी कर्म ग्रहवानो गुण

संवर नें पांचां बोलांकरी ओलखीजे

द्रव्यथकी तो असंख्याता द्रव्य, खेत्रथी जीवांकनैं,
कालथकी आदि अंत सहित, भावथी अरूपी,
गुणथकी कर्म रोकवारो गुण

निर्जरा नें पांचां बोलांकरी ओलखीजे

द्रव्यथकी अकाम निर्जराका तो अनंता द्रव्य
सकाम निर्जराका असंख्याता द्रव्य, खेत्रथी
जीवाकनैं, कालथकी आदि अंत सहित, भाव-
थकी अरूपी, गुणथकी कर्म तोडवारो गुण

बंधनें पांचां बोलां ओलखीजे

द्रव्यथी अनंता द्रव्य। खेतथकी जीवांकने
कालथकी आदि अंत सहित भावथकी रूपी।
गुणथकी कर्म बंध रखवारो

मोक्षनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे:। द्रव्यथकी
अनंता द्रव्य। खेतथी जीवांकनें। कालथकी
येकेक सिद्धांरी आदि अंत नही तेघणां काल-
सिद्धांरि न्याय येकेक सिद्धांरी आदि छे पण अंत
नही। ते थोडाकाल सिद्धांरे न्याय भावथकी
अरूपी। गुणथकी आत्मिकसुख॥

धर्मास्तिकायनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे। द्रव्य-
थकी येक द्रव्य। खेत थी लोक प्रमाणे। काल-
थकी आदि अंत रहित। भावथकी अरूपी।
गुणथकी जीव पुद्गल नें चालवारो साभ॥

अधर्मास्तिकाय नें पांचां बोलांकरी ओलखीजे।
द्रव्यथकी येक द्रव्य। खेतथी लोक प्रमाणे। काल-
थकी आदि अंतरहित। भावथकी अरूपी। गुण
थकी जीवपुद्गलनें थिर रहवानों साभ॥

आकास्ति कायनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे।
द्रव्यथको येक द्रव्य। खेतथकी लोक अलोक
प्रमाणे।

कालथकी आदि अंत रहित । भावथकी अरूपी ।
गुणथकी भाजनगुण

काल नें पांचां बोलांकरी ओलखीजे ।

द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य । क्षेत्रथी अढाई द्वीप प्रमाणे । कालथकी आदि अन्त रहित । भावथकी अरूपी । गुणथकी वर्तमान गुण ।

पुद्गलास्तिकायनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे ।

द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य । खेत्रथी लोक प्रमाणे । कालथकी आदि अन्त सहित । भावथकी रूपी । गुणथकी गलै मलै ।

इति दसं द्वारम् ।

॥ अथः येकादसं आज्ञा द्वार कहै छै

जीव आज्ञा मांही बाहर दोनूंछै, ते किणन्याय सावद्य कर्तव्य आसरी आज्ञा बाहर छै । इने निर्वद्य कर्तव्य आसरी आज्ञा मांहछै ॥ अजीव आज्ञा मांह के बाहर, अजीव आज्ञा मांह बाहर दोनूं नहीं, ते किणन्याय अजीवछै अचेतन छै जडछै ।

पुन्य पाप बंध येतीनूं आज्ञा मांही बाहर नहीं धजीवछै ।

आश्रव आज्ञा मांह बाहर दोनूंछै, किणन्याय आश्रवना पांच भेद मिथ्याति १ अव्रती २ प्रमादी ३

कषाय ४ ए च्यार तो आज्ञा वाहरछै, जोग आश्रव का दोय भेद सुभ जोग वर्तता निर्जराहुवे तिण अपेक्षाय आज्ञा मांहछै। असुभ जोग आज्ञा वाहर

संवर आज्ञा मांहछै, ते किणन्याय संवरथी कर्म रुकै ते श्री वीतरागकी आज्ञा मांहछै

निर्जरा आज्ञा मांहछै ते किणन्याय कर्म तोडवारा उपाय श्रीवीतराग की आज्ञा मे छै

मोक्ष आज्ञा मांह छै ते किणन्याय सकल कर्म खपावारी करणी श्रीवीतरागकी आज्ञा मांहछै

इति एकादशम् द्वारं।

॥ अथः वारमूं छांडनय द्वार कहे छे ॥

जीवनें जीव जांणवो॥ अजीवनें अजीव जाणवो। पुन्यनें पुन्य जाणवो। पापनें पाप जाणवो। आश्रव नें आश्रव जांणवो संवर नें संवर जांणवो। निर्जरा नें निर्जरा जाणवो। बंधनें बंध जाणवो। मोक्ष नें मोक्ष जाणवो। एह नव पदार्थ जाणवा योग कह्या छै। इणां में आदरवाजोग ३ तीन, संवर १ निर्जरा २ मोक्ष ३ वाकी ६ छव छांडवा जोगछै।

जीवनें छांडवा जोग किणन्याय कहीजे:— आपरा जीवको भाजन करी किणी जीव ऊपर ममत्व भाव न करवो।

अजीव छांडवा जोग किणन्याय कहीजे, किणी अजीव पर ममत्व भाव न करवो

पुन्य पाप छांडवा जोग किणन्याय कहीजे सुभ असुभ कर्म छांडवा जोगछै

आश्रव नें छांडवा जोग किणन्याय कहीजे आश्रव कर्म ग्रहछै। कर्मांरो उपायछै। सुभासुभ कर्म आवाना बारणांछै ते छांडवा जोगछै

कर्मरोकि ते संवर आदरवा जोगछै

देसथकी कर्म तोडी देसथकी जीव उज्जल थायते निर्जरा आदरावा जोगछै

बंधनें छांडवा जोग किणन्याय कहीजे। शुभा शुभ कर्म जीव कै बंध रह्याछै ते बंध तो छोडवा-जोगछै

मोच्च नैं आदरवा जोग किणन्याय कहीजे समस्त कर्म मूकावे ते मोच्च आनरवा जोगछै।

इति द्वादस्म द्वार।

॥ अथः तेरमूं तलाव द्वार कहे छे ॥

तलावरूपी जीव जांणवो। अतलाव ते तलाव रूपी अजीव जाणवो। निकलता पांणी रूप पुन्य पाप जांणवो। नालारूप आश्रव जांणवो। नाला बंध

रूप संवर जाणवो। मांहिला पाणी रूप बंध जाणवो। खाली तलाव रूप मोक्ष जाणवो।

यह तेरा द्वारतंत किया श्रीभीखनजीसंत

॥ इति तेराद्वार सम्पूर्ण ॥

अथ लघुदंडक लिख्यते।

पहिलो शरीर द्वार।

शरीर ५—औदारिक १ वैक्रिय २ आहारिक ३ तैजस ४ कार्मण ५"।

सातों ही नारकी और सर्व देवतामे शरीर पावै तीनः—वैक्रिय १ तैजस २ कार्मण ३

च्यार थावर, तीन विकलेंद्रीमे, तथा असन्नी तिर्यंच, असन्नी मनुष्य, सर्व युगलियामे शरीर पावै ३-औदारिक १ तैजस २ कार्मण ३।

वाउकाय, सन्नीतिर्यंचपंचेंद्रीमें, शरीर पावै ४ औदारिक १ वक्रिय २ तैजस ३ कार्मण ४।

गर्भज मनुष्यामें शरीर पावै पांचूंही ॥"

सिद्धांमे शरीर पावै नहीं ॥"

इति प्रथम शरीर द्वारम्।

२ दूसरो अवगाहना द्वार।

जघन्य अवगाहनां आंगुलको असंख्यात र्भ भाग उत्कृष्टी हजार जोजन जाजेरो।

उत्तर वैक्रिय करैतो जघन्य तो आंगुलका सं-
ख्यात उं भाग, उत्कृष्टी लाखजोजनजाजेरी।

पहली नारकी की अवगाहनां उत्कृष्टी ७॥।
धनुष्य ६ आंगुलकी।

दूजी नारकी की अवगाहनां साढ़ी पंद्रा १५॥
धनुष और १२ आंगुलकी।

तीजी नारकी की अवगाहनां ३१। धनुषकी।

चौथी नारकी की अवगाहनां ६२॥ धनुषकी।

पांचवी नारकी की अवगाहनां १२५ धनुषको।

छट्ठी नारकी की अवगाहनां २५० धनुषकी।

सातवीं नारकी की अवगाहनां ५०० धनुषको।

जघन्य सातूंही नारकीको आंगुलको असंख्यात
उं भाग, उत्तर वैक्रिय करैतो जघन्य तो आंगुल को
संख्यात उं भाग, उत्कृष्टी आप आपसूं दूणी।

देवतांकी अवगाहनां।

१५ परमाधामी १० भुवनपती, वानव्यंतरा,
तिर्भूमखा, ज्योतषी, पहला, तथा दूजा देवलोककी
अवगाहनां ७ सात हाथकी।

तीसरा तथा चौथा देवलोक की ६ छव हाथकी

पांचवां तथा छठा देवलोक की अवगाहनां ५
पांच हाथकी।

सातवां तथा आठवां देवलोक का देवतां की अवगाहनां ४ च्यार हाथकी। नवमां, दशमां, ग्यारवां, तथा बारवां को ३ तीन हाथकी अवगाहनां होय। ६ नवग्रैवेग का देवांकी २ दोय हाथकी।

च्यार अनुत्तर विमानका देवांकी अवगा० १ एक हाथकी।

स्वार्थ सिद्धकी अवगाह० एक हाथ मठेरी होय।

देवता उत्तर वैक्रियकरै तो जघन्य तो आंगुल को संख्यात ऊं भाग, उत्कृष्टी लाख जोजन जाझेरी अवगाहनां जाणो।

बारवां देवलोक के ऊपरका देव वैक्रियकरै नहीं।

च्यार थावर तथा असन्नीमनुष्यकी जघन्य, उत्कृष्टी आंगलकी असंख्यात वों भाग।

वनस्पतिकायकी अव० जघन्य तो आंगुल को असंख्यात मों भाग, उत्कृष्टी हजार जोजन जाजेरी तेकमल फूलकी अपेक्षा।

वेइन्द्री की अव० १२ जोजनकी, उत्कृष्टी।

तेइन्द्री की अवगाहनां ३ कोसकी उत्कृष्टी।

चौउरिन्द्री की अवगा० ४ कोसकी, उत्कृष्टी।

अनें जवन्य सगले आंगल के असंख्यात वें भाग कहणी। तिर्यंच पंचेन्द्री की अवगाहनां जगनतो आंगुलनों असंख्यातमें भाग उतकृष्टी।

१ जलचर सन्नी असन्नी की १००० जोजन की ।

२ थलचर सन्नी की ६ कोसकी, असन्नोकी प्रत्येक कोसकी ।

३ उरपर सन्नी की १००० जोजनकी, असन्नी प्रत्येक जोजन की ।

४ भुजपुर सन्नी की प्रत्येक कोसकी, असन्नीकी प्रत्येक धनुषकी ।

५ खेचर सन्नी असनी की प्रत्येक धनुषकी तिर्यंच पंचेन्द्री उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य आंगुलके संख्यात मे भाग उत्कृष्टी ९०० जोजनकी करै, मोटी अवगाहनां वालो उत्तर वैक्रिय करै नहीं। असन्नी मनुष्यनी अवगाहना जगन उतकृष्टी आंगुलके असंख्यातमे भाग ।

॥ सन्नी मनुष्यकी अवगाहनां ॥

५ भर्थ ५ ऐरभर्थ का मनुष्यांकी, अवसर्पणीके पहिले आरै लागतां ३ कोसकी उतरतां २ कोसकी, दूजे आरै लागतां २ कोसकी उतरतां १ कोसकी ३ तीजे आरै लागतां १ कोसकी उतरतां ५०० धनुषकी, चौथे आरै लागतां ५०० धनुष की उतरतां ७ हाथकी पाचवें आरै लागतां ७ हाथकी उतरतां १ हाथकी,

छट्ठे आरे लागतां ७ हाथकी उतरतां १ हाथ सठेरी जाणवी ।

इसीतरें उत्सर्पणी मे चढ़ती कहणी । वैक्रे लाख जोजन की करें । ५ हेमवय ५ अरणवयका युगलियां की १ कोसकी, ५ हरिवास ५ रम्यक वास कांकी २ कोसकी, ५ देवकुरु ५ उत्तर कुरुकांकी ३ कोसकी, महा विदेह खेत्रका मनुष्यांकी ५०० धनुषकी,

सिद्धांकी जघन्य १ हाथ ८ आंगुलकी उत्कृष्टी ३३३ धनुष १ हाथ ८ आंगुल की ।

इति अवगाहनां द्वार ।

३ तीसरो संघयण द्वार ।

संघयण ६ तेहनां नांव वज्र रिषभनाराच १ रिषभनाराच २ नाराच ३ अर्ध नाराच ४ कीलको ५ छेवटो ६ एवं ।

नारकी सर्व देवता में संघयण पावै नहीं, ५ थावर, ३ विकलेंद्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच में संघयण १ छेवटो गर्भज मनुष्य, तिर्यंच में संघयण पावै, ६ छउं हीं ।

युगलिया तिर्यंच मनुष्य में संघयण १ वज्रऋषभ नाराच सिद्धांमे संघयण पावै नहीं ।

इति संघयण द्वारम् ।

४ चोथो संठाण द्वार ।

संस्थान ६ तेहनां नाम समचोरंस १, निगव परि-मंडल २ सादिज ३ वावन्य ४ कुब्ज ५ हुंडक ६

७ सात नारकी—

५ थावर, ३ विकेलेंद्री, असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यंचमें संठाण हुंडक । तिणमें पांच थावरकी विगत । पृथ्वी कायको चंद्र मसूरकीदाल अप्प कायको बुद्बुद,

तेउ कायको सूईको करनालो ।

वाउ कायको ध्वजा पताका ।

वनस्पतिका नाना प्रकारका ।

सर्व देवता सर्व युगलिया तथा त्रेसठ शलाका पुर्षांमें समचौरंस संस्थान,

गर्भेज मनुष्य तिर्यंचमें ६ छउंही, सिद्धामें पावै नहीं,

इति संठाण द्वारम् ।

५ पांचमूं कषाय द्वार ।

कषाय ४ क्रोध, मान, माया, लोभ । २४ दंडकमें कषाय ४ पावै, मनुष्य अकषाईपणहोय सिद्धांमें कषाय नहीं ।

इति कषाय द्वारम् ।

६ छट्ठो संज्ञा द्वार ।

संज्ञा ४ आहार संज्ञा १ भय संज्ञा २ मैथन संज्ञा ३ परिग्रह संज्ञा ४।२४ दंडकामें संज्ञा ४ पावै मनुष्य असंज्ञी बहुता पणहोय, सिद्धामे संज्ञा नही।

इति संज्ञा द्वारम्।

७ सातमूं लेस्या द्वार ।

सात नारकी में पावै ३ मांठी (द्रव्य लेस्या लेखवी) तेहनी विगत।

पहली दूसरी में पावै १ कापोत।

तीजीमें कापोत वाला घणा नील वाला थोड़ा।

चौथी में पावै १ नील।

पांचमी मे नील वाला घणां कृष्ण वाला थोड़ा, छठी में पावै १ कृष्ण।

सातमी में पावै १ महाकृष्ण, भवनपति, वान-व्यंतर, देवतां में लेस्या पावै ४ पद्म शुक्ल टली (द्रव्य लेखवी)

पृथ्वी अप्प वनस्पतिकायमें तथा सर्व युगलियां मे लेस्या पावै ४ प्रथम।

तेऊ वाऊकाय, ३ विकलेंद्री, असन्नी मनुष्य, तिर्यंच, मे लेस्या पावै ३ माठी।

जोतषी, पहला दूजा देवलोक तथा पहिला किल्विषी में लेस्या पावै १ तेजू।

तीजा चोथा, पांचवां देवलोक तथा दूजा किल्विषी में पावै १ पद्म।

तीजा किल्विषी तथा छट्ठा देवलोक सें स्वार्थ सिद्धतांई पावै १ शुक्ल। कैतलाइक मनुष्य अलेसी पणहोय सिद्धां में लेस्या नहीं।

सन्नी मनुष्य तिर्यंच मे लेस्या पावै ६ छउंही।

इति लेस्या द्वारम्।

८ आठमूं इन्द्रिय द्वार।

इन्द्री ५ श्रोत, चक्षु, घ्राण, रस, फरस एवं ५ ७ नारकी—सर्व देवता, गर्भेज मनुष्य गर्भेज तिर्यंच असन्नी मनुष्य में इन्द्री ५ पावै। ५ थावरमें इन्द्री १ फरस पावै, बेइन्द्रिमें २ इन्द्री होय, फरस—रस, तेइन्द्रीमें ३ इन्द्री होय-- फरस, रस, घ्राण, चउरिन्द्रीमें ४ होय श्रोतेंद्री बिना,। मनुष्य नो इन्द्रिया पणहोय सिद्धाकै इन्द्री होय ही नहीं।

इति इन्द्रिय द्वारम्।

नवमूं समुदघात द्वार।

समुद्घात ७ वेदनी १ कषाय २ मारणान्त ३ वै-

क्रिय ४ तेजस ५ आहारिक ६ केवल ७।

७ सात नारकी वाउकाय में ४ पहली समुद्घात पावे, भुवनपति वानव्यंतर जोतषी बारवां देवलोकतांईका देवता गर्भेज तिर्यंच में समुद्घात ५ आहारिक केवल टली, ४ थावर ३ विकलेंन्द्री असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यंच सर्व युगलिया बारवां से ऊपरका देवतामे समुद्घात ३ पावे पहली। गर्भेज मनुष्यां मे समुद्घात ७ सातों ही पावे। केवल्यां में १ केवल समुद्घात पावे, तीर्थंकर समुद्घात करे नही सिद्धांके समुद्घात नहीं।

इति समुद्घात द्वारम्।

१० दसमूं सन्नी असन्नी द्वार।

सन्नी के मन असन्नीके मन होय नही।

७ नारकी सर्व देवतागर्भेज मनुष्य, गर्भेज तिर्यंच युगलिया सन्नी होय। ५ थावर ३ विकलेंद्री समुर्छिम मनुष्य समूर्छिम तिर्यंच ये असन्नी होय। मनुष्य नोसन्नी, नोअसन्नी पणहोय, सिद्धसन्नी असन्नी नही होय।

इति सन्नी असन्नी द्वारम्।

११ इग्यारमूं वेद द्वार ।

३—वेद स्त्री १ पुर्ष २ नपुंसक ३ ।

७ नारकी—५ थावर ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यंच में वेद १ नपुंसक होय। भवनपती वानव्यंतर जोतषी पहलो दूजो देवलोक पहला-किल्विषी, सर्वयुगलिया में वेद २ स्त्री तथा पुरुष होय। तीजा देवलोक सूँ स्वार्थ सिद्धतांई वेद १ पुरुष होय। गर्भेज मनुष्य, गर्भेज तिर्यंच, में वेद ३ तीनू होय, मनुष्य अवेदी पणहोय सिद्धांकें वेद नहीं ।

इति वेद द्वारम् ।

१२ बारमूं पर्याय द्वार ।

पर्याय ६ । आहार १ शरीर २ इन्द्रीय ३ श्वासो-श्वास ४ भाषा ५ मन ६ पर्याय एवं ६ ।

७ नारकी देवता में पावै ५ पर्याय ।

मनभाषा भेली लेखवी । ५ थावर में पर्याय ४ होय पहली, असन्नी मनुष्य में पर्याय ३॥, तीन तो पहली आधी में श्वासलेवै तो उश्वास नहीं, उश्वास लेवे तो श्वास नहीं, ३ विकलेन्द्री—सम्मूर्छिम तिर्यंच

पचेन्द्री में पर्याय ५ पावै मन टल्यो, सिद्धामे पर्याय पावै नहीं। सन्नी मनुष्य तिर्यंच में पावै ६ ।

इति पर्याय द्वारम् ।

तेरमूं दृष्टीद्वार ।

दृष्टी३ सम्यक्‌दृष्टी १ मिथ्यादृष्टी २ समामिथ्यादृष्टी३ एवं ३ होय ।

७ नारकी १२ बारमां देवलोक तांई देवता गर्भज मनुष्य गर्भज तिर्यंच मे दृष्टी ३ तीनूं ही होय, ५ थावरमे असन्नी मनुष्य, मे ५६ अंतरद्वीप का युगलियामे दृष्टी १ मिथ्या दृष्टी पावै, ६ ग्रैवेकका देवतांमे ३ विकलेंद्रीमे, असन्नी तिर्यंच पंचेंद्री मे ३० अकर्म भूमिका युगलियामे दृष्टी २ सम्यक् १ मिथ्या २ पावै, । ५ अनुत्तर विमानका देवता, सिद्धांमें दृष्टी १ सम्यक् पावै ।

इति दृष्टि द्वारम् ।

१४ चौदमूं दर्शन द्वार ।

दर्शन ४ चक्षु १ अचक्षु २ अवधि ३ और केवल एवं दर्शन ४ जाणो ।

७ नारकी सर्व देवता गर्भज तिर्यंचमे दर्शन ३ पावै चक्षु १ अचक्षु अवधि ३। गर्भज मनुष्यमें

दर्शन ४ होय ; ५ थावर बेइन्द्री, तेइन्द्री, समूर्च्छिम मनुष्य, सर्व युगलियांमें दर्शन २ चक्षु १ अचक्षु २। सिद्धामे १ केवल दर्शन ही पावै।

इति दर्शन द्वार।

१५ पंदरमूं ज्ञान द्वार।

ज्ञान ५ मति १ श्रुत २ अवधि ३ मन पर्यव ४ केवल ज्ञान एवं ५।

७ नारकी सर्व देवता गर्भज तिर्यंचमे ज्ञान ३ पावै पहला। गर्भज मनुष्यां में ज्ञान ५ पावै। ५ थावर असन्नी मनुष्य ५६ अंतरद्वीप का युगलियामें ज्ञान नही पावै। ३ विकलेंद्री असन्नी पंचेंद्री तिर्यंचमें, ३० अकर्म भूमिका युगलिया में ज्ञान २ पावै। मति। श्रुति सिद्धामें १ केवल ज्ञान ही पावै।

इति ज्ञान द्वारम्।

१६ सोलमूं अज्ञान द्वार।

अज्ञान ३ मति अज्ञान १ श्रुत अज्ञान २ विभंग अज्ञान एवं ३।

७ नारकी ९ ग्रैवेकतांई का देवता गर्भज तिर्यंच गर्भजमनुष्य में अज्ञान ३ ही पावै। ५ थावर ३

विकलेंद्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच, पंचेंद्री, सर्व युगलियामे अज्ञान २ पावै मति अ० १ श्रुत अ० २॥ ५ अनुत्तर का देवता मे सिद्धामे अज्ञान पावे नही ।

इति अज्ञान द्वारम् ।

१७ योग द्वार ।

योग १५ मनका ४ सत्य मन १ असत्य मन २ मिश्र-मन ३ व्यवहार मन एवं ४। वचनका जोग ४ सत्य वचन १ असत्य वचन २ मिश्र वचन ३ व्यवहार वचन एवं ४। कायाका जोग ७ ओदारिक १ औदारिक को मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रियको मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिकको मिश्र ६ कार्मण ७ एवं १५ ७ नारकी सर्व देवता मे योग पावे ११ मनका ४ वचनका ४ वैक्रिय ९ वैक्रियको मिश्र १० कार्मण सर्व युगलिया मे योग पावे ११ मनका ४ वचनका ४ ओदारिक ९ ओदारिकको मिश्र १० कार्मण । वाउकाय वरजीनें, ४ स्थावर असन्नी मनुष्यमे योग पावें ३ ओदारिक ओदारिकको मिश्र कार्मण वाउकायमें जोग पावे ५ ओदारिक १ ओदारिक को मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रिय को मिश्र ४ कार्मण तीन

विक्लेंद्री असन्नी तिर्यंच पंचेंद्री में पावै ४ औदारिक १ औदारिक मिश्र २ व्यवहार भाषा ३ कार्मण ४। गर्भज तिर्यंच में पावै १३ आहारिक आहारिकको मिश्र टल्यो, गर्भज मनुष्यां में पावै १५ ही, चौदमे गुणठाणें अजोगी होय। सिद्धांमें जोग पावै नही।

इति योग द्वारम्।

१८ अठारमूं उपयोग द्वार।

७ नारकी ६ नवग्रैवेगतांई का देवता गर्भज तिर्यंचमें उपयोग पावै ६ ज्ञान तो ३ मति श्रुति अवधि, अज्ञान ३ मति अज्ञान श्रुति अज्ञान विभंग अज्ञान, दर्शन ३ चक्षु अचक्षु अवधि।

५ थावर में पावै ३ मति श्रुति अज्ञान तथा अचक्षु दर्शन।

असन्नी मनुष्य तथा ५६ अंतरद्वीप का युगलिया में उपयोग पावे ४ मति श्रुति अज्ञान तथा चक्षु अचक्षु दर्शन।

बेइन्द्री तेइन्द्रीमें उपयोग पावै ५ मति श्रुति ज्ञान मति श्रुति अज्ञान तथा अचक्षु दर्शन।

चौरिन्द्री—असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री ३० अकर्म भूमि का युगलियामें उपयोग पावै ६ मति श्रुति ज्ञान मति श्रुति अज्ञान चक्षु अचक्षु दर्शन एवं ६। पांच अणुत्तर विमांगा में पावै ६ तीन ज्ञान तीन दर्शन।

गर्भज मनुष्यां में उपयोग पावै १२ सिद्धां में उपयोग पावै २ केवल ज्ञान १ केवल दर्शन २।

इति उपयोग द्वारम्।

१९ उगणीसमं आहार द्वार।

उन्नीस दंडक का जीव तो छउंही दिशाको आहार लेवै।

पांच थावर तीन च्यार पांच छव दिशिको आहार लेवै।

केतला मनुष्य अणआहारीक पण होय सिद्ध भगवंत आहार लेवै नहीं।

इति आहार द्वारम्।

२० वीसमं उत्पत्ति द्वार।

७ नारकी, आठवां देवलोक तांई का देवता तेउ, वाउ काय ३ विकलेंद्री असन्नी मनुष्य तिर्यंच

सर्वयुगलियां में उत्पत्ति पावे गति २ की मनुष्य तिर्यंच ।

नवमां देवलोक से स्वार्थ सिद्धतांई का देवतामें उत्पत्ति पावे १ मनुष्य गतिकी ।

पृथ्वी अप्प वनस्पति काय में उत्पत्ति पावे ३ गतिकी (नारकी टली)

गर्भजमनुष्य तिर्यंच में उत्पत्ति ४ च्यारूं ही गतिकी ।

सिद्धांमें १ मनुष्य गतिकी ।

इति उत्पत्ति द्वारम् ।

२१ इकवीसमूं स्थिति द्वार ।

नारकी स्थिति

१ पहली नारकी की स्थिति जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टी १ सागरकी ।

२ दूसरी नारकी को जघन्य १ सागरकी उत्कृष्टि ३ सागरकी ।

३ तीसरी नारकी की जघन्य ३ सागर उत्कृष्टि ७ सातसागरकी ।

४ चोथी नारकी की जघन्य ७ सागरकी उत्कृष्टि १० सागर की ।

५ पांचमी की जघन्य १० उत्कृष्टि १७ सागरकी
६ छट्ठी नारकी को जघन्य १७ उत्कृष्टि २२ सागरकी।
७ सातमी नारकी जघन्य २२ उत्कृष्टि ३३ सागर

भवन पति देवतांकी स्थिति—

दक्षिण दिशिका असुर कुमार की जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टि १ सागरकी, यांकी देव्यां की जघन्य दस हजार वर्षकी उत्कृष्टि ३॥ पल्योपमकी।

दक्षिण दिशिका ९ नौ निकायका देवतां की जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टि १॥ पल्योपम की, यांकी देव्याकी जघन्य १० हजार वर्ष उत्कृष्टी ॥। पौण पल्योपमकी।

उत्तर दिशिका असुर कुमारकी जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टि १ सागर जाझेरो यांकी देव्यां की जघन्य दस हजार वर्षकी उत्कृष्टि ४॥ साडा च्यार पल्योपमकी।

उत्तर दिशिका ९ नौ निकायका देवतांकी जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टि देस उणीं दोय पल्योपमकी देव्यांकी ज० १० हजार वर्षकी। उत्कृष्टि देश उणां १ पल्य०।

वानव्यंतर देवतांकी स्थिति ।

जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टि १ पल्योपमकी, यांकी देव्यांकी जघन्य दस हजार वर्षकी उत्कृष्टि ॥ आधा पल्योपमकी तिभूमका देवांकी भी इतनी हीं ।

जोतषी देवांकी स्थिति ।

चन्द्रमांकी जघन्य पाव पल्योपमकी उत्कृष्टी १ पल्योपम १ एक लाख वर्ष अधिक, यांकी देव्यां की जघन्य पाव पल्योपमकी उत्कृष्टि आधा पल्य ५० हजार वर्षकी, सूर्यकी जघन्य । पाव पल्योपमकी उत्कृष्टि १ ल्पयोपम १ हजार वर्ष अधिक, यांकी देव्यांकी जघन्य । पाव पल्यकी उत्कृष्टि ॥ आधी पल्य पांचसह वर्ष अधिक । ग्रहांकी ज० पाव पल्यकी उ० १ पल्यको यांकी देव्याकी ज० पाव पल्य उत्कृष्टि ॥ आधो पल्योपमकी ।

नक्षत्राकी ज० पाव पल्य उ० ॥ आधी पल्यकी यांकी देव्यांकी ज० पाव पल्य, उत्कृष्टि पाव पल्य जाभेरी ।

तारांकी ज० पल्यको आठमूं भाग उ० पाव पल्यकी यांकी देव्यांकी ज० अधपाव पल्य उत्कृष्टि अधपाव जाभेरी ।

वैमानिक देवतां की स्थिति ।

१ पहला देवलोक में ज० १ पल्योपम उत्कृष्टि २ सागर की, यांकी परिग्रहि देव्यांकी ज० १ पल्य उ० ७ पल्य, अपरिग्रहि देव्यांकी ज० १ पल्य उ० ५० पल्योपमकी ।

२ दूसरा देवलोक मे ज० १ पल्य जाभेरी उ० २ सागर जाभेरो, यांकी देव्यांकी ज० १ पल्य जाभेरी उ० परिग्रही को ६ पल्यकी अपरिग्रही की ५५ पल्योपम की ।

३ तीसरा देवलोकमे ज० २ सागर उ० ७ सागर की,

४ चोथा देवलोक की ज० २ सागर जाभेरी उत्कृष्टी ७ सागर जाभेरी ।

५ पांचवांकी ज० ७ सागर उ० १० सागरको ।

६ छट्टा देवलोक का देवतांकी ज० १० सागर उ० १४ सागर की ।

७ सातवां की ज० १४ उ० १७ सागर की ।

८ आठमां की ज० १७ उ० १८ सागर की ।

९ नवमां की ज० १८ उ० १९ सागरकी ।

१० दसमां की ज० १९ उ० २० सागरकी ।

११ इग्यारमां की ज० २० उ० २१ सागरकी ।

१२ बारवां की ज० २१ उ० २२ सागरकी ।

१३ पहिला ग्रैवेग की ज० २२ उ० २३ ।

१४ दूसरा ग्रैवेग की ज० २३ उ० २४ ।

१५ तीसरा ग्रैवेग की ज० २४ उ० २५ ।

१६ चोथा ग्रैवेग की ज० २५ उ० २६ ।

१७ पांचमां ग्रैवेग की ज० २६ उ० २७ ।

१८ छट्ठा ग्रैवेग की ज० २७ उ० २८ ।

१९ सातमां ग्रैवेग की ज० २८ उ० २९ ।

२० आठमां ग्रैवेग की ज० २९ उ० ३० ।

२१ नवमां ग्रैवेग की ज० ३० उ० ३१ ।

२२ विजय, १ विजयन्त, २ जयन्त ३ ।

२५ अपराजिता, ४ ए च्यार अनुत्तर वैमानकी ज० ३१ उ० ३३ सागर ।

२६ स्वार्थ सिद्धिका देवांकी ज० ३३ उ० ३३ सागर ।

नव लोकान्तिक देवतांकी स्थिति ८ सागरकी,

पांच स्थावरकी स्थिति ज० अंतर मुहूर्त्तकी उत्कृष्टि पृथ्वी कायकी २२ हजार वर्षकी, अप्पकाय की ७ हजार वर्षकी, तेउकायकी ३ दिन रातकी, वाउकायकी ३ हजार वर्षकी, वनस्पति कायकी १० हजार वर्ष की ।

तीन विकलेंद्री की ज० अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्टी बेइन्द्रीकी १२ वर्ष की, तेइन्द्रीकी ४९ दिन रातकी, चोइन्द्री की ६ महीनाकी । तिर्यंच पंचेन्द्री की ज० अंतर मुहूर्तकी उत्कृष्टी जलचर की १ कोड पूर्व की, थलचर सन्नीकी ३ पल्योपमकी असन्नीकी ८४ लाख वर्ष की, उरपुर सन्नीकी १ क्रोड पूर्व की असन्नीकी ५३ हजार वर्षकी, भुजपुर सन्नीकी क्रोड पूर्व की असन्नी की ४२ हजार वर्ष की, खेचर सन्नीकी पल्योपमके असंख्यात मूं भाग असन्नीकी७२ हजार वर्षकी । असन्नी मनुष्यकी ज०उ० अन्तर मुहूर्त की । सन्नी मनुष्य की स्थिति ।

५ भर्थ ५ एरभर्थका मनुष्यां की पहिलो आरो लागतां ३ पल्यकी उतरतां २ पल्यकी, दूसरो लागतां २ पल्यकी उतरतां १ पल्यकी, तीसरो लागतां १ पल्यकी उतरतां क्रोड पूर्व की, चौथो आरो लागतां क्रोड पूर्व की उतरतां १२५ वर्ष की पांचमूं लागतां १२५ वर्ष की उतरतां २० वर्ष की छट्टो लागतां २० वर्ष की उतरतां १६ वर्ष की । उतसर्पणी कालमे इमहिज चडती काहणी पांच महाविदेह खेत्रांकी जगन अन्तर मुहुरत उत्कृष्टि १ क्रोड पूर्वकी स्थिति ।

युगलियां की स्थिति

५ हेमवय ५ अरुणवयकां की जगनदेश उंणी एक पल्यकी उतकृष्टी १ पल्यकी ।

५ हरीवास ५ रम्यकवासकां की जगन देशउंणी दोय पल्यकी उतकृष्टी २ पल्यकी ।

५ देवकुरु ५ उत्तकुरुकां की जगनदेशउंणी तीन पल्यकी उतकृष्टी ३ पल्यकी ।

५६ अन्तर द्वीपका युगलियाकी पल्योपम को असंख्यात मूं भागकी ।

एक एक सिद्धांकी आदि नहीं अन्त नहीं एक एक की आदि छै पण अन्त नहीं ।

इति स्थिति द्वारम् ।

२२ मूं समोंह्या असमोंह्या द्वार ।

समोयातो समुदघात फोडी ताणावेजो करी मरे, असमोह्या बिना समुद्घाते गोलीका भडाकावत् मरे ।

२४ दंडकां का जीव दोनूं प्रकारका मर्ण करे । सिद्धामेमर्ण नहीं ।

इति समोह्या असमोह्या द्वारम् ।

२३ मूं चवन द्वार ।

६ नारकी आठमां देवलोक तांई का देवता पृथ्वी अप्य वनस्पति काय ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य में चवन दोय गतिकी मनुष्य तिर्यंच की।

नवमां देवलोक सें स्वार्थ सिद्ध तांई का देवता में चवन १ मनुष्यकी सातमी नारकी में तथा तेऊ वाऊमें चवन १ तिर्य॑च गतिकी।

गर्भेज मनुष्य तिर्य॑च, असन्नी तिर्य॑चपंचेन्द्रीमे चवन च्यारूं हीं गतिकी युगलियामें चवन १ देव गतिकी सिद्धां में चवन पावे नहीं।

इति चवन द्वारम्।

२४ मूं गतागति द्वार ।

पहिली सें छट्ठी नारकी तांई गति २ दंडक आगति २ दंडकांकी मनुष्य तिर्य॑च पंचेन्द्री,।

सातमीं नारकी की आगति २ दंडककी मनुष्य तिर्यंच पंचेंद्री की,गत एक तिर्यंचिकी जांणवी।

भवनपति वानव्य॑तर जोतषी पहिला दूजा देवलोक तथा पहिला किलविषी देवतांकी आगत २ दंडकां की (मनुष्य तिर्य॑च की) गति ५ दंडकां-की (तिर्य॑च मनुष्य पृथ्वी अप्य वनस्पतिकी)

तीजा देवलोक से आठमां देवलोक तांई गता गत २ दंडका को (मनुष्य तिर्यंच) नवमां देव-लोकसें स्वार्थ सिद्धि तांई गतागत १ मनुष्य को,

पृथ्वी अप्प वनस्पति कायकी आगत २३ दंड-कांकी (नारको टलो) गति १० दंडकांकी ५ स्थावर ३ विकलेन्द्री मनुष्य ६ तिर्यंच एवं १० को,

तेउ वाउकायमें आगत १० दंडकांकी, उपरवत् गति ९ दंडकांकी मनुष्य टल्यो; ३ विकलेंद्रीमें १० को आगत १० को गति उपर वत् ।

असन्नी तिर्यंच पंचेंद्री में आगति १० दंडकां को उपर वत् गति २२ दंडकांको जोतषी वैमानिक टल्यो ।

सन्नो तिर्यंच पंचेंद्रीमें आगति २४ को गति २४

असन्नी मनुष्य में आगत ८ दंडकांकी, पृथ्वी अप्प वनस्पति तीन विकलेंद्री मनुष्य तिर्यंच एवं ८ अनें गति १० दंडकांको उपरवत् ।

गर्भज मनुष्य में आगति २२ दंडकांको तेउ वाउ टल्यो, गति २४ दंडकांकी, ३० अकर्म भूमिका युगलियां में आगति २ दंडकांको मनुष्य तिर्यंच, गति १३ दंडकांकी १० तो भवनपति का वान-व्यंतर ११ जोतषी १२ वैमानिक १३ एवं ।

५६ अन्तर द्वीप का युगलिया में आगति २ दंडकां की उपरवत् गति ११ दंडकांकी १० तो भवनपति का १ वानव्यंतर को ११ ।

सिद्धांमे आगति मनुष्य की गति नहीं ।

इति गतागत द्वारम् ।

२५ मूं प्राण द्वार ।

७ नारको सर्व देवता गर्भज मनुष्य तिर्यंचमे प्राण १० दसूंही पावै, ५ स्थावरमे प्राण ४ पावै सपर्श इन्द्रीवल १ काया २ श्वासोश्वास ३ आउषो ४ एवं ।

वेइन्द्रीमे पावै ६ तेइन्द्री में पावै ७ चौरिन्द्री में पावै ८ प्राण ।

असन्नो मनुष्य में पावै ७॥

असन्नो तिर्यंच पंचेन्द्री में ९ मन टल्यो ।

१३ में गुणठाणे पावै ५ पांच इन्द्रियांका टल्या। १४ में गुणठाणे पावै१ आउषोवलप्राण सिद्धांमें प्राण पावै नहीं ।

इति प्राण द्वारम् ।

२६ मूं योग द्वार ।

नारकी देवता मनुष्य सन्नोतिर्यंच युगलिया में जोग पावै ३ मन वचन काय का ।

पांच स्थावर असन्नी मनुष्य में १ काया पावै ।

तीन विकलेन्द्री असन्नी पंचेन्द्रीमें जोग पावै २ वचन काया ।

केतला मनुष्य अयोगी होय सिद्धांमें जोग पावै नही ।

इति लघु दंडकम् ।

अथः प्रतिक्रमण ।

अर्थ सहित ।

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो
नमस्कार थावो श्री अरि- नमस्कार थावो श्री नमस्कार
हन्त भगवन्त ने सिद्ध भगवांन नें थावो

आयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए
श्री आचारज नमस्कार थावो श्री नमस्कार थावो
महाराज ने उपाध्याय महाराज नें लोक के विखे

सव्व साहुणं ।
सर्व साधु मुनिराजों ने ।

॥ अथ तिक्खुत्ता की पाटी ॥

* अर्थ सहित *

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमं
तीन वार दाहिणापा प्रदिक्षणा वंदना सत् नम
साथी देई कार करूं स्कार

सामी सक्कारेमी समाणेमी कल्लाणं मंगलं
करू' सत्कार देऊ सनमान करूं कल्याणकारी
मंगल कारी

देवयं चेईयं पज्जुवासामी मत्थएण वंदामि
धर्म देव चित्त प्रसन्न कारी ज्ञान वंत सेवना करूं मस्तके करी वंदना नमस्कार करूं

इच्छामि पडिक्कमिउ इरिया वहीया ये
इच्छूं, वांच्छूं प्रतिक्रमवोते निवर्त्तवो मार्ग नें विखे ज्यो

विराहणा ए गमणागमणे पाणक्कमणे
विराधना हुई होय जातां आतां प्राणी बेन्द्रीया दिनो आक्रमण करणूं ते बद्यणूं

बीयक्कमणे हरियक्कमणे उसा उत्तिंग पणग
बीजको दावणूं हरि लीलीको दावणूं ओसको कीडीका बिल नीलण फूलण

दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे जे
पाणी को मांटीका दावणो मकडी का जीव जाला मद्दंवो तो डयाहोय जो

मे जीवा विराहीया एगेंदिया बेईंदिया
में जीव विराध्यो होय एकेन्द्री जीव वेइन्द्री जीव

तेईंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया अभि
तेइन्द्री जीव चौइन्द्री जीव पंचइन्द्री जीव सनमुख

हया वत्तिया लेसिया संघाइया संघ
आताहण्या धूलसे रगड्या घातन कस्या संघट्ट
बरती करी ढक्यां

ट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया
कीया परिताप्या कीलामना उपजाई उपद्रव किया

ठाणा उट्ठाणं संकामिया जीवियाउ ववं
एक स्थानमे दूसरे स्थान पटक्या जीवत सें

रोविया तस्समिच्छामि दुकडं ॥ १ ॥
नांसकिया तेहनो मिच्छामि दूकड ।

॥ अथ तस्सुत्तरी ॥

तस्सउतरी करणेणं पायच्छित्त करणेणं
तेहनो उत्तर करवो प्रायश्चित् करवो
प्रधान

विसोही करणेणं विसल्ली करणेणं
विशुद्धि करवो सल्य रहित करवो

पावाणं कम्माणं निग्घाय णट्ठाए
पाप कर्म का नास करवा निमित

ठामि करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ
स्थिर करूँ छूँ काय उत्सर्ग इण मुजब
हुई येतलो विसेस

ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं
ऊँचास्वास नीचास्वास खासी छींक

जंभाइएणं उड्डुःयेणं वाय निसग्गेणं भमलीए
उवासी उकार अधोवायु भंवल
पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अङ्गसंचालेहिं
पित्तकर मूर्छा सुक्षमपणे शरीरको हालवो
सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं
सुक्षमपणें स्लेषमको संचाल सुक्षम द्रष्टी चलावो
एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराही
इत्यादिक यह आगार में ध्यान भागे नहीं वीराधना
उ हुज्ज मे काउस्सग्गं जाव अरिहं
नहीं होज्यो मनें काउसगते ध्यान जिहां तक अरि
ताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं नपारेमि
हन्त भगवन्तने नमस्कार करीने नहीं पारूँ
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं
तठातांई सरीरसें स्थानसे मोनकरी ध्यानकरी
अप्पाणं वोसरामि ॥ इति
आतमां नें पापथकी वोसराऊं

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोयगरे धम्म तित्थयरेजिणे
लोक के विखे उध्योतकारी धर्म तिर्थ करता जिन
अरिहन्ते कित्तइसं चउवीसंपि केवली
अरिहन्ताको कीर्ति करूं चोवीस वे केवली

उसभ मजियं च वंदे संभव मभिनंदगां च
ऋषभ अजित पुनः वंदू संभवनाथ अभिनन्दनजी पुनः

सुमइं च पउमप्पहं सुपासं जिगां च चंदप्पहं
सुमति पुन. पदम प्रभुः सुपार्श्व जिन पुनः चंदा प्रभू
नाथजी

वंदे सुविहिं च पुप्फदंतं सीयल सिज्जंस
वंदू सुविध पुनः दूसरो नाम सीतल श्रेयास
पुष्पद त

वासुपुज्जं च विमल मगां तंच जिगां धम्मं
वासुपुज्य पुनः विमलनाथ अनन्तनाथजिन धर्मनाथ

संतिं च वंदामि ३ कुंथु अरिहं च मल्लिं
शान्ति पुनः वंदू कुन्थु अरि पुनः मल्लिनाथ
नाथ नाथ

वंदे मुंगिसुव्वयं नमि जिगां च वंदामि
वंदू मुनिसुव्रत नमि जिन पुनः वंदू

रिट्ठनेमि पासं तह वद्धमागां च ४ एवं
अरिठनेम पार्श्वनाथ तथारूप वर्द्धमान पुनः वंदू यह

मये अभिथुया विहुय रयमला पहीगा जर
मैं स्तुति करी दूर किया कर्म रूप खीगभया जनम
रंजमैल

मरगा चउ वीसंपि जिगावरा तित्थ, यरा मे
मर्ण जीनाका एहवा चौवीस जिन राज तिर्थकर म्हारे पर

पसीयं तु ५ कित्तिय वंदिए महिया जे ये
प्रसनथावो कीर्तिकरी वंदू मोटा प्रते तेह ये
पुज्या ध्याया

लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरोग्ग वोहिलाभं
लोकके विखे उत्तम सिद्ध छै रोग रहित समकित्
बोध लाभ

समाहि वर मुत्तमं दिंतु ६ चंदेसु निम्मल
समाधि प्रधान उत्तम देवो चन्द्रमांथी निर्मल

यरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा सागर वर
घणां सूर्यथी अधिक प्रकास कारी समुद्र समान

गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ७
गंभीर एहवा सिद्ध सिद्धी मनैं देवो

॥ अथः नमोत्थुणं ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं
नमस्कार थावो अरिहन्त भगवंत नें धर्म की आदि
करता

तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं
तिर्थ करता बिना गुरू पोतै प्रति पुरुषामें उत्तम
बोध पाम्यां

पुरिष सिंहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरि
पुरुषांमें सिंह समान पुरुषां मै पुंडरिक पुरुषां
कमल समान में

सवर गंध हत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं
गंध हाथी समान लोक में उत्तम लोकका नाथ

लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोय गराणं
लोकमें हित कारी लोकमें प्रदीप समान लोकमें उद्योत कारी

अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं
अभय दान दाता ज्ञान चक्षु दायक सुमार्ग दायक शरण दायक

जीवदयाणं वोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेश
संजम जीत्व दायक वोध दायक धर्म दायक धर्म देशनां

याणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर
दायक धर्म का नायक धर्मका सारथी उत्तम धर्म कर

चाउरंत चक्कवट्टीणं दीवोताणं सरणगई पइठा
च्यार गतिका अंतकारी चक्रवर्ति समान दीपा समान शरणागत नैं

अप्पडिहय वरनाणं दंसणं धराणं विअट्टछउ
अप्रति हत प्रधानज्ञान दर्शन धारक निवर्त्यौ

माणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं
छदमस्थ जीत्या अने पणो दूजाने जीतावे पोते तीर्या दूसरानैं तारे

वुद्धाणं वोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वनूणं
पोते प्रति बोध पाम्या दूजाने प्रति बोधे कर्म थी मुकाव्या दुजाने मुकावे सर्वज्ञान

सव्वदरिसीणं सिवमयल मरुत्र मणंत
सर्व दर्शन कल्याणकारी अरुज अनन्त
अचल

मक्खय मव्वाबाह मप्पुणरावंती सिद्धिगई
अक्षय अव्याबाधि फिर आवे नहीं इसी सिद्धगति

नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं । इति ॥
नामवाला स्थान प्राप्त हुवा त्यां जिनेस्वरानें
नमस्कार थावो

अथ आवस्सही इछामिणं भंते ।

आवस्सही इच्छामिणं भंते तुब्भहिं अब्भणु
अवश्य इच्छूं छूं में हे भगवान तुम्हारी आज्ञाते

नायेसमाणे देवसी पडिक्कमणं ठाएमि देवसी
दिवस प्रति क्रमण करूं में दिवस
संबन्धी संबन्धी

ज्ञान दर्शन चारित्र तप अतिचार चिंतवनार्थं
ज्ञान दर्शन चारित्र तप अतिचार चिन्तवना के
अर्थे

करेमि काउस्सग्गं ॥
करूं छूं में काउसगते ध्यान

अथ इच्छामि ठामि काउसग्ग ।

इच्छामि ठामि काउसग्गं जों मे देवसिउ अइ
इच्छूं छूं ठाउं काउसग ज्यो में दिवसमें अति

चार कउ काईउ वाईउ माणसिउ उस्सुत्तो

चार कीनों शरीरमें वचन में मनसे भूंडा सूत्र

उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाउ दुव्वी

उन मार्ग अकल्पनीक नहीं करवा जोग दुर ध्यान खोटी

चिंतिउ अणायारो अणिच्छिअव्वो

चिन्तवना अणाचार नहीं इच्छवा जोग

असावगपाउग्गो नाणे तहदंसणे चरित्ताचरित्ते

श्रावक के नहीं कर ज्ञान दर्शन देश व्रत

या जोग पाप नें

व्रत भंगादि

सुये सामाइये तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं

श्रुत सामायक तीन गुप्ती च्यार कषाय

पंचण्हं मणुव्वयाणं तिण्हं गुणवयाणं चउण्हं

पांच अनुव्रत तीन गुण व्रत च्यार

सिक्खावयाणं बारस्स विहस्स सावग धम्मस्स

शिक्षा व्रत बार विधि श्रावक धर्म को

जं खंडियं जं विराहियं तस्समिच्छामि

ज्यो खंडिनाकरी ज्यो विराधना करी तेहनो मिच्छामि

दुक्कडं ॥

दुकडं

॥ अथ खमासमणो ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए

इच्छुं छुं, क्षमावन्त साधु वंदवा सचितादिकांडी निपाप शरीरपणे हुई निर्जरा अर्थे

निसीहियाए अणु जाणह मेमि उग्गहं निस्सही

शरीर करी आज्ञा देवो मुजें मर्यादा, अशुभ जोग

मांही निवर्त्त तो

अहो कायं कायसंफासं खमणिज्जो मे किलामो

चर्ण फर्सवाकी म्हांरी कायासे खमज्योजे भगवांन कीलामना

आज्ञा देवो तुमारा चर्ण

फरसता

अप्पकिलंताणं बहुशुभेण भे दिवसोवईक्कंतो

थोड़ी किलामना बहुत समाधि भावकर, दिवस वीत्यो

हुई हुवैते तुमारो

जत्ता भे जवणिज्जंचभे खामेमि खमासमणो

संयम रूप इन्द्रीनोइन्द्रीना आपकूं खमाऊं हे क्षमावंत

यात्राथी तुमारा, उपशम थकी छूं साधू

निरोग शरीर

देवसियं वइक्कमं आवसिआए पडिक्कमामि

दिवस सम्बंधी व्यतिक्रम अवश्य कारणी नां पडिकमूं छूं

अतिचार थकी

खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए

हे क्षमावंत श्रमण दिवस संबन्धी आसातना

तेतीसन्नयराए जं किंचिमिच्छाए मणदुक्कडाए

तेतीस मांहिलो ज्यो कोई किंचित् मिथ्या मनसें दुक्कत

क्रियाकरी किया

वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाय माणाए
वचन से दुकृत काया से दुकृत क्रोधथी मानथी
मायाए लोभाए सवकालियाए सव्वमिच्छोवयाए
माया कपट लोभकरी सर्व कालमें सर्व मिथ्याउप
चारक्रिया
सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिउ
सर्व धर्म क्रियाका एहवी आसातनाच्यो मे दिवस ने
उलंघन किया विषे
अइयार कउ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि
अति चार किया तेहनो हे क्षमावंत श्रमण निवर्तू छूं
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥
निन्दूं छूं गरहूं छूं आतमाथी वोसराउं छूं

अथः आगमें तिविहे पन्नत्ते।

आगमे तिविहे पन्नत्ते तंजहा सुत्तागमे
आगम तीन प्रकारे परूप्यो ते कहे छे सूत्र आगम
अत्थागमे तदुभयागमे ॥ एहवा श्रीज्ञान ने
अर्थ आगम सूत्र अर्थ दोनूं आगम
विषे अतिचार दोष लाग्या होय ते आलोउ—
जंवाइधं वच्चामेलियं हिनक्खरं अच्चक्खरं पयहीणं
जे कोई वचन मिलाया हीणअक्षर अधिक पद हीण
होय अक्षर

विणयहीणं जोगहिणं घोसहिणं सुट्ठुदिणं
विनय हिण ते मन वचन उच्चारण चोखो सूत्र
अविनय काया हीण दीनूं अवनीतने

दुट्ठुपडिच्छियं अकालेकउ सिज्झाउ काले
खोटा सूत्रकी इच्छा करी विनाकाले सभाय करी सोभा
अना

न कउसिज्झाउ असिज्झाए सिज्झाए सिज्झाए
कालमें सिभाय न करी असभाय में सिज्झाय करी सिज्झायमे

न सिज्झाए भणतां गुणतां चितारतां चोखतां ज्ञानको
सिज्झाय न करी

ज्ञानवंत की आशातनां करी होवे तस्समिच्छामिदुक्कडं।
तेहनो मिच्छामि दुक्कडं

अथः दंसणश्रीसमकित।

दंसणश्रीसमकित अरिहंतो महदेवो जावजीवं
सुधासरधना ते समकित, तेह अरिहन्त माहिरे, जाव जीव-
दर्शन देव लग

सुसाहुणो गुरुणो जिणपन्नतं तत्तं इयसम्मत्तं
शुद्ध साधू गुरु जिन परूप्यो धर्म ते तत्व यह समिकत

मए गहियं।
मैं ग्रहणकियो

एहवासमकितने विषें जे कोई अतिचार लाग्या होय ते आलोउं, जिन वचन सांचा न सरध्या होय, न प्रतित्याहोय, न रुच्या होय, पर दर्शणारी आकांषा वंछाकिवी होय, फल प्रतेसंमह संदेह आण्यो होय, पर पाखंडी की प्रसंशा करी हुवे सास्तो परिचय कीधो होय। एहवाश्री समकित रूपी रत्न उपरे मित्थ्यात्व रूप रंज मैल खेह लागी होय तस्समिच्छामि दुक्कडं।

अथः वारे व्रत ॥

पहले अणुव्रत	थूलाउ	पाणाइवायाउ
प्रथम हेगथी व्रत	मोटको	प्राणाति पात को

विरमणं, व्रत पांच वोले करी उलखीजे, द्रव्यथकी

निवर्तवो व्रत

त्रस जीव वेइंद्री तेइंद्री चउरिन्द्री पंचेन्द्री विन अपराधे आकुटी हणवानी विधी करीनें स उपयोग हणु नहीं हणाउ नहीं मनसा वायसा कायसा ॥ द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, खेत्रथकी सर्व खेत्रां मांहि कालथकी जावजीवलग, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे

पहला व्रतनें विखें जे कोई अतिचार दोष लागो होय ते आलोउं ।

त्रस जीवनें गाढे बंधन बांध्या होय १ गाढा घाव घाल्या होय २ चामडी छेदन किया होय ३ अति भार घाल्या होय ४ भात पाणीनां विच्छोहाकीनां होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

दुजो अणुव्रत थूलाउ मूसावायाओ विरमणं
बीजो अणू व्रत स्थुलथी झूंट बोलवा निवर्त वो

पांचें बोलें करि ओलखीजे द्रव्यथकी कनालिक १
कन्याके ताईं झूठ

गोवालिक २ गाय भैंसादि कारण झूँट
भौमालिक ३ भुंमि निमित झूँट
थापण मोसो ४ लेकर नटवो
कूडीसाख ५ झूटी साखी

इत्यादिक मोटको झूंट मर्याद उपरांत बोलूं नहीं बोलाउं नहीं मणसा वायसा कायसा, द्रव्यथकी एही ज द्रव्य, खेत्रथकी सर्व खेत्रमें कालथकी जाव जीव लगे, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारै दूजा व्रत्नै विखें जे कोइ अतिचार दोष लागा होय ते आलाऊँ ।

किणी प्रते कूडो आलदियो होय १

रहस्य क्रानी वात प्रगट करी होय २
स्त्री पुरुषनां मर्म प्रकास्या होय ३
मृषा उपदेश दिधो होय ४
कूडो लेख लिख्यो होय ५ तस्म मिच्छामि दुक्कडं॥

तीजे अणुव्रत थूलाउ अदिन्न दाणाउ विरमणं
तीजो अणु व्रत स्थूलथकी अणदीयो लेवो ते चोरीको निवर्तवो

पांचे बोलि करी ओलखोजे द्रव्यथकी खातखणी गांठखोल्नो तालो पडकूंचीकरी वाटपाडो पडीवस्तु मोटकी मधणियां सहित जांणी इत्यादिक मोटकीचोरी मर्याद उपरांत करू नही कराउं नही मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, खेत्रथकी सर्व खेत्रां मे, कालथकी जाव जीवलगें, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथकी सम्बर निर्जरा एहवा म्हारे तीजाव्रतमे ज्यो कोई अति-चार लागी होय ते आलोउ

चोरकी चुराई वस्तु लीधि होय १ चोरने सहाय दीधो होय २ राज विरुद्ध व्योपार किधो होय ३ कूडा तोला कूडामापा कियाहोय ४ वस्तु मे भे लसभेल किधो होय ५ सखरी दिखाय नखरी आपी होय तस्म मिच्छामि दुक्कडं ।

इति ।

चौथे अणुव्रत थूलाउ मेहुणाउ विरमणं
चौथो अणु व्रत स्थूलथकी मैथुनथकी निवर्तवो

पांचा बोलांकरी उलखिजे द्रव्यथकी तो देवता देवां-गनां सम्बन्धिया मैथुन सेवूं नहीं सेवावूं नही तिर्यंच तिर्यंचणी सम्बन्धी मैथुन सेवूं नहीं सेवावूं नही मनुष्य सम्बन्धी मैथुन सेवूं नहीं सेवावूं नही, मनु-ष्यणी सम्बन्धी मैथुन सेवाकी मर्याद कीधि छे तिण उपरांत सेवूं नहीं सेवावूं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्यथकी एहिज द्रव्य खेत्रथकी सर्व खेत्रमे कालथको जावजीव लगे, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथको संवर निर्जरा एहवा म्हारे चौथा व्रतमें ज्यों अतिचार दोष लागो होय ते आलोउ

थोड़ा कालकी राखी परिग्रही सुं गमन कीधो होय १ अपरिग्रही सूगमन कीधो होय २ अनेक क्रिडा कीधो होय ३ परायानाता विवाह जोड्या होय ४ काम भोग तिव्र अभिलाषासें सेव्या होय ५

तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति।

पंचमे अणुव्रत थूलाउ परिग्गहाउ विरमणं
पांचमूं अणुव्रत स्थूलथकी परिग्रहते धनको निवर्तवो
पांचां वोलां करी ऊलखिजे द्रव्यथकी खेतु
उघाडी जमीन
वत्थु यथा प्रमाण हिरण सुवर्ण यथा प्रमाण
ढकी जमीन जेह प्रमाण कीधो चादी सोनाको जे प्रमाण कीधो
धन धांन यथा प्रमाण द्विपद चउप्पद यथा प्रमाण
द्रव्य नाजनो जेह प्रमाण कीधो दासदासी हाथी घोडा, जे प्रमाण
टिक चोपद कीधो
कुंभो धातु यथा प्रमाण।
तांबो पीतल लोहादि नो जेह प्रमाण

द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, खेत्रथकी सर्व खेत्रांमे कालथकी जावजीव लगे, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथको संवर निर्जरा एहवा म्हांरा पांचवां अणु व्रतमे ज्यों अतिचार लागा होय ते आलोउं, खेत्तु वत्थुरो प्रमाण अति क्रम्यू होय १ हिरन्य सुवर्णरो प्रमाण अति क्रम्यू होय २ धन धांनरो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ३ द्विपद चउपदरो प्रमाण अतिक्रम्युं होय ४ कुम्भी धातुरो प्रमांण अतिक्रम्युं होय तस्समिच्छामि दूक्कडं।

इति।

छट्ठो दिशि ब्रत पांचां बोलां ओलखिजे द्रव्य थकी तो उंची दिशारो यथा प्रमाण, नीची दिशारो यथा प्रमाण, तिरछी दिशारो यथा प्रमाण, यां दिशारो प्रमाण कीधोतेह उपरान्ति जायकर पंच आश्रव द्वार सेऊँ नही सेवाउँ नही मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी तो येहिज द्रव्य खेत्रथी सर्व खित्रां मैं कालथकी जाव जीवलग भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा मांहरे छट्ठा ब्रतके विषे जे कोई अतिचार दोषलागो हुवे ते आलोउं।

उंचो दिशारो प्रमाण अति क्रम्यो होय १
नीचौं दिशारो प्रमाण अति क्रम्यो होय २
तिरछी दिशारो प्रमाण अति क्रम्यो होय ३
एक दिशा घटाई होय एक दिशा वधाई होय ४
पंथमें आघो संदेह सहित चाल्यो चलायो होय ५
तस्स मिच्छामि दूक्कडं।

इति।

सातमूं उपभोग परिभोग ब्रत पांचा बोलांकरी ओलखिजे, द्रव्यथकी छब्बीस बोलांकी मरयाद ते कहै छै

उलणीयां विहं १ दंतणविहं २ फल विहं ३
अंग पूछणादि विधि दांतण विधि फल विधि

अभिंगण विहं ४ उवट्टण विहं ५ मंजण विहं ६
तेलाभिंगादि तेल मालिस — उवटणादि की विधि — स्नानकी विधि

वत्थ विहं ७ विलेवण विहं ८ पुप्फ विहं ९
वस्त्र विधि — विलेपन विधि — पुष्प विधि

आभरण विहं १० धूप विहं ११ पेज विहं १२
गहणा पहरवा विधि — धूपकी विधि — दूध आदि पीवाकी विधि

भक्खण विहं १३ उदन विहं १४ सूप विहं १५
सूखडी आदि भक्षण की विधि — चावल की विधि — दालकी विधि

विगय विहं १६ साग विहं १७ महुर विहं १८
विगयकी विधि — सागकी विधि — मधुर तथा केलादि फल

जीमण विहं १९ पाणी विहं २० मुखवास विहं २१
जीमणकी विधि — पाणींकी विधि — मुखवास तांबूलादि की विधि

वाहण विहं २२ सयण विहं २३ पन्नी विहं २४
गाडी प्रमुखकी विधि — सोवाकी विधि पाटा कुरसी आदिपर — पगरखी की विधि

सचित्त विहं २५ द्रव विहं २६
सचित्त की विधि — द्रव्यकी विधि

ए छावीस बोलांकी मर्याद करी, जिण उपरान्ति भोगऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्यथकी यहिज द्रव्य, खेतथकी सर्व खेतांमें, कालथकी जाव

जीवलग, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित गुणथकी सम्बर निर्जरा, ए ह्वा मांहरा सातमां व्रत के विषि जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोऊं पच्चखाणां उपरान्त सचित्तरो आहार किनो होय १ पच्चखाणां उपरान्त द्रव्यरो आहार किनो होय २ पच्चखाणां उपरान्त गहिणां अधिकापहरया होय ॥ ॥ ३ ॥ पच्चखाणां उपरान्त कपड़ा अधिका पहरया होय ॥ ४ ॥
पच्चखाणां उपरान्त उपभोग परिभोग अधिका भोग्या होय। तस्स मिच्छामि दुक्कड।

पंद्रेकरमां दान जांणवा जोग छै पण आदरवा जोग नहीं ते कहै छै।

इंगालकम्मे १	वणकम्मे २	साडीकम्मे ३
अग्नि करी लुहारादि कर्म	वन कर्म ते बनमें घास, दरखतादि काटवो	सकट कर्म ते गाडीप्रमुखनो कर्म
भाडी कम्मे ४	फोडी कम्मे ५	दन्तवाणिज्जे ६
भाडा कर्म	नूपादि कर्म ते नारेल सुपारी पत्थर आदि फोडवो	दातको विणज ते व्योपार
लख्खवाणिज्जें ७	रसवाणिज्जे ८	केसवाणिज्जे ९
लाखको वाणिज्य	रस व्यापार ते घी, तैल सेतादि	बाल चमरादि व्योपार

विषवाणिज्जे १०   जन्तु पिलणीयां कम्मे ११
जहरको व्यापार   कल घाणी प्रमुख व्यापार
निलञ्छणीयां कम्मे १२ दवगीदावणीयां कम्मे १३
कसी वधियादि कर्म ते   दावानलदेवो कर्म
न्यानवरांने बाधी कर्म
सर द्रह तलाव सोषणीयां कम्मे १४ असंजइ
सरोवर द्रह तलाव सोसाया ते कर्म   असंजतीनें
पोषणीयां कम्मे १५ ॥ इति ॥
पोखावा नों कर्म

ए पन्दरे कर्मादान मर्याद उपरान्ति सेया सेवाया होय तस्स मिच्छामि दूक्कडं ॥   ॥ इति ॥

आठलूं अनर्थ दंड विरमण व्रत पांचा बोलांकरी उलखिजे, द्रव्यथकी अवज्झाणचरियं १
भूंडा ध्यान नो आचरवो
पम्माय चरियं २ हंसपयाणं ३ पावकम्मोवएसं ४
प्रमाद करवो   प्राण हिन्सा   पाप कर्मको उपदेश

ए च्यार प्रकारे अनरथ दंड आठ प्रकारका आगार उपरान्त सेउं नहीं ते कहें छे।

आएहिउवा १ नाएहिउवा २ आघारिहिउवा ३
आपणे हित   न्यातिके हित   घरके हित
परिवारहिउवा ४ मित्तहिउवा ५ नागहिउवा ६
परिवार के हित   मित्रके हित   नाग देवता निमित्त

भूतहिउवा ७ जख्खहिउवा ८
भूत देवता जच्छ देवता
निमित्त निमित्त

द्रव्यथकी येहिज द्रव्य खेत्रथकी सर्व खेत्रामें कालथकी जाव जीव लग, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी सम्वर निर्जरा, यहवा म्हांरा आठमां व्रत के विखे जे कोई अतिचार दोष लागोहुवे ते आलोउं ।

कांदर्प्प नी कथा कीधी होय १ भंडकुचेष्टा कीधीहोय२
काम क्रिडाकी कथा को करवो भांडनीपरै कुचेष्टाकरि होय
मुखसें अरि वचन बोल्या होय ३ अधिकारण
मुखसे खोटा बचन बोल्या होय नाताजोडकर
जोड मुकाया होय ४ उपभोग परिभोग
तुडाया तथा स्त्री भरतार एकवार भोग, वारंवार भोग
नो विरह कीयो में आवे ते में आवे ते
अधिका भोगव्या होय ५ तस्स मिच्छामि दूकडं
मर्याद उपरात अधिक तो मिच्छामि दुक्कडं
भोग्या होय ते

इति ।

नवमो सामायक व्रत पांचां बोलांकरी ओलखिजे
करेमि भन्ते सामाईयं सावज्जं जोगं पच्चखामी
करूं छूं मैं हे भगवंत सामायक सावध जोग पच्च खाण
जाव नियम (महुरत एक) पज्जवासामी दुविहेणं
यावत नियम एक महुर्त ते सेऊं छूं दोय कर्ण
दोय घडी

तिविहेणं नकरेमी नकारवेमि मनसा वायसा
तीन जोग नहीं करूं नहीं कराऊं मनसें वचन से
कायसा तसभंत्ते पडिक्कमामि निन्दामी गरिहामी
शरीरसें तिणसूं हे भगवान पडिक मूं छूं, निन्दूं छूं, ग्रहणा ते निपेदूं छूं,
अप्पाणं वोसरामि ॥
पाप से आतमानेंवोसराऊं छूं,

द्रव्यथकी कनैराख्या ते द्रव्य खेत्रथकी सर्व खेतामें कालथकी एक महुरत तांई भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा एहवा नवमां व्रतके विखे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोउं ।

मन वचन कायाका साठा जोग प्रवर्ताया होय१ पाडवा ध्यान प्रवर्ताया होय २ सामायक मे समता नहीं करिहोय ३ अण पूगी पारी होय ४ पारवो विसाख्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दूकडं ।

इति ।

दसमों देशाविगासी व्रत पांचां वोलांकरी ओलखिजे द्रव्यथकी दिन प्रते प्रभातथी प्रारंभीनें पुर्वादि छव दिसिरी मर्याद करी तिण उपरान्ति जाई पांच आश्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाउं नही तथा जेतली भोमिका आघार राख्या तिणमे द्रव्यादिकरी मर्याद

करी जिण उपरान्ति सेउं नहीं सेवाउं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी यहिज द्रव्य खेत्रथकी सर्व खेत्रांमें कालथकी जेतलो काल राख्यो भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हांरे दसमा व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोष लागोतै आलोउं

नवों भूमिका बारली वस्तु अणाई होवे १ मुकलाई होवे २ शब्दकरी आपो जणायो होय ३ रूप-देखाड़ आपो जणायो होय ४ पुद्गल नाखी आपो जणायो होय तस्स मिच्छामि दोकडं ।

इति ।

इग्यारमूं पोषद व्रत पांचां बोलांकरि ओलखिजे द्रव्यथकी ।

असण पाण खादिम स्वादिमनां पच्चखांण
आहार पाणी मेवादिक पान सुपारीदिक को पचखाण
अवम्भनां पच्चखाण उमकामणी सुवन्ननां पच्चखाण
मैथुन सेवाका त्याग वोसरायो हुयो रत्न सोनाका
माला वणग विलेवन नां पच्चखान
पुष्पमाला गुलाल रंगादि चंदनादिक नो विलेपनका त्याग
सस्थ मुसलादि सावज्भ जोगरा पच्चखाण
सस्त्र मूसलादिक सावध जोगका पचखान
इत्यादि पच्चखाण, कने द्रव्यराख्या जिण उपरान्ति

पंच आश्रव द्वार सेउं नही सेवाऊं नही मनसा वायसा कायसा द्रव्यथी यहिज द्रव्य खेत्रथी सर्व खेत्रमे कालथको (दिवस) अहो रात्रि प्रमाण भाव थको राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हारे इग्यारमां व्रतके विखे जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोउं।

सेज्जा संथारो अपडिलेहाहोय दुपडिलेहा
सोवाको जगा बिसतरो पडि लेहा नहीं होय आछीतरें नहीं
होय १ अप्रमार्ज्या होय दुप्रमार्ज्या होय २
पडलेह नही प्रमार्ज्या आछीतरे नही प्रमार्ज्या
नाकरी

उच्चारपास वणरी भूमिका अपडि लेही होय दुपडि
छोटी बडी नितकी जमीन नहीं पडिलेही होय अथवा
लेही होय ३ अप्रमार्जी होय दुप्रमार्जी होय ४
पोसहमे निन्दा विकथा कषाय प्रमादकरी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

इति।

बारमूं अतिथि संविभाग व्रत पांचां बोलांकरी ओलखिजे द्रव्यथकी।

समणे निग्गंथे फासू एषणीज्जेणं असणं १
श्रमण निग्रंथ नें फासुक निर्दोष आहार
अचित

पाणं २ खादिमं ३ स्वादिमं ४ वत्थ ५ पडिग्गह ६
पांणी मेवो लोंग सुपारी आदि वस्त्र पात्रो

कांबलं ७ पाय पुच्छणं ८ पाडियारा ६ पीढ
कांबलो पग पूंछणों जाचीनें पाछा पाट
भोलाव ते

फलग १० सिज्या ११ संथारो १२ ओषद १३
बाजोटादि जमीन जगां तृणादिक १ दवाई

भेषद १४ पडिलाभमोणे विहरामि ॥
चूर्णादि प्रतिलाभ तो थको विचरूं
घणीं मिली

इत्यादिक चौदे प्रकारनूं दांन शुद्ध साधूनें देउं देवाउं देवतां प्रतेभलो जाणूं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी यहिज कलपतो द्रव्य, खेतथकी कलपे तके खेतमे, कालथकी कलपै जिन कालमें, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थको संवर निर्जरा, एहवा म्हारा बारमां व्रत के विखे जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोउं सूजती वस्तु सचित पर मेली होय १ सचित्तथी ढांकी होय २ काल अतिक्रम्यो होय ३ आपणी वस्तु पारकी पारकी वस्तु आपणी किधी होय ४ भाणें बैठ साधू सा-ध्वीयांकी भावनां नहीं भावी होय तो मिच्छामि दुकडं।

इति।

अथः संलेखणा की पाटी ।

इह लोगा संसह पउगो १ परलोगासंसह
यह लोककी जसकी तथा पर लोकमें सुखकी
इष्यादिक की इच्छा
पउगो २ जीविया संसह पउगो ३ मर्णांउ संसह
वंछा जीवत की इच्छा मरण की
पउगो ४ काम भोगा संसहप्पउगो ५ मामु
इच्छा काम भोगकी इच्छा ए मुजनें
ज्हुज्ज् मरणान्तें ।
मर्णान्त तक मत होज्यो । ॥ इति ॥

अथ अठारे पाप ।

प्राणातिपाप १ मृषावाद २ अदत्ता दान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अवाख्यान १३ पिसुन १४ पर परिवाद १५ रति अरति १६ माया मुसो १७ मिथ्या दर्शन सल्य । इति

तस्स सव्वस देवसी यस्स आयारस्स दुचिन्तियं दुभाषियं
ते सर्व दिवसमें अतिचार खोटी चिन्तवना खोटी भाषा
दुचिट्ठीयं आलो यंते पडिक्कमामि निंदामि
खोटी चेष्टा कायाकी आलोउ तेह पडिक्कमेंउ निन्दू
गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥
गरहणा करूं पाप कर्मथी आतमा नें वोसराउं

॥ इति ॥

अथः तस्सधम्मस ।

तस्स धम्मस केवली पन्नत्तस्स अभुट्ठ एमि
तेह धर्म केवली परूप्यो तेने विषे उठ्यो छं

आराहणाए विरआमि विराहणाए सव्वेतिविहेणं
आराधन निमित्त निवर्तूं छुं वीराधनाथी अतिचार सर्वं
त्रिविध करी

पडिक्कंतो, बंदामि जिन चौवीसं ॥
पडिकमूं छुं वांदूं छं जिन राज चौवीस ।

इति ।

अथः मंगलिक ।

चत्तारि मंगलं अरिहन्ता मंगलं सिद्धा मंगलं
च्यार मंगलिक अरिहन्त मंगल छै सिद्ध मंगलकारि छै

साहू मंगलं केवली पन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥
साधू मंगल केवली पन्नतो धर्म ते मंगल

चत्तारिलोग उत्तमा अरिहन्ता लोग उत्तमा
ए च्यार लोकमें उत्तम जाणवा अरिहन्त लोकमें उत्तम

सिद्धा लोग उत्तमा साहूलोग उत्तमा केवली
ए सिद्ध लोकमें उत्तम साधू लोकमें उत्तम केवली

पन्नत्तो धम्मो लोग उत्तमा चत्तारि शरणं
परूप्यो धर्म ते लोक मे उत्तम च्यार शरणां

पवज्जामि अरिहन्ता शरनं पवज्जामि सिद्धा
ग्रहणकरूं अरिहन्तों का शरणा ग्रहण करता हूं सिद्धाका
शरणं पवज्जामि साहू शरणं पवज्जामि केवली
शरणं लेता हूं साधूका शरणहै केवली
पन्नत्तो धम्मो शरणं पवज्जामि। च्यारों शरणा
प्ररूपित धर्म का शरण ग्रहण करता हूँ
एमगा अवर न मगो कोय जे भव प्राणी आदरे
अक्षय अमर पद होय।

इति।

अथ देवसी प्रायश्चित।

देवसी प्रायश्चित विसोद्धनार्थं करेमि काउस्सगं
दिवसनो प्रायश्चित सुद्ध करवाने अर्थे करूंछुं काउस्सग

॥ इति प्रतिक्रमणं ॥

अथः पडिक्रमणां करनें की विधि।

प्रथम चौवीस्थो करणो जिणामें

१ इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी। २ तस्सुत्तरीकी पाटी। ध्यानमें इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी मनमें चितारकर एक नवकार गुणनों। ३ लोगस्सउज्जोगरे की पाटी। ४ नमोथुणं की पाटी।

१ प्रथम आवसग्ग सामाईक में।

१ आवस्सई इच्छामिणं भंते।

२ नवकार एक।

३ करेमि भंते सामाईयं ।

४ इच्छामिठामी काउसग्गं ।

५ तस्सुत्तरी की पाटी ।

ध्यांनमें ६८ नन्नाणमें अतिचार ।

आगमें तिविहे पन्नंते की पाटी तिणमें ज्ञानका चवदे अतिचार ।

दंसण श्रीसमत्ते की पाटी तिणमें समकितका ५ अतिचार

वारे व्रतांका अतिचार ६० साठ तथा १५ पंदरे कर्मदान ।

यह लोग सह सपउग्गकी पाटी अतिचार ५ सलेखणांका ।

अठारे पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामि आलिउ जो मैं देवसी आयारकउ ए पाटी कहणी ।

एक नवकार कह पारलेणो ।

॥ इति प्रथम आवसग समाप्त ॥

दूसरा आवस्सगकी आज्ञा ।

लोगस्सकी पाटी ।

॥ इति दूजो आवस्सग समाप्त ॥

तीजा आवस्सगकी आज्ञा ।

दोय खमा समणां कहणा ।

॥ तीजो आवस्सग समाप्त ॥

चौथा आवस्सगकी आज्ञा ।

उभाथकां ध्यानमे कह्या सो प्रगट कहणा ।

८ आठ पाटी बैठाथकां कहणी जिणांकी विगत ।

१ तस्स सव्वस्सकी पाटी ।

२ एक नवकार ।

३ करेमि भंते सामाईयं की पाटी ।

४ चत्तारि मंगलकी पाटी ।

५ इच्छामि ठामी पडिक्कमेउ जो मैं देवसी ।

६ इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी ।

७ आगमे तिविहे की पाटी ।

८ दंसण श्री समकीत्तकी पाटी ।

ये आठ पाटी कही, बारे ब्रत अतिचार सहित कहणा ।

पांच संलेखणा का अतिचार कहणा ।

अठारे पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामी पडिक्कमेउ जो मैं देवसीकी पाटी कहणी तस्स धम्मस केवली पन्नतस्सकी पाटी, दोय खमासमणां कहणां ।

पांच पदांकी वंदना कहणी ।

सातलाख पृथ्वीकाय सातलाख अप्पकाय इत्यादि खमत खामणांकी पाटी ।

॥ चौथो आवस्सग समाप्त ॥

पंचमा आवसग्गकी आज्ञालई कहैं ।

१ देवसी प्रायश्चित् विसोद्धनार्थं करेमिकाउसग्गं ।

२ एक नवकार ।

३ करेमिभंते सामाईयं की पाटी ।

४ इच्छामि ठामि काउसग्गंकी पाटी ।

५ तस्सुतरीको पाटी ।

ध्यानमें लोगस्स कहणांकी परमपराय रीतिसे ।

प्रभाते तथा सांझ वक्त ४ च्यार लोगस्सको ध्यान

पखीनें १२ बारे लोगस्सको ध्यान ।

चौमासी पखी नें २० वीस लोगस्सको ध्यांन समत्सरीने ४० चालीस लोगस्सको ध्यांन ।

ध्यान पारी लोगस्सकी एक पाटी प्रगट कहणी ।

२ दोय खमासमणां कहणा ।

॥ इति पंचमूं आवसग्ग समाप्त ।

छट्ठा आवसग्गकी आज्ञालेई कहणा तेहनी बिगत ।

गयेकालनूं पडिक्कमणों वर्तमान कालमें समता

भागमें कालका पच्चखाण यथा सत्ति करणां ।

सामाई १ चौवीस्थो २ वंदना ३ पडिक्कमणो ४ काउसग्ग ५ पच्चखाण ६ यां छऊं आवसगां में ऊंची निची हिणी अधिक पाटी कही होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

दोय नमोत्थुणं कहणां जिणमे पहिला में तो सिद्धगई नाम धेयं ठाणं संपताणं नमो जिणाणं दूजा नमोत्थुणं में सिद्धगई नाम धेयं ठाणं संपविकामी नमो जिणाणं ।
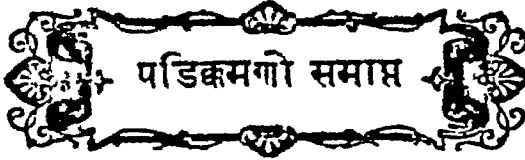
पडिक्कमणो समाप्त

मल्लमलजी स्वामीकृत

छन्द त्रोटक

सवबाहुंजसि रिभवारमुनि, दुतिदिपरही कहैदेवदुनि ।
सुरभित होतधनाढ्यमही, गुरुदेवकृपासमएक नहीं ।।

अथःजिन आज्ञा ओळखावणको चौढालियो

दुहा ॥ केइ पाषंडि जैनरा। साधुनांम धराय ॥ तेपापकहै जिनआज्ञामभे। कुडाकुहेतलगाय ॥ १ ॥ आहारपांणी साधु भोगवे। तेश्रीजिन आज्ञासहित ॥ तिणमे प्रमादने अव्रतकहै। त्यांरी सरधाघणी विपरीत ॥ २ ॥ वले वस्त्र पात्र कांमलो। इत्यादिक उपध अनेक ॥ तेजिन आज्ञास्युं भोगवे। तिणमें पापकहै ते विना विवेक ॥ ३ ॥ त्यांश्री जिनधर्म नही ओलख्यो। जिन आज्ञापिण ओलखी नांह ॥ तिणस्युं अनेक बोलांतणो पापकहै। जिन आज्ञारेमांह ॥ ४ ॥ कहै नदी उतरे तिण साधुने। आज्ञादेजिन आप ॥ आ प्रतक्ष हिन्सादेखल्यो। आज्ञाछै तोपिणपाप ॥ ५ ॥ इत्यादिक अनेक बोलांमभे। आज्ञादेजिनराय ॥ जठै हिंसाहोवेछैजीवरी। तठै पापलागेछैआय ॥ ६ ॥ इम-कहीनेजिनआज्ञामभे। थापेपापएकंत ॥ हिवेओल-खाऊं जिनआगन्यां। तेसुणज्योमतिवंत ॥ ७ ॥

※ ढाल पहली ※

(भवियण सेवोरे साधसयाणाएदेशी ।)

जे जे कारज जिन आज्ञासहितछै। तेउपयोग सहितकरेकोय ॥ तेकारजकरतां घातहोवेजिवारी। तिणरोसाधुने पाप नहोयरे ॥ भवियणजिनआगन्यांसुखकारी ॥ १ ॥ जीवांतणोघात हुइ साधुथी। त्यांरोसाधुने पाप न लागे ॥ जिनआगन्यां पिणलोपी न कहिजे। वले साधुरोव्रतने भागेरे ॥ २ ॥ आइचर्यवाली वात उघाडी। काचांरेहिये कीमसमावे ॥ जांजिनआग्या उलखी नही पूरी। ते जिन आग्यासेपापवतावेरे ॥ ३ ॥ नदी उतरे जव सुधसाधुने। आग्यादेश्रीजिन आप ॥ जोउनदी उतरतां पापहोवेतो। आग्या दे त्यांने पिणपापरे ॥ ४ ॥ छदमस्थ साधु नदीउतरे जव। त्याने केवली आज्ञा दे सोय ॥ पोतेपिण केवली नदीउतरेछै। पाप हुसीतोदोयां नेहोयरे॥५॥ जे नदी उतरेछै केवलज्ञांनी। त्यांने पापने लागे लिगार ॥ तो छदमस्थने पाप किण विधलागे। आं दोयांरो एक आचाररे ॥ ६ ॥ छदमस्तने केवली नदीउतरेजव। दोयांसु, होवे जीवांरी घात ॥ जो जीवमुवा त्यांरो पापलागेतो। दोयांने लागे प्राणातिपातरे॥७॥ केवल

ज्ञांनी नदीउतरे त्यानें पाप न लागेकोय। तो छद-मस्थ साधु नदीउतरे जब। त्यांने पिण पाप न होयरे ॥ ८ ॥ कोइ कहै केवलीने तो पाप न लागे। नदी उतरतां जोगरहै सुध ॥ पिण छदमस्थने पाप लागे नदीरो। आप्रतच्चबात विरुधरे ॥ ६ ॥ जिण विध केवली नदी उतरे जिम। छदमस्थ जो उतरे नांहिं ॥ तो खामो छै तिणरे इर्या सुमतिमें। पिणखामी नहीं कर्तव्य मांहिरे ॥१०॥ तेखामि पड़ेते अज्ञांण पणोछै। इरिया वहि पडिक्कमणी थाप। वले इधको खांमि जाणे इर्या सुमतिमें। तो प्राश्चित ले उतारे पापरे ॥ ११ ॥ साधु छदमस्थ नदि उतरेते कर्तव्य। सावज म जाणोकोय ॥ जो सावजहोवेतो संजम भांगे। विराधक रीपांत होयरे ॥ १२ ॥ आगे नदी उतरतां अनन्त साधाने उपनोछै केवलज्ञांन ॥ त्यांनदी मांहि आउषो पूरो-करीने। पोंहता पंचमीगति प्रधांनरे ॥ १३ ॥ केइ कहैं साधुनदी उतरे त्यांरे। इतरी हिन्सारोछै आगार ॥ तिणरो पाप लागे पिणव्रत न भांगे। इमकहैते मुढ़ गिवाररे ॥ १४ ॥ जो साधुरे हिंसारो आगार होवेतो। नदी उतरतां मोचन जावे ॥ हिन्सारो आगारने पाप लागे जब। चौवदमी गुणठाणों न

आवेरे ॥ १५ ॥ कोइ कहै नदी उतरे जव साधुने ।
लागे असंख्य हिन्सा परिहार ॥ तिणरो प्राश्चित लियां
विनसुध नही छै । इम कहै तिणरे हिय छै अंधाररे
॥ १६ ॥ जो नदि उतर्यांरो प्राश्चित विनलीधां । ते
साधु सुध नही थावे ॥ तो नदी मांहि साधु मरे ते
असुध छै । ते मोक्षमांहि क्युंकर जावेरे ॥ १७ ॥
साधु नदी उतर्यां मांहि दोष हुवे तो । जिन आगन्यां
देनाहीं ॥ जिन आगन्यां दे तिहां पाप नही छै ।
थे सोच देखो मनमांहिरे ॥ १८ ॥ नदी उतरे त्यारो
ध्यान किसो छै किसी लेस्या किसा परिणाम ॥
जोग किसा अध्यवसाय किसा छै । भलाभुंडा पिछाणों
तांमरे ॥ १९ ॥ एपांचुं भलाछै तो जिन आज्ञाछै ॥ माठामे
जिन आज्ञा न कोय ॥ पांचुंमाठास्युं तो पाप लागेछै ।
पांचु भलास्युं पाप न होयरे ॥ २० ॥ छद्मस्थने
केवली नदी उतरे जव । लारे छद्मस्थ केवली आगे ॥
छद्मस्थ उतरे छै केवलीरी आज्ञास्युं । त्यांने पाप
किसे लेखे लागेरे ॥ २१ ॥ जिन सांसणच्यार तिर्थ
माहिं । जिन आगन्यां छै मोटी ॥ कोइ जिन
आगन्यां माहिं पाप वतावे । तिणरी सरधा छै
खोटीरे ॥ २२ ॥ दवरो दाधो जाय पड़े जल
मांहि । पिण जलमांहि लागी लाय ॥ तो किसी

ठोड वो करे ठंडाइ। किसी ठोड सातावोवे तायरे ॥ २३ ॥ ज्यु जिण आज्ञा मांहि पाप होवेतो। किणरी आज्ञामांहे धर्मों ॥ किणरी आज्ञापाल्या सुधगति जावे। किणरो आज्ञास्युं कटे कर्मोंरे ॥ २४ ॥ छांटां आवेछै तिणमांहि साधु। मातरो परठे दिसां जावे॥ तिणरे छै पिणजिनजीरी आज्ञा। तिणमें कुंण पाप बतावेरे ॥ २५ ॥ साधु राते लघु बड़ी नीत दोनूं हीं। परठण जावे अछांहि॥ वले सिज्याय करें रातेथांनक बारे। जावे आवे अछायां मांहिरे ॥ २६ ॥ इत्यादिक साधु राते काम पड़े जब। अछायां आवेने जावे॥ तिणने पिणछै जिनजीरी आज्ञा। तिणमें कुंण पाप बतावेरे॥ २७ ॥ राते अछायां अपकाय पड़ेछै। तिणरी घात साधु थीथाय॥ ओपिण न्याय नदी जिम जाणो। तिणने पाप किसी बिधथायरे॥ २८ ॥ नदी माहिं बहती साधवी ने। साधु राखे हात संभावे॥ तिणमाहिं पिण छै जिनजीरी आज्ञा। तिणमें कुंण पाप बतावेरे॥ २९ ॥ इर्या सुमत चालतां साधु सुं। कदा जीव तणो होवेघात॥ तेजीव मुवांरो पाप साधुने। लागे नही अंसमातरे॥ ३० ॥ जोइर्या सुमत बिना साधु चाले।

कदा जीव मरे नवि कोय ॥ तोपिण साधुने हिन्सा कहउं कायरी लागे । कर्मतणों बंध होयरे ॥ ३१ ॥ जीवमुवा तिहां पाप न लागो । नमुवा तिहां लागो पाप ॥ जिण आग्या संभालो जिण आग्या जोवो जिण आज्ञामे पाप म थापोरे ॥ ३२ ॥ जव कोइ कहै गृहस्थी हाल्यां चाल्यां विण साधुने किम वहरावे ॥ हालण चालणरी तो नहीं जिन आज्ञा । चाल्यांविण तो वहरावणी नावेरे ॥ ३३ ॥ वैठो होवे तो उठ वहरावे । उभो होवे तो वैठ वह-रावे ॥ वैठन उठनरी तो नहीं जिन आगन्यां । तो वारमीं व्रतकिम निपजावेरे ॥ ३४ ॥ जो जिन आज्ञा वारे पाप होवेतो । हालण चालणरो पाप थावे ॥ साधांने वहरायांरो धर्मते चौवड़े । कोइइसड़ी चरचा ल्यावेरे ॥ ३५ ॥ कोइ कहै चालणरी तो जिन आज्ञा नाही । तोहीचाल वहरायांरो धर्म ॥ जिण आगन्याविन चाल्यो तिणने । लागो नही पाप कर्मरे ॥३६॥ इणविध कुहेत लगावे अज्ञानी । धर्म कहै जिन आग्यावारो ॥ हिवेजिन आगन्यांमांहि धर्म मरधणरा । थेजावहिया मांहे धारोरे ॥३७॥ मन वचन कायारा जोग तीनूं हिं । सावद्य निर्वद्य जांण ॥ निर्वद्य जोगांरी श्रीजिनआज्ञा । तिणरी

करजो पिछाणरे ॥३८॥ जोग नाम व्यापार तणों छै। तेभलाने भुंडा व्यापार ॥ भला जोगांरी जिन आज्ञा छै। माठा जोग जिन आगन्यांवाररे ॥३९॥ मन वचन काया भला व्रतावो गृहस्थने कहै जिन रायो। ते कायाभणी किण विध प्रवर्ता वे। तिणरो विवरो सुणों चित लायोरे ॥४०॥ निर्वद्य कर्तव्यरी छै श्रीजिन आग्या। तिणकर्तव्यने काया जोग जाणे॥ तिण कर्तव्यरो छै श्रीजिन आग्या। तिण कर्तव्यने करो आगीवाणरे ॥४१॥ साधांने आहारहातांस्युं वहरावे। उठ बैठ वहरावे कोय। ते वहरावणरो कर्तव्य निर्वद्य छै। तिण में श्री जिन आगन्यां होयरे ॥४२॥ निर्वद्य कर्तव्य गृहस्थो करेछै। त्याने आगन्यां दे जिनराय ॥ ते कर्तव्य तो काया स्युं करसी। पिण नकहै थे चला वो कायरे ॥४३॥ निर्वद्य कर्तव्यरी आगन्यां दिधां। पाप न लागे कोय॥ हालण चालणरी आंगन्यां दिधां। गृहस्थ स्युं संभोग होयरे ॥४४॥ बेसो सुवो उभो रहो नै जावो। गृहस्थ ने साधु न कहै आम॥ दसमिकालकारे सातमे अध्यैन। सैंतालीसमीगाथा मेतांमरे ॥४५॥ उभारो कर्तव्य बेठारो कर्तव्य। कारणों कहै जिन राय। पिण

वैठन उठन गोनही कहै ग्रहस्थ ने। थे विचार देवो मन मांयरे ॥४६॥ निर्वद्य कर्तव्य री आगन्यां दिधां। निर्वद्य चाल वो तेमांह आयो कर्तव्य छोड़ने चालणरी आग्या देवे तो ग्रहस्थरो संभोगी थावोरे ॥४७॥ ग्रहस्थरे दुवार पड्यो कपड़ादिक। जब साधु सुं जाणीनावे मांहि॥ जब कोई ग्रहस्थ भेलो करे कपड़ादिक। साधुने मारग देवे ताहिरे ॥४८॥ साधांने मारग देवे जावण आवणरो। ते कर्तव्य निर्वद्य चोखो॥ जो कपड़ादिक रेकांम भेनो करे तो सावद्य काम छै दोखोरे ॥४६॥ तिणस्युं साधु कहै ग्रहस्थने। म्हांने जायगां दो जावामांहि॥ पिण कपड़ादिक भेलो करो मां वटने। इमडोनकाडिवाइरे ॥५०॥ ग्रहस्थरो उपध करे आगो पाछो। वैसायवा मोयवादिकरे काम॥ ते पिणकर्तव्य निर्वद्य जाणो। नही उपधउपर परिणामरे ॥ ५१ ॥ केइ श्रीजिन आगन्यां वारे अज्ञानी। धर्म कहै छै ताम॥ ते भोला लोकांने भर्ममे पाड़े। लेइ अनेक वोलारो नाम रे ॥ ५२ ॥ श्रावकरी मांहों मांहि करे वियावच। वलीमाता पुत्र नें पुछावे। तिणमें श्री जिन आगां मुल्लन दिसे। तिण माहे धर्म बतावे रे ॥ ५३ ॥

श्रावकरी मांही माहैव्यावचकीधी। तिणदीयो सरी
ररो साज। छवकायारो ससत्रतिखोकिधो। तिण
स्युं आग्या न दे जिनराजरे॥ ५४॥ गृहस्थीरी
व्यावच किधीतिणरे। अठाइसमुं अणाचार।
साता पुछ्यांरो अणाचार मोलमुं। तिणमे धर्म
नही छै लिगार रे॥ ५५॥ सरीरादिक ने श्रावक
पुंजे। मातरादिक ने परठेपुंजे। इत्यादिक
कारजरी नहीं जिन आज्ञा। धर्म कहै त्यांने सव
लो न सूजेरे॥५६॥ सरीरपुंजे मातरादिक परठे।
तेतो सरीरादिकरो छै काज। जो धर्म तणोंए
कार्य हुवेतो। आगन्यां देता जिनराजरे॥५७॥
जो पुंजणों परठणोनकरेजावक। तो काया थिर
रखणी एक ठाम। पिण हस्तादिकने विण चलायां
रहणी नावे तामरे॥ ५८॥ लघुवडी नीत तणी
अवाधा। खमणी ठमणी न आवे ताम। पुंजे
परठे तोइ सावद्य कर्तव्य छै। जिन आज्ञारो न
विकामरे॥५९॥ कदा थोडि बुध त्यांने समज न पडे।
तो। राखणी जिण प्रतीत आगन्यां मांहे पाप
आज्ञा बारे धर्म। इसडो न करणी अनितरे॥६०॥
जिण आगन्यां मांहे पाप कहै छै। ज्यारिमत
घणी छै माठी। जिण आगन्यां बारे धर्म कहै छै

त्यांरे आद्र मकान पाडी पाटीरे ॥ ६१ ॥ जिन आगन्यां मांहे पाप कहतां। मुरख मुल न लाजे। वलि धर्म कहै जिन आगन्यां वारे। ते पण्डित पाषंडियां मे वाजेरे ॥ ६२ ॥ जिन आगन्यां मांहे पाप कहै छै। ते वुडे छै कर कर ताणों। वले धर्म कहै जिन आगन्यां वारे। तेतो पुरा छै मुढ अजाणोरे ॥ ६३ ॥ समत अठारने वर्ष इकताले। जेठ सुद तीजने सुक्रवारे। जिन आगन्यांउलखा वण काजे। जोड किधो छै पर उपगार रे ॥६४॥

॥ दुहा ॥ जिण सांसणमे आज्ञा वडी। उलष तेवुधवान। ज्यांजिण आज्ञा नविउलषी। तेजीव छै विकल समान ॥ १ ॥ दोय करणी संसारमें। सावद्य निर्वद्य जाण। निर्वद्यमे जिण आगन्यां। तिण सुं पामैपद निर्वाण ॥२॥ सावद्य करणी संसार नी। तिणमे जिन आगन्यां नही होय। कर्म बंधे छै तेहथी। धर्म मजाणों कोय ॥ ३ ॥ किहां २ छै जिण आगन्यां। किहां २ आगन्यां नांह ॥ वुध वंत करो विचारणां। निरणों करो घट मांह ॥४॥

॥ ढालदुजी ॥

(हुं वलिहारि हो श्री पुज्यजी रेनामरी एदेशी)

कोइ करे पचखाण नौकारसी। तिणरी आगन्यांदी जिन आप हो॥ स्वामीजी॥ कोइ दान दे लाखां संसारमे। पुछ्यां आप रहो चुप चाप हो॥ स्वामीजी हुं वलिहारी हो। हुं वलिहारी हो श्री जिनजीरी आगन्यां॥ १॥ जिण आज्ञा सहित नौकारसी। कीधां कटे सात आठ कर्म हो॥ स्वा० कोइ दान दे लाखां संसार मे। तेतो आपरो भाष्यो नहीं धर्म हो॥ स्वा०॥हुं॥ २॥ अन्तर महुरत त्यागे एक भुंगडो। तिणरी आगन्यां दी जिनराज हो॥ स्वा०। कोइ जीव छुडावे लाखां दाम दे। तठे आप रहो मौन साझ हो॥ स्वा०॥हुं॥ ३॥ अन्तर महुरत त्यागे एक भुंगडो। तेतो आपरो सीखायो छै धर्म हो॥ स्वा०। तिणस्युं कर्म कटे तिण जीवरा। उतकृष्टोपामे सुख परमहो॥ स्वा०॥ हुं॥ ४॥ कोइ जीव छुडावे लाखां दाम दे। तेतो आपरो सीखायो नहीं धर्म हो॥ स्वा०। ओ तो उपगार संसार नों। तिणस्युं कटता न जाण्यां आप कर्म हो॥ स्वा॥ हुं॥ ५॥ कोइ साधांने वह

रावे एक तिणपलो। तिणरी आज्ञा दी आप माख्यात हो ॥ स्वा०। कोइ श्रावक जिमावे कोडांग मे। तिणरी आज्ञा नहो अंसमात हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ६ ॥ माधांने वहरावे एक तिणपलो। तिणरे वारमुं व्रत कह्यो आप हो ॥ स्वा०। तिणस्युं आज्ञा दोधो आपतेहने। वले कहता जाख्यां तिणरा पाप हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ७ ॥ कोइ श्रावक जीमावे कोडानिवतने तेतो सावद्य कामों जाख्यो आप हो। स्वा०। उण छवकाय शस्त्र पोषियो। तिणने लागो छै एकंत पाप हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥८॥ कोइ करे व्यावच श्रावकां तणी। तठे पिण आपरे छै मौन हो ॥स्वा०। उण तीखो कोधो छै शस्त्र छव-कायनां। तै कर्तव्य जाख्यो आप जबुन हो ॥स्वा० ॥ हुं ॥ ८ ॥ कोइ उघाडे मुख भणे छै सिधन्तने। कोडांगमे गुणे छै नवकार हो ॥ स्वा०। तिणमे आपतणी आगन्यां नहीं। तिणमे धर्म न सरधुं लिगारहो ॥ स्वा०॥ हुं ॥ १० ॥ उघाडे मुख गुणे छै नवकारने। तिण वाउकायमाख्या असंख्य हो ॥ स्वा०। तिणमे धर्म श्रधे ते भोला थका। त्यांरे लागा कुगुरांराडंक हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ११ ॥ जेणां स्युं गुणे एक नवकार ने। तिणस्युं कोइ भवांरा

कटै कर्म हो ॥ स्वा० । तिणमें आप तणी छै आग-न्यां । तिणरे निश्चे ही निर्जरा धर्म हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ १२ ॥ कोइ साधु नाम धरायने । प्रसंसे छै सा-वद्य दान हो ॥ स्वा० । त्यांभेष भांड्यो भगवानरो त्यांरे घट माहे घोर अज्ञान हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥१३ मौन कही छै साधुने सावद्य दानमें । तेतो अन्त-राय पडती जाण हो ॥ स्वा० । तिणरो फल तो सुत्र में बताविर्यो । तिणरी बुधवन्त करसी पिछाण हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ १४ ॥ प्रदेशी राजा कहै केसी स्वाम ने । म्हारे तो चढ़तो वैराग हो ॥स्वा०। म्हारे सात सहंस गांव खालसे । तिणरा करुं च्यार भाग हो ॥ स्वा०॥ हुं ॥ १५ ॥ एक भाग राण्यां निमते करुं । दूजो भाग करुं खजान हो । स्वा० । तीजो भाग घोडा हाथी निमत करुं । चौथो भाग करुं देवा दान हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ १६ ॥ च्यारुं भाग सावद्य कामों जाणनें । मौनसाभी रह्या केसी स्वाम हो ॥ स्वा० । जो ऊवे किणहीक में धर्म जाणता । तो तिणरी करता प्रसंसा ताम हो ॥ स्वा०। हुं ॥ १७ ॥ सावद्य कर्तव्य च्यारुं भाग राजरा । त्यामेजीवांरी हिंसा अत्यंन्त हो ॥ स्वा०। तिणस्युं च्यारू बराबर जाणने मौन साभी रह्या मतिवन्त हो ॥ स्वा ।० । हुं ॥१८॥

णान देवा मंडाइदान साल मे। प्रदेशी नामे राजान हो ॥ खा०। सात सहंस हुंता गांव खालसे तिणरी चोथी पांतीरो देवा दान हो ॥ खा० हुं ॥ १६ ॥ च्यार भाग कर आप न्यारो हुवो। तिण जाण्यो संसार नो भाग हो ॥ खा०। तिण तीथ नकिधी तिणराजरी। रह्यो मुगतस्युं सनमुख लाग हो ॥ खा० ॥ हुं ॥ २० ॥ ओ तो दान भोगाने भोलायने। तिण पुछो नहिंसे बात हो ॥ खा०। चौव दे प्रकार रो दान साधने। तेतो राख्यो निज पोतारे हात हो ॥खा॥ हुं० ॥२१॥ चोथो भाग दान तालके करी। नही राख्यो पोतारे हात हो ॥ खा०॥ तीनूं भाग ज्युं दुगने पिणथापीयो। छव काय जीवांरी जाणी घात हो ॥ खा० हुं ॥ २२ ॥ साडा सतरेमो गांव दान तालके। दिन २ प्रते मठेरा पांच गांव हो ॥ खा०। त्यांरे हांसलरो धान रंधाथने। दान साला मंडाइ ठामठाम हो ॥ खा० ॥ हुं ॥ २३ ॥ टालवा गांव जाणीज्यो खालसे। तेतो चौथे आरारा गांव हो ॥ खा० ॥ हांसल पिण आवतो जाणो ज्यो घणों। नेपे पणहुंती घणी अमाम हो ॥ खा० ॥ हुं ॥ २४ ॥ हांसल आयो हुवे एक एक गांवरो। दश सहंस मणरे उनमान हो

॥ स्वा० । दिन २ प्रते मठेरा पांच गांव रा । ऊणो पचास हजार मण धान हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ॥ २५ ॥ इण लेखे एक बरस तणो । पुणां दोय क्रोडमण धान हो ॥स्वा०। अधिको ओछो तो आप जाणीरह्या । अटकल स्युं कह्यो उनमान हो ॥स्वा०॥ हुं ॥२६॥ पाणी पांच क्रोड मणरे आसरे । पुणां दोय क्रोड मण रांध्यां धान हो ॥ स्वा० । अन्न एक क्रोड मण जाणज्यो। लुणछे लाखां मणरे उनमान हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ २७ ॥ नितधान हजारां मणरांधत । अगन पाणी हजारां मण जाण हो ॥ स्वा०। मणा बंध लुण पिण लागतो । वाउकायरो वोहोत घमसाण हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ २८ ॥ फवारादिक अनेक पाणी मझे । वलेवनस्पति पाणी मांय हो ॥ स्वा० । धान हजारांमन रांधता । तिहां अनेक मुवा तसकाय हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ २९ ॥ दिन २ प्रते मारे छवकायने । वले अनंतजीवारी करे घात हो ॥ स्वा० ॥ त्यारी हिंसारो पापगीणो नही ॥ त्यारे हिंसा धर्मरो मिथ्यात हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ३० ॥ एहवा दुष्ट हिंसा धर्मी जीवडा ॥ केइ जाणेछे अज्ञानी साध हो ॥ स्वा० ॥ तिणरे घट मांहि घोर अन्धार छे ॥ तेतो नेमा निश्चे छे असाध हो ॥ स्वा०

॥ हुं ॥ ३१ ॥ केइजीव खुवायामे पुन्य कहै। केइ मिश्र कहे छै मुढ हो ॥ स्वा० ॥ ए दोनूं बूडा छै वापड़ा कर २ मिथ्यात री रुढहो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ३२ ॥ जीव खाधांखुवायां भला जाणीयां। तीनूं हीं करणां छै पाप हो ॥ स्वा० ॥ आसरधा परुपी छै थापरी। तेपिण देवे छै अज्ञानी उथाप हो ॥स्वा०॥ हुं ॥ ३३ ॥ केइ जीव खुवावेछै तेहनां। चोखा कहै अज्ञानी प्रणाम हो ॥ स्वा० ॥ कहै धर्मने मिश्र हुवे नही। जिव खुवायां विण ताम हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ३४ ॥ जीव खावणारा प्रणाम छै अतिवुरा। खुवावणा रा पिण खोटा परिणाम हो ॥ स्वा० ॥ युही भोलाने नाखि भर्ममे। लेले परिणामांरो नाम हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ३५ ॥ केइ कहै जीवांने मार्यां विना। धर्म न हुवे ताम हो ॥स्वा०॥ जीव मार्यांरो पाप लागे नही। चोखा चाहिजे निज परिणाम हो॥ स्वा०॥ हुं ॥३६॥ केइ कहै जीवांने मार्यां विना। मिश्र न हुवे ताम हो ॥ स्वा० ॥ ते जीव मारणारी सांनी करे। लेले परिणामांरो नाम हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥३७॥ केइ धर्मने मिश्र करवा भणी। छवकायरो करे घमसाण हो ॥ स्वा० ॥ तिणारा प्रणाम चोखा कह्यांथकां। पर जीवांरा छुटे प्राण हो ॥स्वा०॥ हुं॥३८॥ जिण ओलख

लीधी आपरी आगन्यां। ओलख लीधी आपरी मौन हो ॥ स्वा० ॥ तिण आपने पिण ओलख लीया। तिणरिटलसी माठी माठी जुन हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ३९ ॥ तिण आज्ञा नविओलखी आपरी। ओलखी नवि आपरी मौन हो ॥ स्वा०। तिण आपने पिण ओलख्या नवि। तिणरे बन्धमी माठी माठी जुन हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ४० ॥ कोइ जिण आज्ञा बारे धर्म कहै। जिण आज्ञा माहे कहे पाप हो ॥ स्वा०। ते दोनूं विध बुडा छे वापडा। कुडो करकर अज्ञा नी बिलाप हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ४१ ॥ आपरो धर्म आपरी आगन्यांमझे। नहीं आपरी आज्ञा बार हो ॥ स्वा० ॥ जिण धर्म जिण आगन्यां बारे कहै। तेतो पुरा छे मुढ़ गिवार हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ४२ ॥ आप अवसर देखने बोलीया। आप अवसर देखी साझी मौन हो ॥ स्वा० ॥ जिहां आपतणी आगन्यां नवि। ते करणी छे जावकजबुन हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ४३ ॥ भेष धार्यां सावद्य दान थापीयो। तिण दानस्युं दयाउथप जाय हो ॥ स्वा० ॥ वले दया कहै छवकाय बचावियां। तिणस्युंदान उथपगयो ताय हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ४४ ॥ छवकाय जीवाने जीवा मारने। कोइ दान देवे संसाररे मांय हो ॥ स्वा०।

तिणरे घटमें छवकाय जीवांतणी। दया रही नहीं ताय हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ४५ ॥ कोइ दान देवे तिणने वरजने। जीव बचावे छवकाय हो ॥ स्वा० ॥ तेजीव बचायांदया उथपे। तिणस्युं न्यारा रह्यां सुखथायहो ॥ स्वा० ॥ ४६ ॥ छवकायने जीवांने मारे दान दे। तिण दान स्युं मुगत न जाय हो ॥ स्वा० ॥ वले फिर बचावे छवकायने। तिणस्युं कर्म कटे नही ताय हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ४७ ॥ सावद्य दान दियां स्युं दया उथपे। सावद्य दयास्युं उथपे अभै दान हो ॥ स्वा० ॥ सावद्य दान दया छै संसार नां। यांने ओलखते बुधवान हो ॥ स्वा० ॥ हुँ ॥ ४८ ॥ तीविधे २ छवकाय हणवी नही। आ दया कहि जिणराय हो ॥ स्वा० दान देणो सुपात्रने कह्यो। तिणस्युं मुगत सुखे सुखे जाय हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ४९ ॥ दान दया दोनूं मारग मोषरा। तेतो आपरी आज्ञा सहित हो ॥ स्वा० ॥ याने रुडोरित आराधिया। ते गया जमारो जीत हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ५० ॥ आप तणी आग्या ओलखायवा। जोड किधी नवां सहर मझारहो ॥ स्वा० ॥ समत अठारे ने बरस चमालीसे। माहासुद सातम ब्रहस्पति

वार हो ॥ स्वामी जी हुवलिहारी हो हुवलिहारी हो श्री जिनजीरी आगन्यां ॥ ५१ ॥

॥दुहा॥ श्रीजिन धर्म जिन आज्ञामझे । आज्ञा वारे नही जिन धर्म ॥ तिणस्यु पापकर्म लागे नहीं । वले काटे आगला कर्म ॥१॥ केइ मुढ मिथ्याती इम कहै । जिण आज्ञा वारे जिण धर्म ॥ जिण आज्ञा माहे कहै पाप छे । ते भुला अज्ञानी भर्म ॥२॥ जिण आज्ञा वारे धर्म कहै । जिन आज्ञा माहे कहै पाप ॥ तेकिण ही सुवमे छै नहीं । युहिं करे मुढ विलाप ॥३॥ कहै धर्म तिहां देवां आगन्यां । पाप छे तिहां करां नषेध ॥ मिश्र ठीकाणे मौन छै । एह धर्मनों भेद ॥४॥ इसड़ो करेछै परूपणां । तेकरे मिश्ररीथाप ॥ तेवुडा खोटोमत बांधने । श्रीजिन वचन उथाप ॥५॥ केइ मिश्रतो माने नवि । माने हिंसामे एकान्तधर्म ॥ तेपण वुडेछै वापडा ॥ भारि करेछै कर्म ॥६॥ जिन धर्म तो जिण आज्ञामझे । आज्ञा वारे धर्म नही लिगार ॥ तिणमे साख सुत्रो दे कहुं । ते सुण ज्यो विस्तार ॥७॥

※ ढाल तीजी ※

(जीव मारेते धर्म भाखो नवि एदेशी)

आज्ञामें धर्म छे जिनराजरो। आज्ञा बारे कहै ते मुढरे॥ विवेक विकल सुध बुध विना। ते बुडे छे करकर रूढरे॥ श्रीजिन धर्म जिन आगन्यां तिहां ॥१॥ ज्ञान दरसण चारत ने तप। एतो मोषरा मारग च्याररे॥ यां च्यारां मे जिनजीरी आगन्यां। यांविनां नहीं धर्म लिगाररे ॥श्री॥ २ ॥ यां च्यारां मांहिला एक एकरी। आग्या मांगे जिनेश्वर पासरे॥ तिणने देवे जिनेश्वर आगन्यां। जब उ पामे मनमें हुलासरे ॥श्री॥३॥ यांच्यारां विना मांगे कोइ आगन्यां। तो जिनेश्वर साझे मोनरे ॥ तो जिन आगन्यां विना करणी करे। ते करणी छे सावद्य जवुनरे ॥श्री॥४॥ बीसां भेदां रूके कर्म आंवता। बारे भेदे कटे बन्धिया कर्मरे॥ त्याने देवे जिणेश्वर आगन्यां। ओहिज जिण भाष्यो धर्मरे॥ श्री ॥५॥ कर्म रूके तिणकरणीमे आगन्यां। कर्म कटे तिण करणी में जाणरे ॥ यां दोयां करणी विना नवि आगन्यां। तेसगली सावद्य पिछाणरे॥श्री॥६॥देव अरिहन्त ने गुरु साध छै। केवली भाष्योते धर्मरे ॥ ओर धर्म नहीं जिन आगन्यां। तिणसुं लागेछै पापकर्मरे॥श्री॥७॥ जिन भाष्यामे जिनजीरी आगन्यां। ओरांरी

भाष्यामें ओर जाणरे ॥ तिणस्यु जीव सुषगत जावे नहीं । वली पाप लागेछे आणरे॥श्रो॥८॥ केवली भाष्यो धर्म मंगलीकछे । ओहिज उत्तम जाणरे॥ सर्गों पणल्यो दूणा धर्मरो । तिणमे श्रीजिन आज्ञा प्रमाणरे ॥श्री॥६॥ ठाम २ सुत्र माहे देखल्यो । केवली भाष्योते धर्मरे ॥ मौन साभे तिहां धर्म को नहीं । मौन साभे तिहां पाप कर्मरे ॥श्री॥१०॥मौन साभणियो धर्म माठो घणो। भेष धार्यां परुप्यो जाणरे ॥ खांचर्वुडेछे वापड़ा । ते सुत्र रा सुढ अजाणरे ॥श्री॥११॥धर्मने सुक्ल दोनूं ध्यानमे । जिण आज्ञा दिधी वारुं वाररे॥ आर्त रुद्र ध्यान माठा बिहुं । याने ध्यावे ते आज्ञा वाररे ॥ श्री ॥ १२ ॥ तेजु पद्म सुक्ल लेस्या भली । त्यांने जिन आगन्यां ने निर्जरा धर्मरे ॥ तीन माठी लेस्यामे आग्या नही । तिणस्युं वन्धेछे पाप कर्मरे ॥ श्री ॥ १३ ॥ च्यार मंगल च्यार उत्तम कह्या । च्यार सर्णा कह्या जिन रायरे ॥ एसगलाछे जिन आगन्यां मभे । आज्ञा बिन आछी वस्तु न कायरे ॥ श्री ॥ १४ ॥ भला प्रणाम में जिन आगन्यां । माठा परिणामां आज्ञा वाररे॥ भलापरिणामां निर्जरा निपजे । माठा परिणामां पापद्वाररे ॥श्री॥१५॥ भलां अध्यव साय में जिन आगन्यां । आज्ञावारे माठा अध्यव सायरे ॥ भला

अध्यव सायां सुं निर्जरा हुवे। माठा अध्यव सा-
यांसुं पाप बन्धायरे ॥ श्री ॥ २६ ॥ ध्यान लेस्या प्रणा
म अध्यव सायछै। च्यारुं भला मे आज्ञा जाणरे ॥
च्यारुं माठामें जिन आज्ञा नही। यांरा गुणारी
कर जो पिछाणरे ॥ श्री ॥ १७ ॥ सर्व मुल गुणने
उत्तर गुणे। देश मुल उत्तर गुण दोय रे ॥ दोयां
गुणां में जिनजीरी आगन्यां। आगन्यां वारे गुण
नवि कोयरे ॥ श्री ॥ १८ ॥ अर्थ परम अर्थ जिन धर्म
छै। उवाइ सुंगडायंग मांयरे ॥ तिणमें तो जिन
जीरी आगन्यां। सेष अनर्थमे आग्या नवितायरे ॥
॥ श्री ॥ १९ ॥ सर्व व्रत धर्म साधां तणो। देशव्रत
श्रावकरो धर्मरे ॥ यां दोयां धर्म जिनजीरी आग-
न्यां। आग्या वारे तो वन्धसी कर्मरे ॥ श्री ॥ २० ॥
उजलो धर्म छै जिन राजरो। तेतो श्रीजिन आज्ञा
सहित रे। मुगत जावा अजोग असुध कह्यो। ते
तो जिन आग्या स्युं विपरीतरे ॥ श्री ॥ २१॥ आज्ञा
लोप छांदे चाले आपरे। ते ज्ञानादिक धन सुं
खाली थायरे ॥ आचारंग अध्येन दुसरे। जो वो
छटा उदेसा मांयरे ॥ श्री ॥ २२ ॥ आज्ञा सुं रुके ते
धर्म मांहरो। एहवो चिन्तवे साधुमन मांयरे ॥ आ
ज्ञा विन करवो जिहांहिं रह्यो। कडो बोलवो पिण

नवि थायरे ॥ श्री ॥ २३ ॥ आज्ञा मांहलो ते धर्म मां हरो। और सर्व पारको थायरे। आचारंग छठा अध्येन में। पहले उदेस जोय पिछाणरे ॥ श्री ॥ २४ ॥ आगन्यां मांहि संजम नै तप। आगन्यां मे दोनूं परिणामरे। आग्या रहित धर्म आखो नवि। जिण कह्यो पराल समानरे ॥ श्री ॥ २५ ॥ आश्रव निर्जरारो ग्रहण जुदो कह्यो। ते जाणसी जिन आज्ञारो जाणरे। आचारंग चौथा अध्येनमें। पहले उदेसा जोय पिछाण रे ॥ श्री ॥ २६ ॥ निर्वद्य धर्म चतुर विध संघ छै। ते आग्या सहित वंछै अनु-सन्तानरे। आचारंग चौथा अध्येन मे। तीजे उदेसे कह्यो भगवान रे ॥ श्री ॥ २७ ॥ तिर्थंकर धर्म कीधोतिको। मोषरो मारग सुधवेसरे ॥ और मोषरो मारग को नहीं, पांचमे आचारंग तीजे उदेस रे ॥ श्री ॥ २८ ॥ जिण आज्ञा वारली करणी तणो। उधम करे अज्ञानी कोयरे ॥ आज्ञा माहली कर-णीरो आलस करे। गुरु कहै सिष्य तोने दोय म होयरे ॥ श्री ॥ २९ ॥ कुमारग तणी करणीकरे। सुमारग रो आलस होयरे ॥ ए दोनूं हिं करणी दुरगत तणी। आचारंग पांचमे अध्येन जोयरे ॥ श्री ॥ ३० ॥ जिण मारग रा अजाणने। जिण

उपदेश नों लाभ न होयरे ॥ आचारंग रा चौथा अध्येन में। तीजा उद्देसासे जोयरे ॥ श्री ॥ ३१ ॥ ज्यां दान सुपात्र ने दियो। तिणमे श्रीजिन आग्या जाणरे ॥ कुपात्र दानमे आगन्यां नहीं। तिणरी बुधवंत करज्यो पिछाण रे ॥ श्री ॥ ३२ ॥ साध विना अनेरा सर्वने। दान नहीं दे साठो जाणरे ॥ दीधां भमण करे संसार में। तिणस्युं साध किया पच्च-खाणरे ॥ श्री ॥ ३३ ॥ सुयगडांग नवमा अध्येन में। चौसमी गाथा जोयरे ॥ वले दिधां भागे व्रत साधरो। जिन आगन्यां पिणनवि कोयरे ॥ श्री ॥ ३४ ॥ पात्र कुपात्र दोनूं नें दिया। विकल कहे दोयामें धर्मरे ॥ धर्म हुसी सुपात्र दानमे। कुपात्र ने दिया पाप कर्मरे ॥ श्री ॥ ३५ ॥ खेत्र कुखेत्र श्रीजिनवर कह्यो। चौथे ठाणे ठाणा अंग मांयरे ॥ सु खेत्रमे दियां जिन आगन्यां। कु खेत्रमे आग्या नवि कायरे ॥ श्री ॥ ३६ ॥ आहार पाणीने वले उपधादिक। साधु देवे गृहस्थने कोयरे ॥ तिणने चौमासी दण्ड नसीतमे। पनरमें उद्देसे जोयरे ॥ श्री ॥ ३७॥ गृहस्थने दान दे तिण साधुने। प्राश्चित आवे कि धो अधर्मरे ॥ तो तेहिज दान गृहस्थ देवे। त्याने किण विध होसी धर्म रे ॥ श्री ॥ ३८ ॥ असंजम

छोड संजम आदस्यो। कुसील छोड हुवो ब्रह्मचार रे॥ अणकल्पणीक अकार्य परहरे। कल्प आचार कियो अंगीकार रे॥ श्री॥ ३९॥ अज्ञान छोडने ज्ञान आदस्यो। माठी क्रिया छोडि माठी जाणरे॥ भली क्रियाने साधु आदरी। जिण आज्ञा स्युं चतुर सुजाण रे॥ श्री॥ ४०॥ मिथ्यात छोड सम्यक्त आदस्यो। अवोध छोड आदस्यो वोधरे॥ उनमार्ग छोड़ सुनमार्ग लियो। तिणस्युं होमो आतमा सुधरे॥ श्री॥ ४१॥ आठ छोड़ेते जिन उपदेस सुं। पाप कर्म तणों वंध जाणरे॥ जिण आज्ञा स्युँ आठ आदस्यां। तिणसुं पामे पद निर्वाण रे॥ श्री॥ ४२॥ ठाम २ सुत्र में देखल्यो। जिण धर्म जिण आज्ञा मे जाणरे॥ ते मुढ मिथ्याती जाणे नही। युहीं बुडे छै कार कार ताणरे॥ श्री॥ ४३॥ हुं कहि कहिने कितरो कहु। आगन्यां वारे नही धर्म मुलरे॥ आगन्यां वारे धर्म कहै तेहना। सरधा कण बिना जाणो धुलरे॥ श्री॥ ४४॥

॥ दुहा॥ भेषधारी विगरायल जैनरा। ते कुड कपटरी खान॥ ते आगन्यां वारे धर्म कहै। त्यांरे घटमें घोर अग्यान॥ १॥ त्याने ठीक नही जिन धर्मरी। जिण आग्यारी पिण नवि ठीक॥ त्याने

परवार विवेक विकल मिल्या ॥ त्यामे वाजे पुजमे ढीक ॥ २ ॥ ते वडा उंठज्युं आगे चले। लार चले जेमकतार॥ वोहला वुडेके वापडा। वडा वुढा रीलार ॥ ३ ॥ इवे वले विशेष जिन आगन्यां। ओलखजो वुधवान ॥ तिणरा भाव भेद प्रगट करूं। ते सुण जो सुर्त दे कान ॥ ४ ॥

॥ ढालचौथी ॥

(जंवु कुंवर कहे परभव सुणो एदेशी)

साधु सामायक व्रत उचरे। तिणमें सावद्यरा पच्चखाण ॥ भविक जन हो ॥ तेहिज सावद्य गृहस्थ करे। तिणमे श्री जिण धर्म म जाण ॥ भविक जन हो ॥ श्री जिनधर्म जिन आगन्यां तिहां ॥ १ ॥ श्रावक सामायक पोसो करे। तिणमे पिण साव-द्यरा पच्चखाण ॥ भ० । तेहिज सावद्य कामो छुटो करे। तिणमे पिण जिणधर्म म जाण ॥ भ० ॥ २ ॥ श्री ॥ धर्म कहे साधु जिन आगन्यां मझे। आग्या वारे धर्म कहे ते मुढ ॥ भ० । तिण श्री जिन धर्म नओ-लख्यो। तिण झाली मिथ्यातरी रुढ ॥ भ० ॥ ३ ॥ श्री ॥ जिन धर्म रो जिन आगन्यां देवे। जिण धर्म

सीखावे जिणराय ॥ भ० । आज्ञा वारे धर्म किण सीखावियो । तिणरी आज्ञा देवे कुण ताय ॥ भ० ॥ ४ ॥ श्री ॥ केइ आगन्यां वारे मिश्र कहे । केइ धर्म पिण कहे आज्ञावार ॥ भ० ॥ तिणने पूछिजे ओ धर्म किण कह्यो । तिणरो नाम तुं चौडेवताय ॥ भ० ॥ ५ ॥ श्री ॥ इण मिश्रने धर्मरो कुण धणी । तिणरी आज्ञा कुणदे जोड्यां हात ॥ भ० । देवगुरु मौन साझ न्यारा हुवे । इणरी उतपतरो कुण नाथ ॥ भ० ॥ ६ ॥ श्री ॥ कोइ वेस्यारा पुतने पुछा करे । थारि मा कुण नै कुण तात ॥ भ० । जव उ नांव बतावे किण बापरो । ज्युंआ मिश्रवालांरी छे वात ॥ भ० ॥ ७ ॥ श्री ॥ वेस्यारा अंग जात नो उपनों । तिणरो कुण हुवे उदेरिने बाप ॥ भ० । ज्युं आज्ञा वारे धर्म नै मिश्ररो । जिण धर्मरी करसी कुण थाप ॥ भ० ॥ ८ ॥ श्री ॥ वेस्यारे अंग जातनो उपनो । उण लषणो हुवे उदेरिने बाप ॥ भ० । जुं जिन आगन्यां वारे धर्म नै मिश्ररी । केइ करे छे पाषण्डि थाप ॥ भ० ॥ ९ ॥ श्री ॥ कोइ कहे म्हारी माता छै वांझडी । तिणरो हुं छुं आतम जात ॥ भ० । ज्युं मुर्ख कहै जिण आगन्यां विना । करणी कीधां धर्म साष्यात ॥ भ० ॥ १० ॥ श्री ॥ बाप विण

वेटो निश्चे हुवे नही । ज्युं जिण आग्या विना धर्म न होय ॥ भ० । जिन आज्ञा होसी तो जिण धर्म छै । आज्ञा विना धर्म न होय ॥ भ० ॥ ११ ॥ श्री ॥ मा विण वेटारो जन्म हुवे नहीं । जन्मे ते वांझ ने होय ॥भ० । ज्युं जिण आज्ञाविना धर्म हुवे नही । जिन आज्ञा तिहां पाप न कोय ॥ भ० ॥ १२ ॥ श्री ॥ गघु पंषी ने चोर दोनूं भणी । गमती लागे अंधारी रात ॥ भ० ॥ ज्युं भारि कर्मां जीव तेह- ने । जिण आग्या वाहर लो धर्म सुहात ॥ भ० ॥ १३ ॥ श्री ॥ काग निमोली में रति करे । भण्ड सूरा ने भीष्टो आवेदाय ॥ भ० । ज्युं काग भंड सूरा जेहवामानवी । रिझे आज्ञा वाहर ली करणी मांय ॥ भ० ॥ १४ ॥ श्री ॥ चोर परदारा सेवणकुसी लिया । तेतो सेरी जोवे दिन रात ॥ भ० । ज्युं आज्ञा वाहर धर्म थथायवा । उंधी कर कर अ- ज्ञानी वात ॥ भ० ॥ १५ ॥ श्री ॥ गुरुवादिकरी आ ज्ञा मांगे नहीं । तेतो अपछन्दा अवनित ॥ भ० । ज्युं केइ जिण आगन्यां विण करणी करे । ते पिण करणी छै विपरीत ॥ भ० ॥ १६ ॥ श्री ॥ दुष्ट जीव मंजारी ने चितरा । छल सुं करे पर जीवांरोघात ॥ भ० । एहवा दुष्ट मिथ्र सरधा रा धणी । छल

स्युं घाले विकलांरे मिथ्यात ॥ भ० ॥ १७ ॥ श्री ॥
विगरायल हुवां न्यात वारे करे । ते विगरायल फिरे
न्यात वाहर ॥ भ० । तेहवो धर्म जिण आगन्यां
वार लो । तिणमें कदे मत जाणो भलीवार ॥भ०
॥ १८ ॥ श्री ॥ न्यात वारे ते न्यात मांहे नही । ति
णने नवि वैसाणे एक पांत ॥ भ० । ज्युं जिण आ
ज्ञा विना धर्म अजोग छै । किधां पुरोजे नहीं
मन खांत ॥ भ० ॥ १९ ॥ श्री ॥ जो आग्या विन
करणी में धर्म छै । तो जिन आज्ञारो काम न कोय
॥ भ० । तो मन मानो करणी करसी तेहने । सग-
ली करणी क्रियां धर्म होय ॥ भ० ॥ २० ॥ श्री ॥
जिण आज्ञा वाहर ली करणी क्रियां । पाप नही
लागे नै धर्म थाय ॥ भ० । तो किण करणी सुं पाप
निपजे । तिण करणी रो तुं नांव वताय ॥ भ० ॥
२१ ॥ श्री ॥ ज्ञान दर्शण चारित्र तप । ए च्यारुंहिं
छै आज्ञा मांय ॥ भ० । यां च्यारां मांहे तो धर्म
जिण कह्यो । यां विना ओर नांव वताय ॥ भ० ॥
२२ ॥ श्री ॥ इमपुछ्यां रो जाव न उपजे झूट वोले
वणाय वणाय ।.भ०॥ विकला ने विगोवण पापीया।
जिण आग्या वारे धर्म अधाय ॥ भ० ॥ २३ ॥ श्री ॥
आगन्यां वारे धर्म कहै । ते पिण छै, आगन्यां वार

॥ भ० । इण सरधा सुं वुडे छै वापड़ा । ते भव भवमे होसी खवार ॥ भ० ॥ २४ ॥ श्री ॥ जिण आगन्यां वारे धर्म कहे । ते विगरायल जैनरा जाण ॥भ० त्यांरि अभिंतर फूटी छै मांहली । ते अंधारे उगो कहे भाण ॥भ० ॥ २५ ॥ श्री ॥ श्रीजिन आगन्यां विन करणी करे । तेतो दुरगतरा आगीवाण ॥भ०॥ जिण आज्ञा सहित करणी करे । तिणस्युं पामेपद निरवाण ॥ भ० ॥ २६ ॥ श्री ॥ आज्ञा वारे धर्म कहे तेहनो । जोड किधी छै पेरवा मझार ॥ भ० ॥ समत अठारे चालीस मे । आसोजविद पांचम था वर वार ॥ भ० ॥ २७ ॥ श्री ॥ श्रीजिनधर्म जिन आगन्यां तिहां ॥

इति जिन आज्ञा को चोढालियो
समाप्त ।
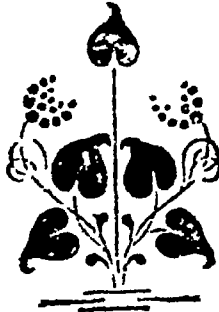
अथः श्रीपुज्य भीक्षणजीको स्मरण

कोइ अनुमति इम कहै । भजन नही जैन कै मांय ॥ सुना घरको पाउणों । ज्युं आवे ज्युं जाय ॥१॥ खेतमे खात रलायने । हल देवे जुतराय ॥ खेत खडे चौकस करे । रुडी वाड वणाय ॥ २ ॥ जलस्युं सिंचे खेतने । वीज नहीं तिणमांय ॥ रुत आयां रोवे कृ- षणी । लुण तां देखै लोग लुगाय ॥३॥ दान दया तप जप घणो । जैन धर्म कै माय ॥ वीज भजन विना कृषणी । कारने सब खप अलो जाय ॥ ४ ॥ केइ २ भोला लोकने । वांगा दे वहकाय ॥ देवै द्रष्टांत, प्रश्न कुडा । राले फंदकै मांय ॥५॥ जैन मति कोइ जैनमे । म्हांरी सुणो कृषण करतुत ॥ वीज वावे साख निपजाय वा । शिवपुर अंगासुत ॥६॥ खेत धणीको जीव छै । काया खेत समान ॥ तपरुपीयो हल जोतने । षात रुपीयो दान ॥ ७ ॥ सागडी रुपीया सतगुरु । सम्यक्त वीजज वाय ॥ दया रुपीयो जल पावतां । व्रतांरी वाड वणाय ॥ ८ ॥ खेत सीलु कर्म

काटवा ॥ जम्यां रूपणो कसोल्याय ॥ खाइ वाड संतोष ज्युं ॥ पांन पोट ज्युं पुन्या वंधाय ॥ ९ ॥ सेठ अरिहंत ज्युं ध्यानके। ध्यान रूपी योग्यान ॥ चारे रुप उपर निपना मुख संसार ना विविध विविध अममान ॥१०॥ नाज रुपीया फल मुगतका। मोडा वेगा जास्यां मोष ॥ जैन जिस्यो कृषण नही। म्हे वणां देख्या मत फोक ॥ ११ ॥ थे नहीं समजो बोधवीजमें म्हे भजां अरिहंत भगवान ॥ थारा गुरु महिमां कहो मे पिण लीधो जाण ॥ १२ ॥ गुरु गोवीन्द दोमूं खड़ा किसके लागुं पाय ॥ वलिहारी सतगुरु तणी गोविन्द दिया ओलखाय ॥ १३ ॥ अरिहंत गुण नही ओलख्या। सतगुरु दिया दरसाय ॥ कहुं भजन महिमां सत गुरु तणी। ते सुणज्यो चित्त लगाय ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥

श्री संत भिषण जीरो स्मरण करतां। भव दुख जावे सर्व भाज जी ॥ वासो वसे तो देव लोकां मांहि। पामे मुक्त पुरी नो राजजी ॥ श्रीपुज्य भिषनजी की स्मरण कोजे ॥१॥ भि कहै तां भिषु व्रत लीधा।

ष कहतां षीस्यांरस पीष जी॥ न कहैतां सावद्य काम निवाख्या। जी कहैतां इद्रयां ने जीतजी॥ श्री पुज्य॥२॥ स्मरण चिन्तामण च्यार आषररो। तिणमें गुण अथागजी॥ चक्री निधान ज्युं स्मरण साजे। तिणरो बीर कह्यो वड़ भाग जी॥ श्री॥ ३॥ सुत्र सिद्धांतमें नवकार भाख्यो। दोय पदामें आया स्वामजी॥ आचार्य पदवीने सत गुर साधु। ज्यांरो रात दिवस रटो नामजी॥ श्री पुज्य॥ ४॥ च्यार मंगलीक उत्तम सर्णा लेणा। श्री वीर गयाछे भाषजी॥ तीन प्रकारे बोलि स्वामी। ज्यांरि आवसग सुत्र में साषजी॥ श्रीपुज्य॥ ५॥ घणा विघन भागे इण स्मरण स्युं। टल ज्यावे दुख होवे हगामजी॥ कही कथा सुत्रकि मांहि लेउं थोड़ा सा नाम जी॥ श्री पुज्य॥ ६॥ लायमें बलतां सतगुर समख्या। नही बल्यो कूंज कंवार जी॥ सोष्य होस्युं श्री नेम जिण दरो। तिणने देवता काढ्यो वाहार जी॥श्रीपुज्य॥७॥ सेठ सुदर्शनमें संकट पडीयो। जब समरलीया जगनाथ जी॥ बिघन टल्यो देखो अर्जनमालीरा। नही चल्या तिण पर हातजी॥ श्रीपुज्य॥८॥ सिता सतीने अंजणा वे बनमे। उपसर्ग उपनां करुरजी॥ संकट पद्यां सति सत गुर समख्या। तिणरो देव बिघन कियो दुरजी॥

श्री पुज्य ॥९॥ सेठ सुदर्शणने स्मरण करतां । अभिया दिनो आलजी ॥ सूली फाट सिंघासण रचीयो । इसड़ो स्मरण मील रसालजी ॥ श्री पुज्य ॥ १० ॥ सती सुभद्रा ने निज मासु । दियो अण हुंतो आल जी ॥ तेलो करीने सतो सत गुरु समरया । देवी आइ ततकाल जी ॥ श्रीपुज्य ॥ ११ ॥ राजुल रूपदेखी रहनेमी चलीया । ध्यान चुकाने दियो धिक्कार जी ॥ ध्यान स्मरण मन पाक्को धरीयो । पहुंता मुगत मझार जी ॥ श्रीपुज्य ॥१२॥ अरणकने कामदेव दोयाने । देवता दुख दिधा अपारजी ॥ तोपिण सतगुर स्मरण सेंठा । देव गया तिण स्युं हारजी ॥ श्री पुज्य ॥ १३ ॥ नंन्दण मणीहारो डेडको हुंतो । तिणने चीथ्यो श्रेणिक रे केकाणजी ॥ संथारो करीने सतगुर समरया । उपनो दुधर विमाणजी ॥ श्री पुज्य ॥ १४ ॥ दल मेल्या तिहां मास नर्कना । परसन चंदराजान जी ॥ ध्यान स्मरण मन पाक्को धरीयो । पाम्यां केवल ज्ञान जी ॥ श्री पुज्य ॥ १५ ॥ तीर्थंकर चक्रवरत इद्रादिक । ओहि स्मरण साधजी ॥ मुक्ति पधार्या तेहिज भाख्यो । ओही मन्त्र आराध जी ॥ श्रीपुज्य ॥ १६ ॥ मध्यम नर कोइ स्मरण भाजे ज्यांरे वध ज्यावे आव जी ॥ मध्यम जायगां प्यारी लागे । जांणे क्यारी खी

ली गुलावजी ॥ श्री पुज्य ॥ १७ ॥ उत्म मध्यम रो
नही कोइ कारण । कूल उंच निच ने मध्य जी ॥
स्मरण साधे तिणरे घटमें । जाणे चांदणो कर दीयो चंद
जी ॥ श्री पुज्य ॥१८॥ जिमकोइ जलने पय ओटावे ।
तिम २ चोखो होवे दुध जी ॥ कर्म पातक झडे
हूण स्मरण स्युं । निर्मल चोखोज्यांरी वुधजी ॥ श्रीपुज्य
॥१६॥ कपड़ेको मैल कटे सावुन स्युं । रत काम
लगे आगजी ॥ कर्मांरो मैल छुटे स्मरण स्युं । मिट
ज्यावे भव भव दाग जी ॥ श्री पुज्य ॥ २० ॥ सुल
भ वोधी स्मरण साधे । अठे ही पामे ग्यान जी ॥
अठे नही पामे तो परभवमें पामे । इसडो स्मरण ध्यान-
जी ॥ श्री ॥ पुज्य ॥ २१ ॥ स्मरण करतां जाणे मुख
में । मीश्री पीधी गालजी ॥ सरीर वेदनां ध्यान
स्मरणस्युं । जाणे वेठा सुखपालजी ॥ श्रीपुज्य ॥२२॥
पुज्य सरीषो भरत षेत्रमें । वीजो नहीं कोइ चीज
जी ॥ स्मरण व्रतामें समकित आपे । हलु कर्मी रह्या
रीझजी ॥ श्रीपुज्य ॥ २३ ॥ साध भिषण जीरो स्मरण
करतां । पहुंचे भवजल पारजी ॥ जे नर नारीरा
भाग्य वड़ाछै । वंदे सुरत दिदारजी ॥ श्रीपुज्य ॥
२४ ॥ परजानें प्यारा वासुदेव केशव । वीरवाला
तीर्थं च्यारजी ॥ पतिव्रता विकसी पतिदेख्यां । ज्युं

समदृष्टी गुरु दिदारजी ॥ श्रीपुज्य ॥ २५ ॥ अलवरो जीव फूल डम्बरमे । सारंग ने सारंग करे कुकजी ॥ ज्यु समदृष्टीने गुरु दर्शणकी । सदा लागी रहे भुष जी ॥ श्रीपुज्य ॥ २६ ॥ अमृतफल सुवटाने मीठा । मोती मीठा मुरालजी ॥ समदृष्टी सतगुरु स्मरणस्युं । किधांहिं हर्ष अपारजी ॥ श्रीपुज्य ॥ २७ ॥ अमृत भोजन किधां टपत । पछै कीसो कुकसरी लगन जी ॥ समदृष्टी सतगुर स्मरण स्युं । मुनिज्युं रहै मगनजी ॥ श्रोपुज्य ॥ २८ ॥ मनवांछितफल हुण स्मरणस्युं । समरो भिषनजी साधजी ॥ हालत चालत उठत बैठत । चितमे रहो आराधजी ॥ श्रीपुज्य ॥ २९ ॥ बेल क्रिया कोइ निरफल थावे । निरफल थावे कोइ बीजजी ॥ सतगुर स्मरण निरफल नाही । ज्युं सीता सतीरो धीजजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ३० ॥ मध्यम बेल्यां मंत्र जपतां । तिणस्युंइ सुधरे काजजी ॥ साधु उत्तमको स्मरण कर्यांस्युं । निश्चे हू शिवपुर राजजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ३१ ॥ काल दुखम मे बहोल कर्मी। आय लीयो अवतारजी ॥ सतगुर स्मरणस्युं केवल पामे । अटके दोय प्रकारजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ३२ ॥ काल सुखम मे हलु कर्मी । आय लीयो अवतारजी ॥ सत-गुर स्मरणस्युं केवल पामे । इसा भिक्षू अणगारजी

श्रीपुज्य ॥ ३३ ॥ अध्येन आठमें गीनाता सुत्रमें । गुरु गुणगावे दिन रातजी ॥ गोत तीर्थंकर तेहिज बांधे । कीवल पिण उपजी साख्यातजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ३४ ॥ उंच पदवी देव मानव गतमे । आद तीर्थं कर देवजी ॥ सर्व सुख पामे इण स्मरणस्युं । सारो भिषण जीरी सेवजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ३५ ॥ इण स्मरण स्युं कटे भव 'भवरा । कर्म कटकादल फोजजी ॥ देखो सांवलिय मुनीराजरी सुरत । पुरोमनरो मोज जी ॥ श्रीपुज्य ॥ ३६ ॥ पाषंड पेलण हाराने विड-दांरा भारा । वर्ण सांवल इध दिदारजी ॥ लाली लोचन चाल हस्तोनी । पुज्य औलखो इण उणीहार जी ॥ श्री ॥ ३७ ॥ पंच माहाव्रत पाले दोषण टाले । सूर वीरने धीरजी ॥ मुल गुण आचारज पूरा । आगे हुवाज्युं माहावीरजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ३८ ॥ वीर स्मरणमें पुज्य स्मरणमें । फेर नही तील मातजी ॥ वीररी गादी श्रीपुज्य बिराज्या । सगली चोथे आरे-रीज्यु बातजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ३९ ॥ तिर्थं प्रवर्ताव्या ज्ञानरा गाढा । हीरारत्नांरी षाणजी ॥ भरत षेत्रमें सोज्या नही लाधे भिषु सरीषा बुधवानजी ॥ पुज्य ॥ ४० ॥ हुवाने वले होसी घणेरा । हिवडांतो दिसे नाहजी ॥ गुण घणां पिण एक जिभस्युं । कया कठा

लग जाय जी ॥ श्रीपुज्य ॥ ४१ ॥ तीर्थ प्रतीपालाने ज्ञान रसाला । भविकां भंजन भीरजी ॥ अमृतवाणी जगमे वखाणी । मीठी मीश्री खीरजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ४२ ॥ खीर खाइ चक्र वरत नीदासी । रत्न करे चकचुरजी ॥ खीरज्युं स्मरण सम दृष्टीने । वल ज्युं चट्टे पोरस पूरजो ॥ श्रीपुज्य ॥ ४३ ॥ गाल दियो गर्व श्रीदेवीनो । वलदेख्यो तिण वारजी ॥ पोरस सम समदृष्टी धर्म दियो । अनुमतिनो गर्व गालजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ४४ ॥ खीर खाइ एक ब्राह्मण वांगे । वधियो विषय विकारजो ॥ खीरज्यु कूजन ब्राह्मणरो माथी । कृताज्यु कूडत गिवारजो ॥ श्रीपुज्य ॥ ४५ ॥ सुवो मैनां पढ़ावे मानव गतमे । वाणी बोले विविध प्रकारजी ॥ माप्यात मैनाने कहै स्मरण कीजे । समजे नही मुड़ गिवारजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ४६ ॥ रात दिवस ल्यांरो ध्यान लग रह्यो । अनुमतरो भजन विसेषजी ॥ निरफल जाणे कोइ मत्य स्मरणाने । गाढी राखे टेकजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ४७ ॥ द्रढ़पणे राखो भवि जीवां । राखो स्मरण टेकजी ॥ रखे स्मरणस्युं ढीला पड़ ज्यावोतो । अनुमति करसीथांरी ठेकजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ४८ ॥ भगवंत भजां अरिहंत सिध प्रभु । आचार्य उवझाय मुनीरायजी ॥ पांच पदांरो स्मरण

साझा । थाने तो पिण खबर न कायजी॥श्रीपुज्य॥४९॥
च्यार पदारो चौवुजंगढ । सतगुर पोल दुवारजी ॥
पोल पायां विन गढ़ किम पामे । ज्युं इम गुरांको
इधकारजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ५० ॥ गुरु स्तुती सुणो
भवि जीवां । धारो स्मरण सील रसालजी ॥ तिस्या
अनंता इण स्मरणस्युं । दाख्या दिन दयालजी ॥
श्रीपुज्य ॥ ५१ ॥ एहवो महिमा गुर स्मरणरो । देवांरी
जाणो विसेषजी । जैनमें भजन नही इम मत कही
ज्यो । छोड़दो कूडी टेकजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ५२ ॥ अनु-
मतांरो जैन धर्मरो । नही भजन प्रमाणजी ॥ वानगी
दीखाली एक जैन धर्मरी । अहो भजन पिछाणजी ॥
श्रीपुज्य ॥ ५३ ॥ रहो रहो पाषंडी इण जैन धर्ममे ।
सुगते पहुंता अनंन्त अनेकजी ॥ गुरुदेवांरे स्मरण
विना । मुगतन पहुंता एकजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ५४ ॥
मृगतृषणा ज्युं स्मरण थारो । कण विना थोथो
वावे नाजजी ॥ गुण विना नांवस्युं मुगतवे पामे ।
ज्यांरा कदेइन सुधरे काजजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ५५ ॥
गुघुने दिवस नही सूजे । .पांव रोगीने मीठो
लागे खाजजी ॥ निम पान नही कड़वो जहर
चख्याने । गुण विना भजन कर्म वस गाजजी ॥
श्रीपुज्य ॥ ५६ ॥ भगत भिषन जीरो श्रावक सोभो ।

किधी च्यार तिरथ मन वारजी ॥ माला मोत्यांज्यु सतगुर स्मरणा । हीराज्यु हिरदे धारजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ५७ ॥ कुगत सिटावो मुगतजावो समरो भिषन-जीमाधजी ॥ श्रावक सोभो किरत भाषे श्रीजी-दुवार सुगामजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ५८ ॥

इति संपुर्णम् ।
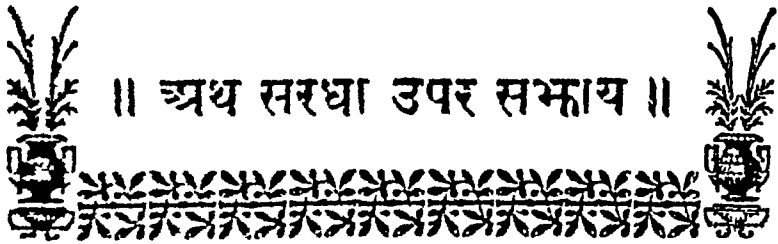
॥ अथ सरधा उपर सझाय ॥

देसी आरसी की ।

देव गुरु धर्म सुध आराध्यां । समकित होवे तंत सारसी ॥ यथा तंत दिस मांहि दरसावे । जिम मुख दिसे आरसी ॥ सरधा विन प्राणी ओलो जनम युंही हारसी ॥ सरधा ॥ १ ॥ वरस छवमासी तप वहु । किधा जगन पद नवकारसी ॥ सुर सुख भोग रुल्यो चिहुं गतमें । नही आयो धर्म विचारसी ॥ सरधा ॥ २ ॥ संका कंषा दुरगति लेज्यावे ।

ते नरदुर निवारसी ॥ साची सरधा जे नर धारे । ते नर आतम तारसी ॥ सरधा ॥ ४ ॥ कुगुरु संगत नर भव हारी । दुरगत मांय पधारसी ॥ भव भव मांहि रुले चिहुं गतमे । नही हुवे छुट कारसी ॥ सरधा ॥ ५ ॥ पढ़ पढ़ पोथा रह गया थोथा । संस्कृतने फारसी । विना विचारी खोटी भाषा वोले । ते किम पार उतारसी ॥ सरधा ॥ ६ ॥ सुध साधाने आल देइने । डूब गया काली धारसी ॥ कोइ सुध साधारी किरत वोले । ते नर जन्म सुधारसी ॥ सरधा ॥ ७ ॥ सुध साधांरी निन्दा कर कर आतम किम उवारसी ॥ नरकां जावे माहा दुख पावे । परमा धांमी मारसी ॥ सरधा ॥ ८ ॥ इम सांभल उतम नरनारी । सीख सतगुर की धारसी ॥ सुध साधांरी कर कर सेवा । आतम कारज सारसी ॥ सरधा ॥९॥ सुध साधांरी सुधी सरधा वसला नन्दण सारसी ॥ सुधी सरधास्युं शिवगत जायां । आवा गमण निवारसी ॥ सरधा ॥ १० ॥ सुध श्रावकारा व्रतज पालो । दुरगत दुख विडारसी ॥ जन्म मरण जोख मिट जावे । पावे सुख अपारसी ॥ सरधा ॥ ११ ॥ मत्सर भाव साधांसुं राखे । वेगोइ पुन्य परवारसी ॥ इण भवमांहि निजरा देखो । वीटला हुवे विकारसी ॥

सरधा ॥ १२ ॥ गुण विना सेवा करे साधांरो । नहीं सरे गरज लिगारसी ॥ कोइ हीण आचारी आपही डूवे । तिहां तुजकिम निस्तारसी ॥ सरधा ॥ १३ ॥ सुर सुख सेवे जे नर पावे । तप कर देही गारसी ॥ पंच आश्रव परहरो प्राणी । ममता मनरी मारसी ॥ सरधा ॥ १४ ॥ तश्या तरे ने तरसी वाला । नहीं करे पाप लिगारसी ॥ उतम वयण धर सिर उपर । ते उतरे भव पारसी ॥ सरधा ॥ १५ ॥ उगणीसे बीस विद चवदस । मास कातीक सुख कारसी ॥ शहर राजगढ़ दिपमालका जोड़ करी तंत सारसी ॥ सरधा ॥ १६ ॥

॥ अथ अनाथी मुनीको स्तवन ॥

राय श्रेणिक वाड़ी गयो। दीठो मुनि एकंत ॥ रूप देखी अचरज थयो। राय पुछेरे कुण वीरतंत ॥ श्रेणिक रायहुं रे अनाथी निग्रंथ। मेंतो लिधोरे

साधुजी रो पंथ ॥ श्रेणिक ॥ १ ॥ कोसम्बी नगरी हुंती । पितामुज पर बल धन ॥ पुत्र परवार भर पूरस्युँ तिणरो हुं कुंवर रतन ॥ श्रेणिक ॥ २ ॥ एक दिवस मुज वेदना उपनी । सो स्युं खमियन जाय । मात पिता भूखा घणा । न सक्यारे मुज वेदना बंटाय ॥ श्रेणिक ॥ ३ ॥ पिताजी म्हारे कारणे । खरच्या बहोला दाम ॥ तोपिण वेदना गइ नही । एहवोरे अथिर संसार ॥ श्रेणिक ॥ ४ ॥ माता पिण म्हारे कारणे । धरती दुःख अथाय । उपावतो किया घणा । पिणम्हारेरे सुख नही थाय ॥ श्रेणिक ॥ ५ ॥ बन्धु पिण म्हारेहुंता । एक उदरना भाय ॥ उषध तो बहु विध किया । पिण क़ारीन लागी काय ॥ श्रेणिक ॥ ६ ॥ बहिनां पिण म्हारे हुंती । वड़ी छोटी ताय । बहुविध लुण उवारती पिण म्हारेरे सुख नहीं थाय ॥ श्रेणिक ॥ ७ ॥ गोरडी मन मोरडी । गोरडी अबला बाल । देख वेदना म्हायरी न सकीरे मुज बेदना बंटाय ॥ श्रेणिक ॥ ८ ॥ आंखां बहु आंसु पडे । सिंच रही मुजकाय ॥ खाण पाण विभुषा तजी । पिण म्हांरेरे समाधी न थाय ॥ श्रेणिक ॥ ९ ॥ प्रेम विलुधी पदमणी । मुजस्युँ अलगी न थाय ॥ बहुविध बेदना मे सही । बनिता रहीरे बिल लाय

॥ श्रेणिका ॥ १० ॥ वहु राजवैद बुलाविया । किया अनेक उपाय ॥ चन्दन लेप लगाविया । पिणम्हारेरे समाधी न थाय ॥ श्रेणिक ॥ ११ ॥ जुगमे कोइ किणरो नहीं । तव मै थयोरे अनाथ ॥ वितरागनीरे धर्म विना । नाहीं कोइरे मुगतीरो साथ ॥ श्रेणिक ॥ १२ ॥ वेदना जावे म्हायरी । तोलिउं संजम भार ॥ इम चिन्तवतां वेदना गइ प्रभातेरे थयो अणगार ॥ श्रेणिक ॥ १३ ॥ गुण सुण राजा चिन्तवे । धन २ एह अणगार ॥ राय श्रेणिक समकित लीवी वान्दी आयोरे नगर मझार ॥ श्रेणिक ॥ १४ ॥ अनाथी जीरा गुणगांवता ॥ कटे कर्मांरी कोड गुण सुण सुन्दर इम भणे । ज्याने वन्दुरे वेकरजोड़ ॥ श्रेणिक ॥ १५ ॥
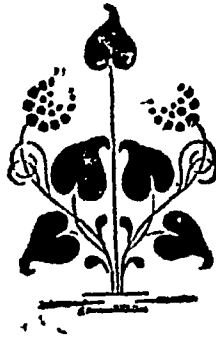
अथ जिन कल्पी साधुकी ढाल लीख्यते

जिन कल्पी कष्ट उदेरिने लेवे। परिसाहा सहै समपरिणामोंरे॥ आक्रोस विविध प्रकारना उपजे। तोइ उदेरिन जावे तिण ठामोरे॥ सूरां वीरांरो ओसुध मारग॥ १॥ मास मास खमण कोइ करे निरन्तर। इतरा कर्म काटे एक छिन मेरे॥ बचन कुवचन सहै सम भावे। राग द्वेषन आणे मुनि मन मेरे॥ सू०॥ २॥ मास सवा नव जीव रह्यो गर्भमें। तोए दुःख कितरा दिन कारे॥ एम विचार सहै समभावे। सूर मुनि द्रढमनकारे॥ सू०॥ ३॥ लाभ अलाभ सहै समभावे। बले जीतव मरण समानोरे॥ निन्दा अस्तुति सुख दुःख समचित। समगीणे मान अपमानोरे॥ सू०॥ ४॥ बाइस तेतिस सागर तांइ। जीव बसियो नर्क मझारोरे॥ तो किंचित दुःखसुं सुं टलगीरी। एम बिमासे अणगारोरे॥ सू०॥॥ ५॥ मेघ सरिषा मोटा मुनिश्वर। कियो पादुप गमण संथारोरे॥ खोलीमें जीव छतां तन त्याग्यो। एकमास पहली गुण धारोरे॥

सू० ॥ ६ ॥ सालिभद्रने धनें सरीषा । ज्यारो सुख माल तन श्रीकारोरे ॥ त्यांपिण मास मास खमण तप किधा । वले पादुप गमण संथारोरे ॥ सू० ॥७॥ रोग रहित तिर्थंकर नो तन । तेपिण लेवे कष्ट उदिरोरे ॥ तो सहजांहीं रोगादिक उपना आइ । तो समा परिणामां सहे सूर वीरोरे ॥ सू० ॥ ८ ॥ इत्यादिक मुनि स्हामीं देखी । ते कष्ट पड्यां नहीं काचारे ॥ अल्पकालमे शिव सुख पामें । सूर सिरोमणी साचारे ॥ सू० ॥ ९ ॥ नरकादिक दुःख तिव्र वेदना । जीव सहि अनन्ती वारोरे ॥ तो किंचित वेदना उपना माहामुनि । सहे आणी मन हर्ष अपारोरे ॥ सू० ॥१०॥ ए वेदनाथी हुवे कर्म निर्जरा । ए वेदन थी कटे कर्मोंरे ॥ पुन्यरा थाट बंधे सुभ जोगे । वले हुवे निर्जरा धर्मोंरे ॥ सू० ॥ ११ ॥ समचित वेदन सुखरो कारण । ए वेदनथी कटे कर्मोंरे ॥ सुर शिवना सुख लहे अनोपम । वले हुवे निर्जरा धर्मोंरे ॥ सू० ॥ १२ ॥ सम भावे सह्या होवे निर्जरा एकंत । असम भावे सह्या होवे पाप एकंतोरे ॥ ठाणा अंग चोथे ठाणे श्रीजिन भाख्यो । इम जाणी समचित सहे संतोरे ॥ सू० ॥ १३ ॥

इति संपूर्णम् ।
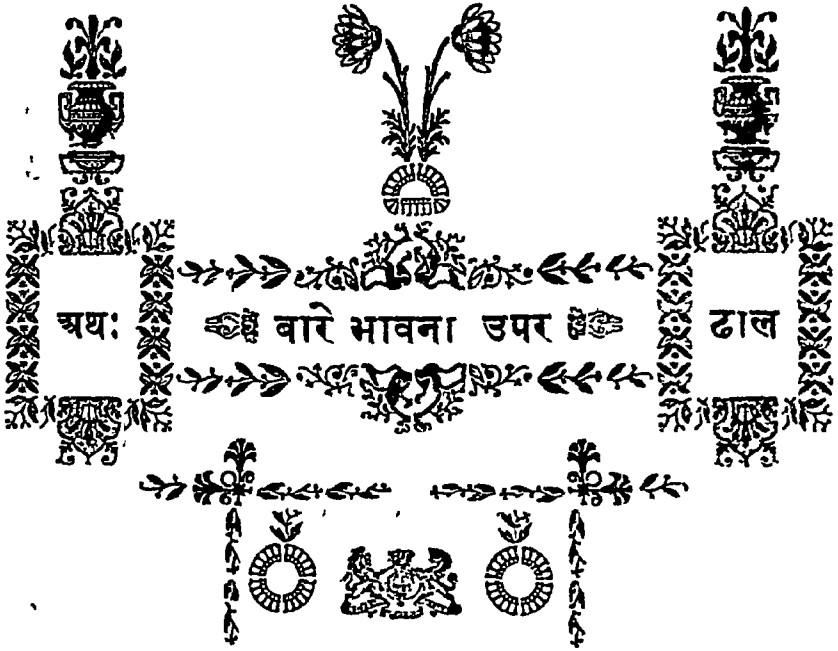
(नमिनाथ अनाथांरी नाथोरे एदेशी)

आदिनाथ अरिहन्त आख्यातोरे । वडो पुतर भरत विख्यातोरे ॥ अनित्य भावना भाइ साख्यातो । माहामुनि मोटका नित्य वन्दोरे ॥ १ ॥ गढ मढ मंदिर पोल प्रकारोरे । नर इंद्र सुरेन्द्र सारोरे ॥ नित्य नहीं सहु नर नारो ॥ माहा ॥ २ ॥ असर्ण भावना ऋषी अनाथीरे । एक जिन धर्म जीवरो साथीरे ॥ संजम पाली मुगत संघाती ॥ माहा ॥३॥ संसार भावना सालिभद्र भाइरे । अधिक वैराग मन आइरे ॥ संजम लेइ स्वार्थ सिध पाइ ॥ माहा

॥ ४ ॥ नमिराय ऋषेश्वर जागीरे । एकत्व भावना उर आणीरे ॥ मुनि जाय पहुंता निरवाणी ॥ माहा ॥ ५ ॥ पंखीनो पर भावना भल भाइरे । कुंवर मृघापुत उर भाइरे ॥ संजम लियो परवार सम-भाइ ॥ माहा ॥ ६ ॥ चोथा चक्री सनत कुमारोरे । असुच भावना भाइ अपारोरे ॥ राज छांडि संजम व्रत धारो ॥ माहा ॥ ७ ॥ समुद्र पाल एलाची दोइ रे ॥ आश्रव भावना जोइरे ॥ दोनूं मुगत गया कर्म खोइ ॥ माहा ॥ ८ ॥ वागणी केशी हर केशीरे ॥ सम्बर भावना उर वैसीरे ॥ हर केशी मुगत वरेसी ॥ माहा ॥ ९ ॥ निर्मल निर्जरा भावना भाइरे । छव मासि कर्म खपाइ रे ॥ अरजन माली अनन्त सुख पाइ ॥ माहा ॥ १० ॥ लोक सार भावना लीव लागीरे । शिवराज ऋषेश्वर जागीरे ॥ प्रभुपे संजम लिइ वैरागी ॥ माहा ॥ ११ ॥ अठाणवे पुतर आयारे । आदेश्वरजी समझायारे ॥ बोध दुलभ भावना भाया ॥ माहा ॥ १२ ॥ धर्मरुची ऋषिरायोरे । धर्म भावना ते भायोरे ॥ दया पाली स्वार्थ सिध पायो ॥ माहा ॥ १३ ॥ एबारे भावना जे भावेरे । ते नर माहा सुख पावेरे ॥ वेगो मुगत नगरमें जावे ॥ माहा ॥ १४ ॥ समत ते गावे वरस अठारोरे ।

कातीवद नवमी भोमवारोरे । जोड किधी मालवा गांव मझारो ॥ माहा ॥ १५ ॥
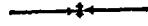
अथ सीलकी नव बाडकी ढाल ।

श्रीसतगुरु पाय नमी करी । श्रीजिन वरनी बाणीरे ॥ उत्ताध्येन सोलमे अध्येन । ब्रह्मचार्यांरी बाड बखाणीरे ॥ ब्रह्मचारि नव बाड विचारो ॥१॥ स्त्री पशु पंडक तिहां थानक । ब्रह्मचारी तिहां टालेरे । मुसा मंझारी ने द्दष्टंते । प्रथम बाड इम पालेरे ॥ ब्र० ॥ २ ॥ स्त्री कथा करे नही मुनिवर । सुर नरनो मन डोलेरे ॥ निर चले निंबुरी बात सुणंता । दुजी बाड इम बोलेरे ॥ ब्र० ॥ ३ ॥ पीढ फलग सेझ्यां नही बैठे । नारी बैठे तिण ठामो रे ॥ बाक टूटंता उसणता आटो । बडकाचर फल नामोरे ॥ ब्र० ॥ ४ ॥ नेह धरी नारी रूप निरखे । फरसे अंग उपंगोरे ॥ निजर झाख्यो

सुरजथी देख्यां। चोथी वाड व्रत भंगोरे ॥ व्र० ॥५॥ न रहै सीलवन्त भितर अन्तर। न सुणे जांझरनो झमकोरे ॥ हांस विलास रुदन सेवत। दृष्टन्त गाजे मोर ठमकोरे ॥ व्र० ॥ ६ ॥ पुर्वला काम भोग मति चितारे। तिणस्युं आरत उपजे अधिकोरे ॥ अग्न वधे इंधणरी संगत। छाछ वटाउ दृष्टन्तोरे ॥व्र०॥ ७ ॥ सरस आहार विगै वली इधको। भोगव्यां विष घाय वध तोरे ॥ सनिपात वधे दुध मिश्री पीधां। तिणस्युं विगै लोजे तुं सदतोरे ॥ व्र० ॥८॥ अति मात इधको जीमे। काम भोग विषय रस जागे रे। सेरग ठांवमे दोय सेर डरे। तो आठमी वाड इम भागेरे ॥ व्र० ॥ ९ ॥ चावा चंदन चरचे अंगा। आभुषण अति चंगोरे ॥ छगन मगन हुवे वेस वणावे। नवमी वाड व्रत भंगोरे ॥ व्र० ॥१०॥ रतन अमोलक इधक अनोपम। जिण तिणने देखावेरे ॥ रांकारे हातस्युं खोसी लेवे। ज्यु सील रतन नगमावेरे ॥ व्र० ॥११॥ सील पालेते सुखीया होसी। अखी होसी नर नारीरे। सुत्र वचन जो सरधे संवला। तो मुगत जासी व्रत धारीरे ॥ व्र० ॥ १२ ॥ इति ॥

जयाचार्य कृत

श्रीभिषणजी स्वामीके गुणाकी ढाल ।

स्वाम भिच्चु प्रगटे । जगमांहि किरत थइरे ॥ श्रीजिन आगा सिर धरी । बर न्याय बाता कहिरे कहिरे स्वाम सांचा अद्भुत बाचा कहिरे ॥ १ ॥ आगु च उला ध्येनमें । दूगा आर पंचम मंहिरे । जिन बिना शिवपंथ होसी । संत तंत सहिरे ॥ सहिरे ॥ स्वा० ॥ २ ॥ समत अठारा तेपना पछै । सुत्र संग छ्धथ थइरे । बंक चुलिया मांहि बारता । तुं जोय प्रतच्च सहिरे ॥ सहिरे ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ स्वाम पारश सारिषा । चिन्तामणी कर लहिरे ॥ भवदधि पोत उद्योत करवा । स्वाम सूरज सहिरे ॥ सहिरे ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ स्वाम भिचू समरिया । उगणीस चवदे मंहिरे । बिदासर चौमासमें जय जश किरत थइरे ॥ थइरे ॥ स्वा० ॥ ५ ॥

जयाचार्य कृत

श्रीभिषणजी स्वामीके गुणांकी ढाल ॥

नन्दण वन भिच्चू गणमें वसोरी। हेजो प्राण जावे तोड़ पग म खीमोरी ॥ नन्दण ॥१॥ गण मांहि ग्यान ध्यान सोभेरी। हेजो दिपक मंदिर मांहि जिसोरी ॥ नन्दण ॥ २ ॥ अवनितकी देसना नदि-पेरी। हेजी गणिका तणो सिणगार जिसोरी ॥ नन्दण ॥ ३ ॥ टालो कडरो भणवो न सोभेरी। हेजी नाक विना थोती मुखडो जिसोरी ॥ नन्दण ॥ ४ ॥ दुःखदाइ खुद्र जीवा सरीकोरी। हेजी नंदक टालो कड वमण जिसोरी ॥ नन्दण ॥ ५ ॥ सांसण में रंग रत्ता रहोरी। हेजी सुर शिव पद मांहि वास वसो-री ॥ नन्दण ॥ ६ ॥ भागवले भिखु गण पायोरी। हेजी रतन चिन्तामण पिण न दूसोरी ॥ नन्दण ॥ ७ ॥ गणपत कोप्यां गाढा रहोरी। हेजी समचित मांमण माहे हुलसोरी ॥ नन्दण ॥ ८ ॥ आड डोड चितमें म आणोरी। हेजी मोह कर्मरो तजदो न सोरी ॥ नन्दण ॥ ९ ॥ खेल खीलाड्यांरा याद करो री। हेजी अचल रहो पिण मतिरे सुसोरी ॥ नन्दण

॥ १० ॥ बार बार सुं कहिय तुनेरी । हेजी अडिग पणे थेतो गणमें बसोरी ॥ नन्दण ॥ ११ ॥ उगणीसे गुण तीस फागुणरी । हेजी जय जश आणामें सुख विलसोरी ॥ नन्दण ॥ १२ ॥

श्रावक सोभजी कृत

श्रीभिक्षू गणीके गुणाकी ढाल ।

मोटो फंद इण जीवरे रे । कनक कामणी दोय ॥ उलझ रह्यो निकल सकुं नहिंरे । दर्शणरो पड्योरे बिछोय ॥ स्वामीजीरा दरशण किण विध होय ॥१॥ कुटम्बी ऋधसुं राचियोरे । अन्तराय सुजोय ॥ मंगलीक दर्शण श्रीपुजनारे । मुगत पहुंचावे सोय ॥ स्वा० ॥ २ ॥ संसाररो सुख दुःख भोगव्यांरे । कर्म तणो बंध होय ॥ दर्शण नन्दण वन जिसोरे । कर्म चिन्ता देवे खोय ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ दान दया बोध बीजनेरे । हिरदे में दीज्यो पोय । परदेशां गुण विस्तरेरे । ज्युं सोने में रतन जडोय ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ चोरी जारी आद ओगण तजोरे । इण भव परभव दोय ॥ खरची पुरब भव तणीरे । श्रीपुज

विना कुण पुगोय ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ साचे मोतीज्युं वायक श्रीपुज्यनारे । हिरदे में लीज्यो पोय । ग्यान सागर आयां विनारे । जीव मैल किम धोय ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ सोम दर्शण श्रीपुज्य नारे । हिरदेमे लीज्यो पोय ॥ सागर ज्युं गुण पुजनारे । गागर ज्युं कीम टालोय ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ गुण विना दर-शण भेषनारे । कर २ डूबे सोय ॥ पुज विना दर्शण किंरा करुंरे । आप समो नही कोय ॥ स्वा० ॥८॥ पाषण्ड जाडो इण भरतमें रे । भिक्खनजी दियो रे विगोय ॥ भिनो चिरज्युं जुवान मरोडमेरे । ज्युं चरचा मे लियारे निचोय ॥ स्वा० ॥ ९ ॥ धुंवों अमर घासनों रे । कस्तुरी संग लिपटोय ॥ ज्युं चित दरशण मांहिरो । आप इसो लियोजी मनमोय ॥ स्वा० ॥ १० ॥ मीन काटे में तड फडेरे । कद मिलसी मुझ तोय ॥ ज्युं तड़ फड़े तुज आविकारे । कमल जेम कमलोय ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ कृषणीरो मनमेहथीरे । वादल वरसे सोय । पपइया मोर पुकारता । ज्युं म्हे वाट रह्या सर्व जोय ॥ स्वा० ॥ दर्शण श्रीजी दुवार मेरे । सेवक दिपक जोय ॥ भाण भलो जद उगसी । सोभो चरणा स्युं कमल लगोय ॥ स्वा० ॥ १२ ॥

॥ जयाचार्य कृत ॥

अथ मरियादा उपरढाल ।

मुणिन्द मोरा । भिषुने भारिमाल । वीर गोयम री जोडीरे । स्वामी मोरा ॥ घति भलीरे । मोरा स्वाम ॥ १ ॥ मुणिन्द मोरा । आप मांहि तथा गणमें जाण । सुध संजम जाणो तीरे ॥ स्वा० ॥ रहिवो सहीरे ॥ मोरा० ॥ २ ॥ मुणिन्द मोरा । ठाणास्युं रहिवारा पचखाण । वली अनन्त सिधारी साखेरे ॥ स्वा० ॥ समसहिरे ॥ मोरा० ॥ ३ ॥ मुणिन्द मोरा । अवगण बोलणरा त्याग । गणमें अथवा बाहिररे ॥ स्वा० । विहुंतणोरे मोरा० ॥४॥ मुणिन्द मोरा । मुनिवर जे माहा भाग्य । एह मरियाद आराधेरे ॥ स्वा० । हित घणोरे मोरा० ॥ ५ ॥ मुणिन्द मोरा ॥ तीजे पट ऋषराय । खेतशीजी सुखकारीरे ॥ स्वा० । मुनि पितारे ॥ मोरा० ॥ ६ ॥ मुणिन्द मोरा ॥ समदम उदधि सुहाय । हेम हजारी भारीरे ॥ स्वा० । गुणरत्तारे मोरा० ॥ ७ ॥ मुणिन्द मोरा । जय जशकरण जिहाज । दिपगणी दिपकसारे ॥ स्वा० माहामुनि रे ॥ मोरा० ॥

६ ॥ मुणिंद मोरा। गणपतिमे सिरताज। विदेह थेत्र प्रगटियारे ॥ स्वा०। माहाधुमीरे ॥ मोरा० ॥ ७॥ मुणिंद मोरा। अमिश्रचंद अणगार। माहातपस्वि वैरागोरे ॥ स्वा०। गुणनिलोरे ॥ मोरा० ॥ ८ ॥ मुणिंद मोरा। जीत सहोदर सार। भीम जवर जयकारीरे ॥ स्वा०। अतिभलोरे ॥ मोरा ॥ ११ ॥ मुणिंद मोरा। कोदर तपस्वो करूर। रामसुख ऋषि रुडोरे ॥ स्वा०। राजतोरे ॥ मोरा० ॥ १२ ॥ मुणिंद मोरा। शिवदायक शिवसुर सतीदास सुख-कारीरे ॥ स्वा०। गाजतोरे ॥ मोरा० ॥ १३ ॥ मुणिंद मोरा। उभय पिथल वर्धमान। साम राम युग वंधवरे ॥ स्वा०। नेमसुंरे ॥ मोरा० ॥ १४ ॥ मुणिंद मोरा। हीर वखत गुण खाण। थीर पाल फते मु जपोयरे ॥ स्वा० ॥ प्रेमस्युंरे ॥ मोरा० ॥१५॥ मुणिंद मोरा। टोकरनै हरनाथ। अखय राम सुख रामजरे ॥ स्वा०। ड्रग्गकरे ॥ मोरा० ॥ १६ ॥ मु-णिंद मोरा। राम संभु शिव साथ। अवान मोती जाचारे ॥ स्वा०। दमीश्वकरे ॥ मोरा ॥ १७ ॥ मुणिंद मोरा। इत्यादिक वहु संत। बले समणी सुखकारीरे ॥ स्वा०। दिपतोरे ॥ मोरा० ॥ १८ ॥ मुणिंद मोरा। कलु माहागुणवंत। तीन चम्बव नी

मातारे ॥ स्वा । जीपतीरे ॥ मोरा० ॥ १९ ॥ मुणिंद मोरा । गंगा नै सिणगार । जैतां दोलां जाणीरे ॥ स्वा० । माहा सतीरे ॥ मोरा० ॥ २० ॥ मुणिंदमोरा । जीतां माहा जश धार । चम्पा आदि सयाणीरे ॥स्वा०। दिमतीरे ॥ मोरा० ॥ २१ ॥ मुणिंद मोरा । सांसण माहा सुखकार । अमर मुरी अदृष्टायकरे ॥ स्वा० । दायकारे ॥ मोरा० ॥ २२ ॥ मुणिन्द मोरा । दववन्ती जैयन्ती सार । अनुकुल बली इन्द्राणीरे ॥ स्वा० । सहायकारे ॥ मोरा० ॥ २३ ॥ मुणिन्द मोरा । उगणी से पनरे उदार । फागुण सुध तिथि दसमीरे ॥ स्वा० । गाइयोरे ॥ मोरा० ॥ २४ ॥ मुणिन्द मोरा जय जश सम्पति सार । बिदासर सुख सातारे ॥ स्वा० ॥ पाइयोरे ॥ मोरा० २५ ॥

॥ छोगजी कृत ॥

श्रीपुज्यगणीके गुणाकी ढाल ।

(देशी असवारीकी)

गादी बीर गणेश्वर गहरा । भिक्षू मघ इधकारी ॥ समय बुज दधि सार बिलोकी । प्रगट कियो । मग सारीजी ॥ महाराजा थांरी सोभत गण बन क्यारी ॥

सांसण मत जिन इन्द्र तणीपर । लागत छिव भवि प्यारी ॥ १ ॥ धर्म नागेन्द्र सभीवर सखरी । आपथया असवारी ॥ आण सैन्यांकर भाल अनोपम । पाखंड मत दियो पारीजी ॥ माहा २ ॥ गण वृध करण वरण शिव वांधी । वर मरियाद उदारी ॥ एक गणपतनी आणांमें रहिवो । मुनि मघ लग इकतारीजी ॥ माहा राजा थारी मरियादा सुखकारी ॥ वर भिक्षूना वयण आराध्यां उभय भवे हितकारी ॥ ३ ॥ कर्म जोग गण वाहिर निकसे । एक वेवण जे अविचारी ॥ तेह भणी साधु नहीं गीणवो । वलि नहीं तिर्थ मझा-री जी ॥ माहा ॥ ४ ॥ इम वहु लीखत लीखीं हद मालं । थाप्या गण सिणगारी ॥ गुण जश परिमल महक रही वर । गणी सुधर्म जिमधांरीजी ॥ माहा ॥ ५ ॥ सितांसुसाहश सीतलता । सांत दांत सुखकारी ॥ जंवु स्वाम जिसा पट तीजे । राय शशि ब्रह्म चारी जी ॥ माहा ॥ ६ ॥ पाट चतुर्थ जवर गणीजय । इधक कियो उजियारी ॥ वर मरियाद स्युं कोट ओट कर । उपम करी विपतारीजी ॥माहा॥७॥ मुनि अज्या पुस्तक गण वृधी । दिन २ इधक तुमारी ॥ आदेज वयेण अधिक पुन अतिसय । अरिहन्त ज्युं इण आरीजी ॥ माहा ॥ ८ ॥ जो जिनदेखन हुं सहुवे दिल

तो देखो नी जय दिदारी जो मन खंत करण प्रश्नरी। तोगणी श्रुत केवल धारीजो ॥ माहा ॥ ६ ॥ वीर गोयमरी जोड़ निरखणारी। हुवे भवि मन मझारी ॥ तो जय गणपत मुनि मघवा वर। पेखल्यो नयेन निहारीजो ॥ माहा ॥ १० ॥ सहु मुनि मंडण करण आणन्दन। मुनि मघराज नितारी ॥ वर गुण वृन्दण सुखकों कान्दण। पद युगराज प्रकारीजो ॥ महाराजा थारा। सिष्य बडा सुखकारी ॥ मतिवन्ता युगराज मुणिन्दरी जोग मुद्रा छिव प्यारी ॥ ११ ॥ विनय विवेक विचक्षण बारु। मुनि अज्याहितकारी ॥ सतिय गुलाब तणीवर महिमां। सतियांमें सिणगारीजो ॥ महाराजा थारी। सिषणी माहा सुखकारी ॥ पद युग राज़ तणी वर बहनी। गण वत्सल गुणसारी ॥ १२ ॥ उगणीसें वर्ष तीस माहाग वर। सुक्ल सप्तमी सारी ॥ वर गणीराज मरियाद द्रिढावत। केण हर्ष हुं सियारीजो महाराजाथारी। मरियादा सुखकारी ॥ वर भिक्षूना वयण आराध्यां। उभय भवे हितकारी ॥

॥ इति ॥

श्रीपुज्य गणीके गुणांकी ढाल ।

(धीठाम धीठमे क्या विगाड्या तेरा एदेशी)

माहावीर गादी धर सोहे । भिखू गणी गुण वृन्दा ॥ जो निमल मणी युग नाग भागमा । प्रगव्या जेम जिणन्दा ॥ भिखूगणीराज धण्या तंत पंथ तेरा ॥ लेवा शिवराज निरणाय किया भलेरा। जो विवध मरियादा वरवहु वांधो आगम न्याव नवेडा ॥ भिखू ॥ १ ॥ एक वेलण ने आद टोलाथी । निकसे दुरमति वरणा ॥ जो वे मुख नन्दक टालोकार चिहुं तिरथमें नहीं गीणना ॥ ज्ञानी गुणवन्ता न करणा सप्रसंगा ॥ सुगुणा मतिवन्ता जाणे तास भुयंङ्गा ॥ २ ॥ कलुष भाव गणपतना गणथी । आणे निपट निरलजा ॥ जो कुरव कायदो सवही खोवे । वांधे अपयश ध्वजा ॥ पुद्गल्ल सुख वरवा समकित चर्ण गमावे ॥ लागे फल कडवा जगमें फिट फिट थावे ॥ ३ ॥ गणपतने गण थी गुणवन्ता । अनुकुल्ल लीन सुचंगा ॥ जीमुक्ती हल भल्ल माल्ल मरीपा लागे विनय प्रसंगा ॥ सांसण वन रमीयां मिटे जन्म मृत्यु फेरा ॥ गणी आणांमें वेयां देवे मुगत गढ डेरा ॥४॥ भिखू भारिमाल नृप इन्दु । चौथे जय माहाराजं ॥ जो आछी जिनमग ओप चढाइ माहावीर सम आजं ॥ गणाधिप गणपत तुम

चरणे चितमेरा ॥ दिजे शिव सम्पत सर्ण लियामें तेरा ॥ ५ ॥ शशि सम सोम प्रकृत मुखमालं । अति सय धर युगराजं । जी सतियां मांहि सति सीरोमण। गुलाब कुंवर सिरताजं ॥ मुनिराज सतियां धरे सिस जय सीक्षो ॥ युगराज मुणिन्द मघराज तणी ग्रहो सीखो ॥ ६ ॥ उगणीसे गुण तीस माहाग सुद । बिदासर रंगरेला । जी मरियादा मोत्सव दिन निका चिहुं तिरथां ना मेला ॥ भिक्षू गणीराज धर्या तंत पंथ तेरा ॥ ७ ॥

इति ॥

॥ मोतीजी स्वामी कृत ॥

श्रीपुज्य गणीराजके गुणाकी ढाल ।

पंचम आरे मझार ॥ हो सुखकारीरे सुगणा ॥ भिक्षू प्रगटे भविजन ॥ भवो दधि तारबारेलोय ॥ आगम बच अनुसार ॥ हो सुखकारी रेसुगणा ॥ मानुं जिन जिम जाहिर । जगत उधारबारे लोय ॥ १ ॥ तुम वाणी है जाणी अमिय समान ॥ हो० । सु० । सु० । गुण खाणी हित आणीरे । धार्यां हिया मझेरे

लोय ॥ अजर अमर सुखदान ॥ हो० । सु० । सु० । मन वंछित कारज । सारे ते सहु सफेरे लोय ॥ २ ॥ रटतां जिहां तुम नाम ॥ हो० । सु० । सु० । कटता पुद्गल प्यासारे । फटता कर्म रिपुरे लोय ॥ पटता शिव सुख धाम ॥ हो० । सु० । सु० । हटता पुदगल प्यासारे । घटता जे वपुरे लोय ॥ ३ ॥ साठे भिक्षू कियोहि संथार ॥ हो० । सु० । सु० । सात पोहर लग पालीरे । परभव पांगस्यारे लोय ॥ तसु पट गरु मल सार ॥ हो० । सु० । सु० । जंबु स्वाम तणी पर । नृपशशि संचस्यारे लोय ॥४॥ चतुर्थपये जय जयवन्त ॥ हो० । सु० । सु० । मघराजा युगराजारे । सरद शशि जिमोरे लोय ॥ मतीय गुलाबांजी गुण-तंत ॥ हो० । सु० सु० । भाद्रवे सुक्ल त्रयोदशी । मन आणन्द हुसोरे लोय ॥ ५ ॥
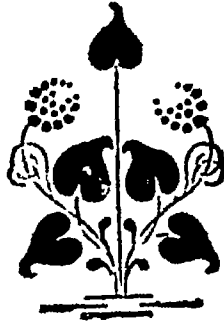
श्रीकालु गणीराजके गुणाकी ढाल

श्रीकालु गणिन्द समेररे ॥ ए आंकडी ॥ पंचम आरकि धराधुर जिनसम । प्रगटे भिक्खू मुनिवररे ॥ पुज्य तणी प्रतीत राखकर । मुगत पंथ पग धररे ॥ धररे२ धररे ॥ श्रीकालु ॥ १ ॥ भिक्खू सिधान्त मांहि फरमायो । ठाम ठाम जिनवररे ॥ तेहिज नाम आय अवतरिया । दिपां उर गणी वररे ॥ वररे २ वररे ॥ श्रीकालु ॥ २ ॥ तसु पाटोधर हुव मुनिश्वर । नृप शशि पट पुसकररे ॥ युग पट जीत जबर जोगेन्दा । सरपट सघ अघ हररे ॥ हररे २ हररे ॥ श्रीकालु ॥ ३ ॥ पटथट षट किया अति माणिक । सप्तम डाल्ल समररे ॥ जबर आचारज हुवा भरतमें । तसु आणा सिरधररे ॥ धररे२ धररे ॥ श्रीकालु ॥ ४ ॥ वसु पट स्वाम कालु गुण सागर । आगर जिम बुधि धररे ॥ शशि सम विमल गंभीर दधिसम । तसु नमण करजोडी कररे॥ कररे२ कररे ॥ श्रीकालु ॥५॥ मानव नों भव दुलभ जेहनी । आसा करत अमररे॥ पुन्य उदय सतगुरनी

संगत । आगा मिल्यो अवसररे ॥ सररे २ सररे ॥ श्री कालु ॥ ६ ॥ करम दरश सफर्स चरण मुज । मन अभिलाषा कररे ॥ पिण अघ उदय नहोसके प्रभु । होसीते दिवस जवररे ॥ जवररे २ जवररे ॥ श्रीकालु ॥ ७ ॥ शशि निध षट सप्त अरध काती सम । लछमी दिन सुखकररे ॥ हस्त मुख हर्ष सुंगावे । अल्प वुधि अनुसररे ॥ सररे २ सररे ॥ श्रीकालु ॥ ८ ॥

(अवतो सुरत दीखावोजी जोडीरा भरतार एदेशी)

स्वामी म्हारा दूणहिज पंचम आर। भविजन तारण भिन्नू प्रगटे भरत मझार॥ प्रगटे भर्थ मझार॥ सादृश जिनवर जिम अवतारहो॥ प्रगटे भर्थ मझार। सादृश जिनवर जिम अवतार॥ देखो तेरा पंथ तंत सार। हुं वलिहारी बारुंवार॥ थिर मन करके सेवो कालु गण सिणगार॥ १॥ स्वामी म्हारा तसु पट इण मुणिन्द। तृतीय पट नृप इन्दु सोहै। जिम उडूगणमें चंद॥ जि० २ ज्यांरो तपतो तेज दिनन्द हो। जि० २ गाजे हरिवर जेम गणिन्द। ज्यांरो नाम लियां निस्तार॥ थिर॥ २॥ स्वामी म्हारायुग जय

जश सुखकार। शर पट मघ अघ हरियाजी। क्षमा खड्ग कर धार॥ क्ष० २ रस पट माणिक गण सिणगारहो। क्ष० ज्यांरि महिमा अगम अपार। हुं नित वन्दु वार हजार॥ थिर॥३॥ स्वामी म्हारा पर्वत पट डालचंद। वसुपट पे शट छाजेजी। कालु गणइन्द॥ का० २ माता सती छोगांजीरा नंद हो। का० ज्यांने सेवे सुर नर वृन्द। ज्यांरो तेजस्वी दिनकार॥थिर॥४॥ स्वामी म्हारा गुण पट तीस उदार। उपम षट दश सोहे जी। मन मोहे नरनार॥ म० २ ज्यांरि अष्ट सम्पदा सार हो। म० ज्यांरि वाण सुधामृत धार। ज्यांरे गुणको छेह न पार॥थिर॥५॥स्वामी म्हारा सायर जेम गंभीर। रविवत तेज सवायोजी। मेरु नी पर थिर॥ मेर अतिसय ओपत जिम माहावीर हो। मे० वाणीनिर्मल गंगनो नीर। किरती छाइ लोकमझार॥ थिर ॥ ६ ॥ स्वामी म्हारा गुण को अन्त न पार। अमर पतिज्यो सहंस्र जिह्वा कर। गायां नविलह पार॥गा०२तो म्हारी कुण चिकार हो॥गा० म्हारे आप तणो आधार। नित उठ ध्याउं सांझ सवार॥ थिर ॥ ७ ॥ स्वामी म्हारा दास अरज अवधार। चतुर मास फरमावोजी। चंदेरी शहर मझार॥ चं० २ सुण २ हर्षे वहु नरनार हो। चं० थांरि वाणी सुण

सुखकार। भविजन भवसें उतरे पार॥ थिर॥ ८॥ स्वामी म्हारा शशि निध षट अरिधार। फाग मंजु चित चायो। तिथी प्रथम चंद्रवार॥ ति० २ काडू लाडणुं शहर मझार हो। ति० महाल हिरदय हर्ष अपार। गाडू अल्प बुधी अनुसार॥ थिर॥ ६॥

—:—

श्रीकालुगणी के गुणाकी ढाल।

(सोहीरे सयाणा अवसर माजे एदेशी)

श्रीभिक्षु पट अष्टमें छाजे। कालु गणिन्दा सिंह जिमगाजे॥ गुण षट तिसि सोभत स्वामी। अष्ट सम्पदा बहु बिध पामी॥ महेर करो मुज नगरी स्वामी। करो चौमासो अन्तर जामी॥ ए आंकड़ी॥ १॥ शशि सम सीतल वदन तुमारो। रवि सम तेज प्रताप तिहारो॥ पातिक दुर पुलायो स्वामी। तुम दरशण थी शिव सुख पामी॥ महे॥ २॥ खमा खङ्ग लियो प्रभु निको। देखी पाषंडि पडगया फिको॥ कल्प तरु सम नाथ हमारो। सेवा बंछित फल दातारो॥ महे॥ ३॥ प्रभुकी चरण कमल कुं भेटे। भव सागर रूलतां ने मेटे॥ प्रभुकी सीख सदा सुखकारी। सेवा पातिक दुर निवारी॥ महे॥ ४॥

महो निध गुणतर वर्ष सु मारो । चैत क्रस्न पञ्चमी गुरुवारो ॥ फूल फगर नेमों गुण गावे । रिझमें चतुर मामो चितचावे ॥ महेर करी मुज नगरी स्वामी करो चौमासो अन्तर जामी ॥ ५ ॥

॥ साध्वा सत्याजी महाराज श्री कान कंवरजी कृत ॥

श्रीकालु गणिराज के गुणाकी ढाल ।

पंचम अर्के प्रगट्यारे । पंचम अर्के प्रगट्या । कांइ भिक्षु भविजन कुंतारी ॥ निमल अनोपम युगल नाग स्युं । मिथ्या तिम्र मिथ्यो सारी ॥ अजी मिथ्या तिम्र मिथ्यो सारी ॥ अजी श्रीजिन सीको सिरधारी ॥ स्वाम भिक्षुनी मरियाद अछी है । सुख पावे तिरथ च्यारी ॥ १ ॥ वसु पाटो धर दिप तारे । प० । कांइ कालु गणी गुण जिहाज स्वामी ॥ द्रुधक उजागर गुण निध सागर । भवतरिया अन्तरयामी ॥ अजी भव० । अजी नमण करुंमें सिरनामी ॥ पर्वल पण्डिताइ देख गणिन्दकी । अहो २ भवि अचरज पामी ॥ २ ॥ समोसरण रचना भणीरे । स० । कांइ

संसकृतमें बाचंदा ॥ काव्य कोश टीका फरमावे। भवि जन सुणसुण हुल संदा ॥ अजी भवि० । अजी बहा वहा मुख क्षोगां नंन्दा॥ सभा सुधर्मी मञ्च तणी पर। वाक्य सुधा घन बर्षंदा ॥ ३ ॥ सांसण नन्दण बन जिसोरे। सां० । कांइ काम कुंभ जिम सुख दाइ॥ चिन्तामणी सम चिन्ता चुरक। किर्त लता रहीछाइ॥ अजी किर्त०॥ अजी मुगती देइ सर्णे आइ॥ दिनदयाल गरीब निवाजा। दया मया रखीय सारी ॥ ४ ॥ सतियां मांहि सोभतारे। स०। कांइ जेठाजी सती-सुखकारी ॥ समत उगणीसे। वर्ष अडसठे गुणगाया मेधर प्यारी ॥ अजी गुण० ॥ अजी मरियादा मोहोत्सव भारी। दिन क्रांती बधो सवाइ तपज्यो गणि वर ध्वतारी ॥ ५ ॥

श्रीगुलाब कंवरजी माहासत्यांजी माहाराज के गुणाकी ढाल।

स्मरण सुखकारीरे। करो नरनारीरे ॥ सतीरे गुलाब ॥ गुण गुलक्यारीरे। फैल्यो जश भारीरे।

सतीरे गुलाव ॥ ए आंकड़ी ॥ सतीतणो स्मरण करोरे । उगन्ते प्रभात ॥ स्मरण कर्‍यां संकट मिटे । ज्यांरा विघन दुराटल ज्यायरे ॥ स्मरण ॥ १ ॥ मुख सतीको इमो सोभतो । जाणे पुनम चंद ॥ जोवतड़ांरा नयैन ठरे । कांइ उपजे घणो आणन्दरे ॥ स्मरण ॥ २ ॥ सती सिरोवण गुण निल्लारे । ज्ञान गुणाकी जिहाज ॥ वीरमुख आगल चंद्रमाला । पुज मुख आगल हुंतापरे ॥ स्मरण ॥ ३ ॥ एकवेर स्मरण करे सती तणोरे । भव २ में गुण थाय ॥ उठ परभाते भजन करे ज्यांरा । पाप दुराटल ज्यायरे ॥ स्मरण ॥ ४ ॥ सतियांमे सारां सीरेरे । सती सीरे गुलाव ॥ गुण देखी कुरबवधावियो । ज्यारि किरत फेली चिहुं दिश मांयरे ॥ स्मरण ॥ ५ ॥ गण पतनी आज्ञा भणीरे । सतीपाले साक्षा सीख ॥ भविजनने प्रतिवोधिया । सती कर लियो मुगतनजिकरे ॥ स्मरण ॥ ६ ॥ समत उगणीसे वयालीसमेंरे । माहा सुद विज गुरुवार ॥ सती तणा गुण गाविया । आसापुरी शहर मझाररे ॥ स्मरण ॥७॥

अथः आषाढ मुनिको व्याख्यान ।

दुहा। सांसण नायक सुख करु। वंदु विरजिणंद। सेवकने सुर तरु समो। पुरण प्रमानन्द सहुको जिन वर उपदिशे। दान सील तप भाव। धर्म मुल एहीज धुरा भवसागरकी न्याव ॥२॥ भाव विसेषे भविकजन। एहमें अधिक सुजाण। भाव सहीत तप जप करे। तोपहुं'ते निर्वाण ॥ ३ ॥ भाव विना भत्ती किसी। भाव विनासी दीख। भाव विना भणवो किसो। भाव विनासी सीख ॥ ४ ॥ इण पर भावे भावना। जिम आषाढ मुनिस। कर्म मेल खेरु' करी। केवल लह्यो जगीश ॥ ५ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

राणा पुरो रलियामणोरे लालए देशी ॥ दक्षिण भरत माहि भलोरे लाल पुर्व दीश प्रधान ॥ सुख कारोरे ॥ राजग्रही रलियामणीरे ॥ लाल ॥ इन्द्रपुरी उपमान। सु। राज ॥ १ ॥ सोहै चोरासी चौहटारे

लाल। व्यापी कुप आराम। सु। अहो निसी जिहां रहे देवतारे लाल। तिहां रहिवा विश्राम। सु ॥२॥ लोक सकल सुखिया वसेरे लाल। धनकरी धनंद समान। सु। ले लाहो लछमी तणोरे लाल। पुरुपतिके पुन्यवान ॥ सु ॥ ३ ॥ अरिहन्त देवांरी आसतारे लाल। श्रावक कुल सिणगार। सु०। धर्म धुरंधरमें धुरारे लाल। छै द्वादश व्रत धार ॥ सु ॥ ४ ॥ नालंदे पाडे वसेरे लाल। तिहां श्रावकानी कोड़। सु। श्रीमुख वीर परसंसियारे लाल। घर माढ़ी साढ़ा कोड़। सु ॥५॥ पर्वत च्यारछै पाखतीरे लाल। विभार विपुलगीरी जाण। सु। उदय सोहन रता गीरीरे लाल। नाम जिसातिहां वखाण। सु ॥ ६ ॥ सालभद्र धनो तिहांरे लाल। एकादश गणधार सु। कर अणसण आराधनारे लाल। पुंहता मोष मझार ॥ ७ ॥ लाम्बो छात क्रीयाल छैरे लाल। प्रगट प्रसिध सुमाल। सु। चौदे चोमासा तिहां कियारे लाल। श्रीवीर जिणन्ददयाल। सु। ८ ॥ पहली ढाल पुरिथईरे लाल। अलवेला नी बात। सु। मान सागर कहे सांभलोरे लाल। नगरी तणो अवदात।
॥ सु ॥ ९ ॥

दोहा। ग्राम नगर पुर विचरितां। छाडी मन

अहंकार ॥ पंच सया स्युं परवरया । धर्म रुची अणगार ॥ १॥ समय सत्थ तिण अवसरे । राज ग्रही उद्यान ॥ तास शिष्य आषाढ़ मुनि । लब्धी गुण भंडार ॥ २ ॥

ढाल दूजी ।

तीन बोलां करी जीवनिजो अल्प आउ ।

मुनिवर वहेरण पांगरया ॥ सखी ॥ लेइ सतगरु आदेश । छठतणो छे पारणो ॥ सखी ॥ नगरीमें कियो प्रवेशरे । मुनिवर नव जोबन वेसरे । सोभे सिर लुंचित केशरे । चित लोभ नही लव लेशरे । मन मोहन गारोरे साधजी ॥ १ ॥ पतली उठी पछेवडी । सखी । मुनिवर अंग सुरंग । मयंगलनी पर मालतो । सखी । निर्मल गंग तरंगरे । जाणे लाग्यो चारित्र स्युंरंगरे । रूपेकरीजेम अनंगरे । जाणे छोड्यो प्रमादनो संगरे ॥ २॥ भमरतणी पर बहुभमे । सखी । लह मुनिवर सुध आहार । सुर तपे सिर आकरो । सखी । पिंड झरे जल धाररे । ऋषि उपशम रस भंडाररे । जाणे जीत्या विषये विकाररे । अति पञ्च माहाव्रत धाररे ॥ ३ ॥ मुनिवर आयो वहिरवा । सखी । गाथा पतिने गेह । दीठो मुनिवर दीपतो ।

सखी । चिमकी चतुरा तेहरे । आयो मुनिवर अम
गेहरे । हर्ष करी पुरित देहरे । मोदक दीधो धरि
नेहरे ॥ ४ ॥ मोदकले मुनिवर चल्यो । सखी ।
चिन्तवे चित मझार । एमोदक मुज गुरु भणी ।सखी।
किधो एह विचाररे । मुनि लब्दतणो भंडाररे ।
किधो तिण रुप उदाररे । वले आयोदुजी वाररे ।५।
लोभी मोदक लेचल्यो । सखी वली चिन्तवे मुनिराय ।
एविद्या गुरु कारणे॥ सखी । थिवर रुपवली थायरे ।
अति गलीत पलीत थई कायरे । लड़ थड़तामुके
पायरे । तीजी वेलां तिहां जायरे ॥ ६ ॥ डोसो देखी
दुवलो । सखी । देख थई दलगीर । वहरावे करुणा
करी ॥ सखी । जाय रह्यो एकतीररे । बली चिन्तवे
मन वड़ वीररे । इणमे लघु शिष्यनो सीररे । गुरु
पासे भणे जिमकीररे ॥ ७ ॥ कुक वहुवो वामणो ।
सखी । चाम चरण कर हीण। काणी कोची आंखड़ी।
सखी । गीड रह्या ले लीनरे । दंतुर किया अति
खीणरे । तीण रुप रच्यो अति दीनरे । बोले मुख
अति प्रवीनरे ॥ ८ ॥ चोथी वेलां आवियो । सखी ।
तिणद्विज घरने बार । पडी लाभ्या प्रेमेकरी ॥ सखी ।
मोदक सुध आहाररे । लेइ मुनिवर किध विहाररे ॥
लब्दे किया भेष अपाररे । नटवे दीठा तिण वाररे

॥ ६ ॥ उंचा महल थि उतरयो । सखी । नट वांद्या मुनिराय । जे जोइयते लीजिय । सखी ॥ जो कछु आवे दायरे । नटवो निज मंदिर जायरे ॥ पुत्रीने कही समझायरे । सुरतरु सम ए ऋषि रायरे । १० । जो नटवो हुवे आपणो । सखी । तो भरिय धन कुप । राज लोक रीझैवहु ।सखी। रीझे भला भला भुपरे । मुनिवरनो अकल सरुपरे । लब्द करी नवनवा रुप रे । एहने मोहरी चुंपरे ॥ ११ ॥ बीजी ढाले ढल कती सखी । मीठी राग मल्हार । मान सागर कहे सांभलो ॥ सखी ॥ सांभलतां सुख काररे । हिवे नटुवी करे विचाररे । मुनि चिन्तामण अनुहाररे । पामीजे पुन्य प्रकाररे ॥ १२ ॥

दोहा । बीजे दिवसे वहरवा । आयो उहि जगेह । नटवी दिठी नयण भर । पडी लाभे धरि नेह ॥१॥ आगी ऊभी आयने । जाणी चमकी बीज ॥ मुनिवर मन संसय पड्यो । एह रुपकी रीज ॥ २ ॥ रुपें रंभा सारखी । ईन्द्राणी अनुहार ॥ कै पदमण पातालकी । घड़ी आप करतार ॥ ३ ॥

ढाल तीजी।

बामणडी जोग मोहियो एदेसी।

भवन सुन्दरी जयसुन्दरी अति सोहैरे। मनमोहैरे। मुनि
वरको जाण। मुजरो नयणांको ॥ करजोडी आगल
रही। मुख बोलेरे २। बोले अति मीठी वाण।
मुनिवर मोह्यो माननी ॥ १ ॥ ज्यांसिर सोहै राषड़ी।
सिरगुंथ्योरे २। गुंथ्यो अति चंग वीणी भुयंगम सा-
रषी। विच करतोरे २ तिहां राज अनंग ॥ २ ॥
टीको नीको नीलवटे। मुख सोहरे २। पुनमनोचंद।
दंत जिसा दाड़िम कुली। जिहां सोहैरे अमृतनो
कन्द ॥ ३ ॥ आंख कमलनी पांखड़ी। गल सोहै
रे २। एकावली हार। नाकि नकवेसर भलो। कुच
सोहैरे २ श्रीफल अनुहार ॥४॥ बांहै सोहै बोरखा।
कर सोहैरे सोहनकी चुड़। कानां कुण्डल कनकमे।
डगावातेरे २ मत जाणो कूड ॥ ५ ॥ कट मेखल
सोणी तटे। कट चरणारे२ पहस्यो अति चंग। पाये
गुघर घम घमे। मुलकन्तीरे करे नव नवारंग ॥६॥
नयण वयण नारीतणा। तेकुस्यारे २। करवा कु-
चोट। मुनिवर मृग तन भेदियो। अतिदिधीरे नयणा
हंदी ओट ॥ ७ ॥ नयण वयण सर सारखा। अति
नाख्यारे २ तिहां भर भर मुठ। भेदालक तन भे-

दियो । जाय लागोरे । तेनहींसकी ऊठ ॥ ८ ॥ भवन सुन्दरी जय सुन्दरी । समझावेरे२ एतीजी ढाल । मान कहै समझ्यांपछै । धन्यासरीरे २ । राग विशाल ॥९॥

दोहा । करजोडी विनती करे । सुण सस्नेही साध ॥ घर घर भिष्या मांगने । कहोनी कुण फल-लाध ॥१॥ इसी सीख किम मानिय । लही मानव अवतार ॥ जिण ए भोगन भोगव्या । किण लेखे अव-तार ॥ २ ॥

ढाल चौथी ।

रामचन्द्रके बागां चांपोमोररहरी ।

सुण सस्नेहा संत । कामण अरज करेरी ॥ थे गोरवा गुणवन्त । घर २ कांय भमोरी ॥ १ ॥ याकुण दिधी सीख । योवन दिख्या ग्रहोरी ॥ घर २ मांगो भिष । कहो कांहि सिध लहिरी ॥ २ ॥ किणरे धुतारी धुर्त । चितड़ो चोर लियोरी ॥ वली कियो अवधुत । फिर फिटकार दियो री ॥ ३ ॥ फीरो उवराणे पाव । सुण आषाढ मुनिरी ॥ सुखोलुखो खाय । तिहां कहां सिध सुणीरी ॥ ४ ॥ पहीरि माला वेश सोचन कछु कियोरी । मस्तक लोच्या

कीस । देही दुख दियोरी ॥५॥ लुल लुल लागुं पाय। साहिब कह्यो करोरी ॥ थे सहुने सुखदाय। हमसें प्रीती करोरी ॥६॥ परणो जोवन वेश। नर भव सफल करो-री ॥ सुध विना क्लेश । कामण चित धरोरी ॥ ७ ॥ सुण सस्नेहा स्वाम। भेष परो तजोरी । थेहम आतम राम। मंदिरसेज सजोरी ॥८॥ फूल बिछाई सेज । नवर भांत भलीरो ॥ करे हीरणादि स्युंहेज पुरो चित रली री ॥ ९ ॥ तुम हम मिलवा कोड । मंदिर आय वसो री ॥ जासी जोवन छोड़। वैठा हात घसोरी ॥ १० ॥ द्रूम नटवी जल पंत। चरण आय लगीरी ॥ नेह निजर नीरखंत । देखी प्रीत अगीरी ॥११॥ कामणने सम-झाय। मुनिवर वात कहिरी॥ गुरकुं पुछुं जाय। आविस तुरत सहिरी ॥ १२ ॥ मान सागर कविराय । चोथी ढाल भणीरी ॥ कामणनेवस थाय। हिवे आषाड मुनि री ॥ १३ ॥

दुहा । वाट जोवे मुनीवर तणी । सतगुरु नयण निहाल ॥ एहवे आषाड़ मनिवरु । तिहां आयो तत काल ॥१॥ वरु असुरा आविया माथे चढियो सु र ॥ सतगुर शिष्यने पुछियो । वोले शिष्य करुर ॥२॥ घरर भिष्या मांगवी । घणो सन्तापो भिष । सिर सुर्य पग ल्यातपे । तपावली तुम सीख॥३॥ एउगाए। सुमती

एह तुमारो भेष ॥ सद्यान जावे खोण २ खाण वयण विशेष ॥ ४ ॥ बोल बांधी हुं आवियो । करी नटवी संकेत ॥ रह्यो न जावे भोग विन । नटवो बांध्यो हेत ॥५॥ हमने तुम आदेश दो । तोनटवी घर जाय ॥ भोग भलेरा भोगउं । हम कुंथयो उछाय ॥ ६ ॥

ढाल पंचमी ।

इण सरवरीयरीपाल उभादोय राजवीहो लाल उ० ॥

पभणे सतगरु सीख । सुणो शिष्य । वावलाहो ॥ लाल सु० । पर रमणीरे काज । थया किम आकुला हो । लाल थ० ॥ १ ॥ पंचमाहाव्रत धार । इस्यो तुम किम घटे हो० ॥ जाप जपे तुम नाम । लियां पातिक कटे हो० ॥ २ ॥ रत्न चिन्तामण हाथ । दाष कहो कुण ग्रहे हो० ॥ गेवरघुमे वार । गधो कुण संग्रहे हो० ॥ ३ ॥ बर छांड़िजे प्राण । हुता सणमें बलोहो० ॥ चारित्र रत्न नछोड़ । मकर नारी बलो हो० ॥ ४ ॥ तपकर आतम सोष । इन्द्री वस कि जीय हो० ॥ संजम विधस्युं पाल । बहुत जश लिजीय हो ॥ ५ ॥ नगमे सतगुरु सीख । कहै गुरु शिष्य भणी हो० ॥ मुझमन एहिज मोज । ग्रहे वसवा तणी

हो ॥ ६ ॥ हमकुं द्यो आदेश । शिष्य कहै वली २ हो ॥ जिण कुल मदरा मांस । तिहां रहिजोटलीहो ॥७॥ देखीस मदरा मांस ।भषण करती सहीहो ॥ तजस्युं त तचिण तेह । तिहां रहिस्युं नहीहो ॥ ८ ॥ हिवे आषाड़ मुणिन्द । आयो नटवा घरे हो० ॥ भवन सुन्दरी जयै सुन्दरी । विहुं उछव करे ॥६॥ जो मदरा नैमांम । तणो टालो करोहो० ॥ तो तुम हम घर वास । बोल मानो खरोहो ॥ १० ॥ दोनूंई मानी बात । बोल निश्चय करीहो ॥ जो तुम लोपांकार । साहिब जाज्यो फिरीहो ॥११॥ परणावी निज तात । भवन जय सुन्दरीहो ॥ भोगवे भोग रसाल । कवल संधोकरी हो ॥ १२ ॥ हांस विलास । विनोद विविध सुख मानताहो ॥ मानव भव अवतार । सफल कर जाणताहो ॥ १३ ॥ एक दिवस आषाड़ । चल्यो नृपती सभाहो ॥ तेड़ो आव्यो दुत । सुकन हुवा भला हो ॥ १४ ॥ लेई सामग्रहो साथ । नाटक करवा भणी हो ॥ प्रमदा पुठे छाक । पीये मदरा तणी हो ॥ १५ ॥ नाटक जीप आषाड़ । आयो घर आपणे हो० ॥ राजानो लई सुपसाय । सहु जै जै भणे हो ॥ १६ ॥ दिठो वनितावेस । विकल मद छाकणी हो ॥ चिर रहित पडो जाण । भुम प्र डाकणी हो ॥

१७ ॥ मुल स्वभाव नजाय । जतन बहुला करेहो ॥ श्वाननी बांकी पुंछ । सरल कहो कुण करेहो ॥ १८ ॥ मोतन जाय कोड । उषद बहु कीजिय हो ॥ काग-नहोवे स्वेत । साबण बहु दीजिय हो ॥ १९ ॥ छाडि संजम बेस । द्रूसी नारी वही ॥ पंचमी ढाल रसाल । विशाल घणी कही ॥ मान सागर आषाड़ । यहै रहिसि नहीं हो लाल ॥ यहै रहीसे नहीं ॥ २० ॥

दोहा । खरी सीख दिधी हुंती । पिण कामण लोपीकार ॥ हिवे रहिवो जुगतो नहीं । निश्चे भेव वहार ॥ १ ॥ विकल रुप नारी पडी । छोडी चाल्यो जाम ॥ छाक गडूमदरा तणी । नारी लाजी ताम॥२॥ कंथा क्रोध न कीजिय । अबला भाषे आम ॥ कीडी खुंकटकी कीसी । थेहम आतम राम ॥ ३ ॥ पलो झाल उभीरही । जाय सखी भरतार ॥ ओलाखीणो लाडलो । कब मेले करतार ॥ ४ ॥ प्राण पहली मरणी हती । अब किमदिजे छोड ॥ कतवारीरे सुत ज्युं । जिहांतुटे तिहां जोड़ ॥ ५ ॥

ढाल छठी ।

बीण गइरे म्हारी बीण गई ।

प्रीत लगी केसरिया कन्त । कहै मृगा नैनी सुण गुण वन्त ॥ तोसुं प्रीत लगी ॥ १ ॥ पीतकी रीत न

जागे कोय। जे जागे कुलवन्ती होय ॥ तो० ॥ २ ॥
एकरसु पीउ घरमे आय। लालन मोरो विरहो मि-
टाय ॥३॥ तुंमुझ प्रीतम प्राणाधार। तुझ विन सुनो
सयल संसार ॥४॥ तुंपिहर तुं सासर जाण। तुं परमे-
श्वर तुं रहमाण ॥ ५ ॥ वलतो कहै आषाढ़ मुनिश ॥
सोमन केरी पुगी जगीश ॥ ६ ॥ म्हे निज गुरुकुंदिधी
पुठ। कह कहावत आयो उठ ॥ ७ ॥ अवहुं लेस्युं
संजम भार। मैंनिज गुरनी लोपीकार ॥ ८ ॥ हुंअप-
राधी काठीन कठोर। विमुख थयो गुरुजीको चोर ॥
९॥ मे किधी चारित्र नी हाण। नहीं राखी गुरुजीरी
काण ॥ १० ॥ गुरुदीवो गुरु प्रतक्षदेव। हिवे हुं
कर स्युंगुरुजीकी सेव ॥ ११ ॥ कोप तजो नणदीरा
वीर। कामण सुंकांइ तोड़ो हीर ॥ १२ ॥ कहोजी
हमने कवणा धार। ये तो मुकोछो निरधार ॥ १३ ॥
मुनिवर जंपे सुण हे नार। सात दिवस रहिस्युं घर
बार ॥ १४ ॥ मे लवस्युं तुझधननी कोड़। पछे नम
स्युंगुरुवेकर जोड ॥ १५ ॥ छठी ढाले अर्थ सुचंग।
मान सागर कही मन रंग ॥ १६ ॥

दुहा। लेइ सझाइ सहु चल्यो। नृप पास ऋष
राज ॥ नाटक नृत संगीत रस। जुगत दिखाउं
आज ॥ १ ॥ कुंवर सझाया पांचसे। आरिसा आवा

स ॥ वीणा ताल मृदंग ध्वनी । राग वंध हुयोरास ॥२॥ लब्द करी लोकांविचे । आगे नव नवा रूप ॥ देख अचम्भो आषाढनो रीझ्यो चितमें भुप ॥ ३ ॥

ढाल सातवीं ।

रे लाला पुन्य पदारथ उलखो ।

रिध करी चक्र वरतनी तिहां भरत थयो रूष आपरे ॥लाला॥ षटषंड आण मनावतो । हिवे मांड्यो नव २ व्यापाररे । धन्य धन्य आषाढ मुनिसरू ॥१॥ धन आषाढ़ मुनि सरू । हिवे माड्यो नाटक जाणरे ।लाला॥ भरत तणे अहो नाणस्युं । जाणेपास्याकेवल ज्ञानरे ॥ ॥२॥ गज रथ घोड़ा पायका । वलि अन्तेउर परिवाररे ॥ लाला ॥ बतीस सहंस नरेसरू । लब्द करी किधातयाररे ॥ ३ ॥ भुषण अंग वणाविया वलि रूप कूमाररे ॥ भुवन आरिसि में रच्या । तिहां नाटक ना धूंकाररे ॥ ४ ॥ न्हावण मंडप नृपति । भुषण करी बेठादुररे ॥ एक आंगुल रही मुद्रका । तिण सोभा अधिक सनुररे ॥ ५ ॥ कायादिसे कारमी । पर सोभत देहरे ॥ आभरण करी सोभे । विन भुषण मंदीदेहरे ॥ ६ ॥ अस्थि रुधर मांसश्रुवरसी । भसलेषत बहुला आमरे ॥ अंतरगत आलोचता । मलमुत ना बहु ठामरे ॥ ७ ॥ भरत

तणी पर भावना। भावंतालह्यो केवल नाणरे ॥ कुंवर तीके प्रति बुझिया। केवल थयातीण अव सानरे ॥ ८ ॥ आइ सांभण देवता। अनुक्रमे चारित्र पालरे माधुसुगत पहुंता जाणने ॥ जेहनी लोक वधे सूभ वाणरे ॥ ९ ॥ इणपर भावना भाविय। जिम भाई अषाड़ मुन्दिरे ॥ ते मुगत तणा सुख पावसी। गुंण गावे सुर नर व्रन्दरे ॥ १० ॥ सतरे से तीसिसमे। श्रीनगर मेरुंदा जाणरे ॥ सातमी ढाल सुहामणी। कवि मान सागर सुभवाणरे ॥ ११ ॥

अथः सामायकरा बतीसदोष।

१० दश दोष मनसुं लागे ते कहै छै।

१ विवेक राखीने सामायक करणी कही छै
२ जगतमे जश कितीं अर्थे नहीकरणीकरेतोदोषलागे
३ इण लोकरी वन्छा घालीने सामयक न करणी
४ सामायकमें गर्व अहंकार नही करणो
५ सामायकमें वैठा मनमें भय न ल्यावणो
६ सामायकमें वैठा संसारीकामकोसंकल्पनहीकरणो
७ फल प्रते संदेह नही करणो (मै सामायक करुंछुं फल कद्हीमी

८ सामायकमेंबैठाकोइखोटावचनकहेतोरीसनकरणी
९ बिनय सहित सायायक करणी कहीछे
१० भक्ती रहित सामायक न करणी करे तो दोष लागे

१० दश दोष बचन सुं लागे ते कहे छे

१ सामायकमें कठोर कुवचन बोलेणो नही
२ सामायकमेंबैठावचनविचारीनेनिर्वद्यभाषाबोलणी
३ सामायकमें बैठा रागकरीसरागगीतगावणोनही
४ सामायकमें बैठा विना बतलायां बोलणो नहीं
५ सामायकमें बोलणो पडैतो थोडो निरदोष बोलणो
६ सामायकमें बैठा कलहकारी कथा करणी नहीं
७ सामायकमें बैठा हांसी कितोल ख्याल न करणो
८ सामायकमें बैठा उचा साद नहीं बोलणो
९ सामयकमें उपयोग सहित भणणो गुणणो करणो
१० सामयकमें बिकथा करणी नहीं धर्म कथा करणी

१२ बारे दोष काया सुं लागे ते कहैछै

१ दोनूं पग उंचा करने सामायकमें नहीं बैठणो
२ एक पग उंचोकरीने सामायकमें नहीं बैठणो
३ सामायकमें बैठा च्यारु दिशातमासोजोवणोनहीं
४ सामायकमें सावद्य काम करणो नहीं
५ सामायकमेंबैठाउसीसारोभीतप्रमुखरोसारोनलेणो

६ सामायकमें अंग उपयंग गोपवी नै राखणा
७ सामायकमें वैठा आलस मोडणो नही
८ सामायकमे वैठा आंगुल्यांमे कडका नहीं०) काढणा
९ सामायकमें शरीरको मयल उतारणो नहीं
१० सामायकमेंधरतीविनादेख्यांपुंज्यांहाथपगनहींधरणो
११ सामायकमें हात पग चंपावणा नही दुजापासे
१२ सामायकमेवैठानिद्रालेणीनहींविकथाकरणींनही

ए सामायक ना बतीस दोष कह्याते टालीने सामायक करे

इति सामायक रा बतीस दोष समाप्त।

अथः श्री अरिहन्त भगवानकी चौतीस

अतिसय

१ केस मांस रोम नख वधे नही सोभनीक रहै
२ निरोग शरीर हुवे लेप लागे नहीं
३ लोही मांस गायना दुध सरीषा उजला हुवे
४ श्वासोश्वासमेंकमलनीसुवासनासरीखीसुबासनाहुवे
५ आहारनिहारकरताचरमचक्षूनोधणीदेखसकैनहीं
६ आकाश मारगमें चक्रचाले
७ आकाश मारगमे छत्र चाले
८ आकाश मार्गे श्वेत चमरांको जोडो चाले
९ आकाशमार्गेपादपिठसहितफटिकसिंहासणचाले
१० आकाश मार्गे इन्द्र ध्वजा चाले

११ आशोक वृक्ष फल फूल सहित छायां करे
१२ पीठ पाछे भगवन्तने भामंडल दे दिपमान दिपे
१३ एक जोजनतांइ भुंमी भाग सुंवों रमणीक हुवे
१४ मारगमें कांटा सुंवां पड्या हुवेते उंधापडे
१५ छउं ऋतु सुखकारी होवे विचरे जठे
१६ एक जोजनमें सुगंध पवन वाजे धरती पुंजीजाय
१७ एकजोजनतांइपंचवर्णाफूलांकाढीकढींचाअचितहोवे
१८ एक जोजन तांइ सुगंध पाणीनों छिडकाव होवे
१९ (अमनोज्ञ) अणगमताशब्दरूपरसगंधस्पर्शउपशमे
२० (मनोज्ञ) गमता शब्द रूप रसगंधस्पर्शप्रगटहुवे
२१ एक जोजन तांइ भगवन्त नीवाणी विस्तरे
२२ अर्ध मागधी भाषाकरीने व्याख्यान करे
२३ आर्यअनार्यदोपदचौपदआपअपणीभाषामेसर्वसमजे
२४ भगवंत ना समोसरणमेंआपसमेवैरभावउपजेनहीं
२५ वादी वाद करणने आवे तेहातजोडीनेविनयकरे
२६ जो कदा वादी विनयनहींकरेतोतेमाहाकष्टमेंपडे
२७ पचीस जोजन तांइ टीडीनो उपद्रव नही होय
२८ पचीस जोजन तांइ स्वचक्रते देशाधिपति सैन्यांनो भय न हुवे
२९ पचीस जोजन तांइ परचक्र तेपराया राजानीसैन्यां नो भय नही हुवे

३० पचीस जोजन तांइ मरी मिरघी रोग न उपजे
३१ पचीस जोजन तांइ अतिघणो मेह नहीं होवे
३२ पचीस जोजन तांइ बर्षा नो अभाव न होय
३३ पचीस जोजन तांइ दुकाल न पडे भगवन्त विचरे
जठास्युं
३४ पचीसजोजनतांइआगलोरोगउपशमेनवोउपजेनहीं

इति श्रीअरिहन्त भगवानकी चौतीस अतिसय समाप्त ।

श्रीसिद्ध भगवानकी पैंत्रीस बाणी ।

१ संस्कार सहित वचन मुख स्युं उचारण करे
२ उंचा शब्द स्युं प्रगट अक्षरचरवड़ासुधवचनबोले
३ ग्रामीण वचन बोले पांडूर वचन बोले मुखस्युं
४ गंभीर उंडाखरसुं उंचाशब्दस्युं बोले
५ बोलतां थकां वाणीमें परछन्दा उठे
६ सरस कहतां रस सहित वचन मुख थी बोले
७ राग स्नेह रहित वचन बोले मुख थकी
८ सुत्र पाठ थोडो अने तेहनो बिस्तार घणो करे
९ पुर्व पर वचन विरुध मुख थकी नहीं बोले
१० जुदा भिन भिन अर्थ संदेह टालीने बचन कहे
११ व्याख्यान सांभलता हाराने सन्देह उपजे नहीं
१२ अनेरा वादीने वचन दोषमा देइने पराभवे

१३ सांभलणाहारानोमनहरेअनेरंठोकाणेचितजावेनहीं
१४ देशकाल देखीने वचन बोले जोग्यतापणे
१५ अर्थ करीने अति घणो विस्तार करेते मिलतो करे
१६ जीवादिक वस्तनो विचार कहे ते मिलतो कहे
१७ पद कहे ते आगले पदनी संपेक्षाय कहे
१८ वारता रूपवचनकहेतेहथीवालकपिणसमझेतिमकहे
१९ अति सरस मधुर भाषा बोले घणी स्वरूप
२० उपदेस कहतां थका कोइनो मर्म वचन नहीं बोले
२१ धर्म रूप उपदेस देतां थकां धर्म कथाही कहे
२२ वस्तनो प्रकाश करे तेहनो विस्तार करीने कहे
२३ पारकी निन्दा आपणी स्तुति वचन मांहे बोले नहीं
२४ मध्यस्थ वचन बोले श्लाघा लहे
२५ शब्द कारक लिंगथी असुध न कहे वचन
२६ तेहना वचन सांभलणहार चमत्कार पामें चितमें
२७ व्याख्यान अति घणो उंतावलो नहीं वांचे
२८ भगवन्त ना मुखनी वाणी रोगादिक दोषण रहित छे सुणने वालाने
२९ भर्म विनाकी भाषा भाषण करे
३० जे पदार्थ वर्णवे तेहिज विशेष सरूपथी संक्रमे
३१ वचन बोलेते वाचनारनो अपेक्षाय वचन बोले
३२ अर्थ पदार्थ जुदा भाषण करे

३३ सत्य साहासीक वचन सदा कहै धर्म कहैता
 मरम न पामें

३४ उछाह करीं सहित वचन वोले मुखथकी

३५ जीवादिक वस्त प्रकाश करता वचन वोले

इति श्रीसिद्धभगवानकी पैंतीस वाणी समाप्त ।

अथः पांच मण्डलाका दोष ।

संजोग मेले तो दोष लागे ॥१॥ प्रमाणस्युं दूधको लेवे तो दोष लागे ॥२॥ सरस आहार सराय सराय लेवे तो दोष लागे ॥ ३ ॥ निरस आहार विसराय विसराय लेवे तो दोष लागे ॥ ४ ॥ छव कारण विना आहार करे तो दोष लागे ॥५॥

छवकारण आहार करणोते कहै छे ।

क्षुदा वेदनी खमणी नही आवे तो आहार करणो ॥ १ ॥ व्यावचरे वास्ते आहार करणो ॥२॥ इर्या पालवारे वास्ते आहार करणो ॥ ३ ॥ संजम पालवारे वास्ते आहार करणो ॥४॥ प्राण घणादिन राखवारे वास्ते आहार करणो ॥ ५ ॥ धर्म जागरणारे वास्ते आहार करणो ॥ ६ ॥

छवकारण आहार नहीं करणो

रोग उपजतो जाण आहार नही करे ॥ १ ॥ उपसर्ग उपजे तो आहार नहीं करणो ॥ २ ॥ दया पलती नही दिसे तो आहार नहीं करणो ॥ ३ ॥ ब्रह्मचर्य पलतो न दिसे तो आहार नहीं करे ॥ ४ ॥ तपवास्ते आहार नहीं करणो ॥ ५ ॥ संथारे वास्ते आहार नहीं करे ॥ ६ ॥

अथः दशाविधि यति धर्म

खंती १ मुत्ती २ अजवे ३ मदवे ४ लाघवे ५

खंती १	मुत्ती २	अजवे ३	मदवे ४	लाघवे ५
खमारो करवो	निरलोभता	सरलताइ	मदनकरे	भद्रीकहलका पणोराखे

सच्चे६ संजमे७ तवे८ चेइय९ ब्रह्मचर्यवासे १०

सच्चे ६	संजमे ७	तवे ८	चेइय ९	ब्रह्मचर्यवासे १०
सत्यवचन	सतरेभेदे संजमपाले	बारेभेदे तपकरे	ज्ञानवन्त	सीलपाले

अथः सतरे भेद संजम ।

पृथ्वी काय संजम ॥१॥ अप्पकाय संजम ॥ २ ॥ तेउकाय संजम ॥ ३ ॥ वाउकाय संजम ॥ ४ ॥ बन-

स्पतिकाय संजम ॥ ५ ॥ बेइन्द्री संजम ॥६॥ तेइन्द्री संजम ॥७॥ चोइन्द्री संजम ॥८॥ पंचेन्द्री संजम ॥ ९ ॥ अजीवकाय संजम (वस्त्र पातरा लेवे पलेवे मेले जयणा स्युं (१० पेहा संजम (बहुमोला वस्त्र नहीं राखे कल्पते सवाय (११ उपेहा संजम (कालोकाल पलेहणाकरे (१२ अवहट संजम (आज्ञा माहिला कारजमें जोग वरतावे (१३ अपमेगण संजम (जयणा स्युं पुंजे परठे लघुनित वडीनित (१४ मनसंजम १५ वचन संजम ॥ १६ ॥ काया संजम ॥ १७ ॥

अथः बयालीस दोष ।

१६ सोले दोष उदगमणका श्रावकरे जोगसुं लागे ।

आधाकर्मी भोगवेतो दोषलागे॥१॥ उदेशी भोगवेतो दोष० ॥ २ ॥ पुतीकर्म ॥ ३ ॥ थापीतो ॥ ४ ॥ मिश्र ॥ ५ ॥ पाहुणो आगो पाछो ॥ ६ ॥ अनारायी उजालोकरे ॥ ७ ॥ मोलकी लेवीनेदेवे ॥ ८ ॥ उदारो लेवीनेदेवे ॥ ९ ॥ सदलो बदलो करे ॥ १० ॥ स्हांमो आण्यो भोगवे ॥११॥ छांदो कीवाड़ खोलीनेदेवे ॥१२॥ उंची अवखी जायगा स्युं उतारीनेदेवे ॥ १३ ॥ निमले पासे खोसीनेदेवे ॥ १४ ॥ सीरकी वस्तु बिना पुछ्यांदेवे ॥ १५ ॥ आधणमें अधिको उरे ॥ १६ ॥

१६ सोले दोष उतपातका साधु श्रावक

दोनाकी जागसु' लागी ।

धायनी पर लेवे ॥ १ ॥ दुतनी परे लेवे ॥ २ ॥ निमत भाषीनेलेवे ॥३॥ जातजगाडनेलेवे ॥४॥ गरीबी गाडूनेलेवे ॥ ५ ॥ वैदगरी करीने लेवे ॥ ६ ॥ क्रोध करीने ॥ ७ ॥ मानकरीने ॥ ८ ॥ मायाकरीने ॥ ९ ॥ लोभकरीने ॥१०॥ पहलो पछे दातारका गुणकरीने ११॥ विद्याकामण करीने ॥१२॥ मंत्र वैदगरो करीने ॥१३॥ गोली चुरण करीने ॥१४॥ सोभाग्य दो भाग्य करीने॥१५॥ गर्भपड़ाडूने लेवे तो दोष लागे ॥ १६ ॥

१० दश दोष येषणाका साधुके जोगसुंलागे

संका सहित लेवे तो दोष लागे ॥ १ ॥ सिचत हात खरड्यो हुवे ॥ २ ॥ सचित उपर मेल्यो लेवे तो दोष लागे ॥ ३ ॥ सचितकरी ढाक्यो हुयो लेवे ॥४॥ सचितकी संगटे आप्यो लेवे ॥ ५ ॥ आंधे पांगले खने स्युं लेवे ॥ ६ ॥ सचित अचित भेलो लेवे ॥ ७ ॥ शस्त्र पुरो नहीं परगम्यो हुयो लेवे ॥ ८ ॥ नाखतो द्रव्य आप्यो लेवे ॥ ९ ॥ आंगणो ततकाल नो नीप्यो होवे तो लेवे तो दोष लागे ॥ १० ॥

इति बयालीस दोष समाप्त ।

अथः बावन अणाचार ।

१ उदेशीक आहार (साधुरे अर्थे रांधीने आपे ते लेवे तो अणाचार लागे

३ नित पिंड एकघरसुं आहार लेवे तो अणाचार लागे ।

४ म्हांमो आणोडो आहारादिक लेवे तो अणा-चार लागे

५ रात्री समयमे आहार पाणी लेवे भोगवे तो अणा चार लागे

६ स्नान प्रमुख करे तो अणाचार लागे

७ सुगध तेल फूलेल भोगवे तो अणाचार लागे

८ माला फूलादिक नी भोगवे तो अणाचार लागे

९ वींभणा करीने वायरो लेवे तो अणाचार लागे

१० आहार पाणीदिक रात्रे बासी राखे तो अणा चार लागे

११ गृहस्थीरा भाजन ठांवमें जीमे तो अणाचार लागे

१२ राजपिंड राजा छत्रधारीके घरको आहार लेवे तो अणाचार लागे

१३ सदावरत (दानसालाका आहार) लेवे तो अणा चार लागे

१४ तैलादिकनो मर्दन करे तो अणाचार लागे

१५ काष्ट प्रमुखस्युं दांतण करे तो अणाचार लागे

१६ गृहस्थने सुख दुःख नीवार्ता पुछेतोअणाचारलागे

१७ दर्पण (काच) मे मुख देखे तो अणाचार लागे

१८ जुवो खेले तो अणाचार लागे

१९ सारी पाशा चौपड़ खेले तो अणाचार लागे

२० माथे उपर कपड़ो विना कारण ओढ़े तो तथा माथे छत्र धरावे तो अणाचार लागे

२१ वैदगी करे तो अणाचार लागे

२२ पगामें पगरखी पहरे तो अणाचार लागे

२३ अग्निनो आरम्भ समारम्भ करे तो अणाचार लागे

२४ सम्यातर (साधुने रहनेवास्ते थानक देवे) तेहने घरको आहार भोगवे तो अणाचार लागे

२५ माचा पिलंग ढोलिया उपर बैठे सुवे तो अणा चार लागे

२६ शरीर रोग प्रमुख थी बीमार थइ होवे १ तथा तपशी होवे २ तथा शरीर माहि असगती होवे ३ ए तीन कारण बिना गृहस्थोरे घरे बैठे तो अणा चार लागे

२७ शरीरे पीठी चोलवे तो अणाचार लागे

२८ गृहस्थरी व्यावच करे तथा गृहस्थस्युं करावे तो अणाचार लागे

२९ पोतेकी जातीकी ओलखणा करी पेट भराइ करे तो अणाचार लागे

३० मिश्र हुवो पाणी (जे वासण विषे पाणी उकालवा मुक्यो छे ते वासण ना निचा भागने विषे तथा विचला भागने विषे अने उपरला भागने विषे ए तीनूं जागें अग्नि लागी नथी तीनूं जागें पाणी उनोथयो नथो इमो मिश्र पाणी लेवे तो अणाचार लागे

३१ रोगे पिड्यो थको गृहस्थ नी व्यावचने संभारीने सर्णाग्रह तो अणाचार लागे

३२ मुलो प्रमुख खावे तो अणाचार लागे

३३ आदो प्रमुख खावे तो अणाचार लागे

३४ सेलडी ना कटका काचा भोगवे तो अणाचारलागे

३५ कंद भोगवे तो अणाचार लागे

३६ मुल भोगवे तो अणाचार लागे

३७ फल भोगवे तो अणाचार लागे

३८ बीज भोगवे तो अणाचार लागे

३९ संचल लुण भोगवे तो अणाचार लागे

४० सिन्धो लुण भोगवे तो अणाचार लागे

४१ रोम लुण भोगवे तो अणाचार लागे

४२ समुद्रको लुण भोगवे तो अणाचार लागे

४३ खारो लुण भोगवे तो अणाचार लागे

४४ सिन्ध देशनो पर्वत थी निपज्यो कालो लुण भोगवे तो अणाचार लागे

४५ धुप खेवे तो अणाचार लागे

४६ जाणकार वमण करे तो अणाचार लागे

४७ गुंज जगां धोवे तो अणाचार लागे

४८ जुलाव झाड़ भोगवे तो अणाचार लागे

४९ दांतण करे दांत रंगावे तो अणाचार लागे

५० आंखां काजल आंजे तो अणाचार लागे

५१ तेल मालिस करे तो अणाचार लागे

५२ शरीर नी सुश्रुषा करे तो अणाचार लागे

इति बावन अणाचार समाप्त।

अथः बहु सुर्तोने सोले ओपमा।

संखकी ओपमा ॥ १ ॥ अश्वकी ओपमा ॥ २ ॥ सुभटनी ओ० ॥ ३ ॥ हाथीनी ओ० ॥ ४ ॥ वृषभनी ओ० ॥ ५ ॥ सिंहनी ओ० ॥ ६ ॥ बसुदेवरी ओ० ॥७॥ चक्रबरतनी ओ० ॥ ८ ॥ सक्रेन्द्रनी ओ० ॥ ९ ॥ चंद्र-

मानीओ०॥१०॥सुर्यनी ओ०॥११॥कोठारीनीओ० ॥१२॥ जंवु सुदर्शणनी ओ०॥१३॥सीता नदीनी ओ०॥१४॥ मेरु गीरी नीओ०॥१५॥ स्वयंभुरमण समुद्रनी ओपमा ॥१६॥

अथः अष्ट संपदा

आचार संपदा ॥ १ ॥ शरीर संपदा ॥ २ ॥ सुत संपदा ॥ ३ ॥ वचन संपदा ॥ ४ ॥ विनय संपदा ॥५॥ मतसंपदा ॥६॥ उपयोग संपदा ॥७॥ सुगुरु संपदा॥८॥

चवदे स्थानक सम्मुर्छिम मनुष्य उपजे ।

वड़ीनित (दिसां जाविजठे) ॥ १ ॥ लघुनित (पेशावमे) ॥ २ ॥ लोहीमें ॥ ३ ॥ राधमें ॥ ४ ॥ विर्यमें ॥ ५ ॥ खेल खंखारमें ॥ ६ ॥ श्लेष्म (नाकरा मैलमें ॥ ७ ॥ वमनमें ॥ ८ ॥ पीत पड़े तेहमें ॥ ६ ॥ विर्यरा पुदगल आला हुवे तेहमें ॥१०॥ स्त्री पुरुषरा संजोगमें ॥ ११ ॥ मुवाजीवरा क्लेवरमें ॥ १२ ॥ असुचमें ॥ १३ ॥ कादेमें ॥ १५ ॥

इति।

स्वामी भिषणजी कृत ।

अथः एकलरो चौढालियो ।

दोहा । आरंभ जीव गृहस्थी फिरे त्यारी नेश्राय ॥ अन्य तीरथी पासथादिक । तेपिण तेहवा थाय ॥१॥ बैरागे घर छोड़ने । राचे विषय रसरंग ॥ रागद्वेष व्याकुलथका । करे व्रतनो भंग ॥ २ ॥ ते रति पामे पाप कर्ममें । सावद्य सरणो मान गण छोडि हुवे एकला । कुड कपटरी खान ॥ ३ ॥ न्यात लजावे पाछली । वले भेष लजावणहार ॥ एहवा मानव एकल फिरे । धृग त्यांरो जमवार ॥४॥ ते घणा भेलो रहै सकै नहीं । ते एकलड़ा थाय ॥ कुण २ दोष तिणमें कह्या । ते सुणज्यो चितलाय ॥ ५ ॥

ढाल १ ली ।

कर्म जोगे सुरमाठा मिलीया ॥ एदेशी ॥

केइ आप छांदे फिरे एकला । ते जिन मारगमें नहीं भला ॥ साध श्रावक धर्म थकी टलिया । संसार समुद्र मांहे कलिया ॥ १ ॥ एकलो देख लोक पुछा

करे। तोघणो क्रोध करीने तिणस्युं लड़े॥ वली
वांदे नहीं जव मान वहे। करडा वचन तिणनेरे
कहे॥ २॥ कपटाइ घणीछे एकलतणो। सुत्रमें
भाष्यो तीभवन धणी॥ वली लोभ घणोछे वहुल पणे॥
श्रीवीर कह्योछे एकल तणे॥ ३॥ वहु आरंभने विषे
रक्त घणो। संचोकरे वज्र पाप तणो॥ नटवि अर्थें
भोगतणो। वहु भेषधर माहा ग्रधपणो॥ ४॥ घणा
प्रकारे करे धुरतपणो। संके नहीं करतो कर्मरिणो॥
अध्यवसाय मनरो अतहीघणो। माठो वर्तेंछे एकल
तणो॥ ५॥ वहु कोहि माणे माया लोभ पणो। रते
नरे सढ़े संकए घणो॥ ए आठ ओगण घटमें वरती।
हिन्सादिक आश्रवनो भरथी॥६॥ वली साधुनो लिंग
लिया वहे। कर्मे ए वांध्यो इम कहे॥ हुं छुंधुर चार
तियो आचारी। सतरे भेदे संजम धारी॥ ७॥ रखे
कोइ देखे अकारज करतो। आजीवका अर्थी रहे
डरतो॥ अज्ञान प्रमाद स्युं दोष भर्‍यो। निरंतर
मुढ मोह कुप पर्‍यो॥ ८॥ जिनधर्म न जाणे आप
छांदे रह्यो। त्यांने कर्म वांधणने पंडित कह्यो॥ पाप
कर्म स्युं अलगा रहे नहीं। त्यांने संसारमे भमणा
कही॥ ९॥ आचारंग पांचमें अध्येन भाष्यो। पहले
उदेसे जिनदाष्यो॥ ए चिरत कह्या छे एकल

तणा । हुणा अणुसारे अत ही घणा ॥ १० ॥ एहवा अपछंदा अवनितो । त्यां छोडि जिणधर्म तणी रीतो ॥ निरलज भागल विपरीत । किम आवे त्यांरी प्रतित ॥ ११ ॥ उसन्नांदिक पांचु'रेभणी । सुत्रमें वरज्याछे त्रिभवनधणी ॥ ए तो मोषमारग राछे फंदा । एहवाछे जैनतणा जिन्दा ॥ १२ ॥ त्यां छोडि लोकीक तणी लजिया । संका नहीं आणे करता कजिया दोषण काढ्यां तो तपता रहे। छाया परिसा ते किम सहे ॥ १३ ॥

दोहा । ठाणा अंग मांह कह्यो । एकलरो विवहार ॥ आठ गुणा कर सहितछे ते सुण ज्यो विस्तार सरधामें सेंठोघणो नसकै देव डिगाय । सत्यवादी प्रगन्या सूरछै । वले बोले नहीं अन्याय ॥ २ ॥ सुत ग्रहवा सक्त घणी । मर्यादावन्त बखाण ॥ बहु सुरती नवमा पूर्वतणी । तीजी आचार बत्थु नो जाण ॥ ३ ॥ पांचमें पांचु समर्थों । शरीर तप एकल पणो जाण । सबे करी सेंठो घणो । समर्थ शरीर बखाण ॥ ४ ॥ कलहकारी छठे नहीं । सातमें धिरज ताह ॥ अनुकुल प्रतिकुल उपशर्ग सहै । आठमें बिर्य उछाह ॥५॥ ए आठगुणा सहितछे । तोकरणो उग्र बिहार ॥ ते पिण गुरु आज्ञा दियां । फिरे एकल मल अणगार॥६॥

आठगुणा विन एकल फिरे। ते अवित्त मुढ़ अयाण॥ वले आचारंगमे नषेधियो। ते सुण ज्यो चतुर सुजाण ॥ ७ ॥

ढाल २ जी

(त्याने पार्षंडि नीहुवे जिन कह्यारे ए देशी)

एकलने मुनिवर रे भाव नषेधियोरे। अवित्तने कह्योछे गण विगाड़रे॥ दुष्ट प्राकमरी थानक तेह-मेरे। दुष्ट कह्यो तिणरी विवहाररे॥ अवित्तने रहणो निषेध्यो एकलोरे॥ १ ॥ धुरसुं तो लोपी अरिहन्त आगन्यांरे। एक तो आहिज मोटी खोडरे॥ वले नांव धरावे एकल साधरोरे। तेतोछे जिन सांसणमे चोररे॥ अ० ॥२॥ सुत्र अव्यक्त नेवय अव्यक्तपणोरे। तिणरी चौभंगी मनमे धाररे॥ यां दोनूंही वोलांमें काचो नहीरे। तो नचित रहो एकल अणगाररे॥ ॥ अ० ॥ ३ ॥ कोइगण मांहे रहता पडियो चुकमेरे। तिणनेगुर हितस्युं दिधी सीखरे। अव्यक्त क्रोध तणे वस आयनेरे। वचन न बोले गुरुने ठीकरे॥अ०॥४॥ सगला साधु तो इमहिज चालतारे। त्याने सीखा-वण नदेकांयरे॥ हुंघणा मांहि तो रहसकुं नहीरे। ओघट घाट घणी मनमांयरे॥ अ० ॥ ५ ॥ अभमानी

आपण पो मोटो मानतोरे । प्रबल मोह मांहे मुर्भा यरे ॥ कार्य अकार्य सुध सुभे नहीरे । विवेक विकल ते एकल थायरे ॥ अ० ॥ ६ ॥ गामाणुं गामविचरता तेहनेरे। घणी अवाधाउपजे आयरे ॥ अवाधा एकलने षमणीदोहेलीरे । षमवारो जाणे नही उपायरे ॥ अ० ॥७॥ वीर कह्यो म्हारा उपदेसथीरे। तोमे शिष्य एकल पणो म होयरे॥ आतो अज्ञा तिर्थंकर देवनीरे । गमण मत छोडो सुल जोयरे ॥ अ० ॥ ८ ॥ आचारंग पांच मांध्येनमेरे चोथि उदेसे एहवा भावरे ॥ उपसर्ग थी आबाधा उपजे तेहनेरे । विवरो कहुंछुं तिणरोन्या यरे ॥ अ० ॥ ९ ॥

दोहा । श्वाश खांस ताव तेजरो । रोगउपजे अनेक बिध आय ॥ वले गरढा पणो आयांथकां । बिबध पणे दुःख थाय ॥ १ ॥ वले प्रणाम चलबिचल हुवे । किणरी हटक न थाय ॥ ज्यां एकल पणो आ दस्यो । त्याने परभवचिन्त नकाय ॥ २ ॥ जो साधांरी संगत रहै । तो वधेघणो बैराग ॥ आप छांदे एकल फिरे । जाय संजम थी भाग ॥ ३ ॥ भागणारा उपाय छे अतिघणा । तेपुरा कह्या न जाय ॥ पिण कहुं थो डिसी वानगी । ते सुण ज्यो जित लाय ॥ ४ ॥

ढाल ३ जी ।

धिग २ मोह विटम्बणा एदेशी ।

ताव चढ़े कदे आकरो । वाचारुके बोल्यो न विजायोरे ॥ त्रिषा अतुलवाय भड़कियो । उणरेकुण सखाइ थायोरे ॥ धिग २ अव्यक्त एकलो ॥१॥ कदा कर्म जोगे कुतड़ो डसे । तो ठले मातर कुणजायोरे ॥ डामरु जानवालादिक हुवां । उणरेकुण आहारपाणी ल्यायोरे ॥ धि० ॥ २ ॥ जब कोइ कायर सिधांवता । आप छांदे करे मन जाण्योरे ॥ भुष त्रिषारा पीड़िया । खावे गृहस्थीरो आण्योरे ॥ धि० ॥ ३ ॥ कोइ आर्त ध्यान मांहि मरे । नर्क तिर्यंचमे जायोरे । उतकृष्टो अनन्ता भवभमे । चिहुं गतगोताखायोरे ॥ धि० ॥४॥ स्त्री आय वकारियां । लाग ज्यावे तिण चालेरे । विटल हुआ ने होसीघणा । किणरीलज्या सील पालेरे ॥ धि० ॥ ५ ॥ विषे अत्यंत पिश्यांधका । वेश्यादिकने घरे जायोरे ॥ माठी भावना भाविया । कुण आणे तिणने ठायोरे ॥ धि० ॥ ६ ॥ अकार्य करतो संके नहीं । थोड़ा सुखांरे काजेरे ॥ बात चावी हुवां लोकमें । कने बैसण वाला पिणलाजेरे ॥धि०॥७॥ इमजाणी नर नारियां । एकल दुर तजीजेरे ॥ घर हाण हांसी हुवे लोकमें । इसड़ो काम न किजेरे ॥

धि्॰ ॥ ८ ॥ क्यां स्युं प्रकत पाछि मिलि नही । क्यां स्युं न मिलि सभावोरे ॥ दुःख बांधो हुवे एकला । केइ करे घणा अन्यायोरे ॥ धि्॰ ॥६॥ क्यां स्युं पोते आचार पले नहीं । वले कुड़ कपटरो चालोरे ॥ ते गणछोडि हुवे एकला । ओरां सिरदे आलोरे ॥ ॥ धि्॰ ॥ १० ॥ क्यां स्युं पोते आचार पले नहीं । पिण समकितराखे चोखोरे ॥ गण छोडि हुवे एकला । नहीं काढे ओरांमे दोषोरे ॥ धि्॰॥११॥ पछे मोह कर्मउदे हुवां । कुड़ कपट चलावेरे । फिरती भाषा बोले घणी । अणहुंता अवगुणगावेरे ॥धि्॰॥१२॥ गामां नगरां विचरतां । लोक पुछे हर कोइरे ॥ थे साधां मांस्युं निकली । आतमा कांय बिगोइरे ॥ धि्॰ ॥ १३ ॥ जब केइक बोले पाधरा । केइ बोलि आल पंपालोरे ॥ केइ क्रोध करी महा प्रजले । केइ मुंह करे विकरालोरे ॥ धि्॰ ॥ १४ ॥ केई दोषण ढांके आपरा । ओरांमे बतावे चुकोरे ॥ पुछ्यां न बोले पाधरा । पुजाअधारा भुखोरे ॥ धि्॰ ॥१५॥ केइक लाला लोलो करे । आहारादिकरा लपटीरे॥ पुरो निकाल काढे नही । असा छे एकल कपटीरे ॥ ॥ धि्॰ ॥ १६ ॥ आय साधाने वनणा करे । महा माठा परिणामोरे ॥ बिनो नर्माइ करे घणी । एक

पेट भरणारे कामोरे ॥ धि० ॥ १७ ॥ समभु नरनार वान्दे नहीं । आज्ञा लोप एकलो देखोरे ॥ आहार पाणी न दे भावस्युं । तो हुवे साधांरो द्वेषीरे ॥धि०॥ तेऌल छिद्र जोंवतो रहै । दुष्ट प्रणामादिन काढेरे ॥ च्यार तिर्थ स्युं तपतो रहै । मोषतणी व्रत बाढेरे ॥ ॥ धि० ॥१९॥ दग्ध वीजकरे आकरो। ओरांरे घाले संकोरे ॥ भर्ममे नाखे लोकने । असोछै एकल बं- कोरे ॥ धि० ॥२०॥ चित भरमो फिरतो रहै । तिण साची समकित नावेरे ॥ कदाच ज्यो आइ हुवे । तो थोड़े मांह गमावेरे ॥ धि० ॥२१॥ मांगने खाणो पारको । वले कने साधुको भेषोरे ॥ सरधा राखे निर्मली । कोइक बिरला देखोरे ॥ धि० ॥२२॥ च्यार तिर्थने ओर लोकमे । फिट २ सगले कहाणोरे ॥ जो अवगुण आणे आपमें । साची सरधारा ए अहना णोरे ॥ धि० ॥२३॥ वले अवगुण काढे तुरत तेहनो तोही कुलष भाव नही आणे रे ॥ अभिन्तर समकित परगमी । ते तो मोटा उपगारी जाणे रे ॥ धि० ॥ ॥२४॥ बोध सम्यक्त पायो ज्यांकने । त्याने दिठां हर्षत थायोरे ॥ विनै भगत करे घणी । तो साची सरधा दिसे तिणमांयोरे ॥ धि० ॥ २५ ॥ साध साधवि ने सरधा तणा । पुठ पाछै गुणगावरे ॥ एकण धारा बोलतां । प्रतीत दुणविध आवेरे ॥ धि० ॥ २६ ॥

दोहा। भला कुलरो विगडो तीका। जोवे वि
राणा साथ ॥ ज्युं साधु विगड्यो आचार थी। किण
विध आवे हात ॥ १ ॥ आज्ञा लोपी सतगुरुतणी।
तिणने ओरमा छै गलिहार ॥ आप छान्दे एकला
फिरे। ज्युं ढोर फिरे रुलिहार ॥ २ ॥ विगड़ा धा
नरी पाखती। बैठां दुरगंध आय ॥ ज्युं एकल री
संगत कियां। बुध अकल पत जाय ॥ ३ ॥ जो
एकल ने आदर दिये। तो वधे घणो मिथ्यात ॥
फूट पड़े जिनधर्म में। तेसुणजो विख्यात ॥ ४ ॥

ढाल चौथी।

(धन्य २ मेतारज मुनि एदेशी)

जिण सांसणमें आगन्यांवडी। आतो वांधिरे श्री
भगवन्तपाल ॥ ए तो सजन असजन भेला रहै।
छांदे चालेरे प्रभुवचन संभाल ॥ बुधवन्ता एकल सं
गत न कीजिय ॥ १ ॥ छांदो रुध्यां विण संजमन
निपजे। उत्राध्येनरे चौथा अध्येन मांह ॥ गाथा आ
ठमी मांहि कह्यो। एतो जोवोरे चोडे सुतरो न्याय ॥
॥ बु० ॥ २ ॥ छांदो रुंध्यां विण संजम निपजे। तो
कुंण चालेरे परनी आज्ञा मांय ॥ सहु आपमते हुवे
एकला। पीणमें भेलारे पीणमे विखर जाय॥बु०॥३॥
जो आपमते हुवे एकला। तो सांसणमेरे पड़ जाय
घमडोल ॥ एहवा अपछंदारी करे थापना। ते भेद

न पाथोरे भुलां रह गइ भाल ॥ बु० ॥ ४ ॥ वैराग घटे तिणरी पाखतो । केउणरी संगतरे आवे मुल मिथ्यात ॥ के साधां सुं उतर जाय आसता । साची श्रध्यांरे एकलरी वात ॥ बु० ॥ ५ ॥ भिड़कावे साधांरी समदायथी । आपसमें रे बोले विरुवा वैण ॥ वले छिद्र दावे एक एकने । साध दिठांर वले अंतर नयैण ॥ बु० ॥ ६ ॥ नकटादिक चोरकुसिलिया । वधी चाविरे आप आपणी न्यात ॥ ज्युं भाग लने भागल मिले । घणो हरषेरे करे मनोगत वात ॥ बु० ॥ ७ ॥ चोरी जारी खुन अकारज कियां । राजा पकड़ेरे सिर छेदे पोड़ ॥ वले देशनिकालादे काढियां । त्याने राखेरे भील मैणादिक चोर ॥ ॥ बु० ॥ ८ ॥ ते बिगाड करे तिण देशनो । भील मैणारे त्याने आणी साथ । दुःख उपजावे रेत गरीबने । धन लेज्यावेरे त्यांरी कर कर घात ॥बु०॥९॥ त्याने असणादिक आदर दियां । लफरो लागेरे भाग्यां राजारी आण ॥ कदा राय कोपे तो धन खोसले । जीवां मारेरे तिणरा एफल जाण ॥ बु०॥१०॥ इणही दिष्टंते साधांरे समदायमें। दोष सेव्यांरे साध काढे गणवार ॥ ते आप छांदे एकला रहै । के भागलरे आगे पाछे फिरे लार ॥ बु० ॥ ११ ॥ तेतो साधांरा ओगण वोलता फिरे । मुख मीठोरे खेले अंत

रवात ॥ ओछी बुधवालाने विगोवता । कुड़ीकथ
णीरे कुड़ीकर कर वात ॥ बु० ॥ १२ ॥ त्यांरी भाव
भगत संगत कियां । तिण भांगीरे श्रीजिनवर आण ।
तेतो दुःख पामे इण संसारमें । उतकृष्टोरे अनन्ता
जन्म मर्ण जाण ॥ बु० ॥ १३ ॥ चोरने आहार
आदर दियां । अहलोकरे धनजीवरो विणास ॥
भेषधारी भागल एकल तणी । संगत किधांरे वंधे
कर्म तणीरास ॥ बु० ॥ १४ ॥ उसन्ना कुसिल्याने
पासत्था । अपछंदारे संसतादिक जाण ॥ त्याने
तिरथमें गिणवा नहीं । कर लीज्योरे जिन वचन
प्रमाण ॥ बु० ॥ १५ ॥ एतो हेलवा निन्दवा जोगछै।
खोटकरणोरे त्यारि गिनातामें साख ॥ त्यांरो संग
परचो करणो नहीं । सुत्रमेंरे भगवन्त गया भाष ॥
॥ बु० ॥ १६ ॥ आतो अनन्त संसारे आरे कियो
एहलोकरे परलोक हुसी भंड ॥ त्यांने आहार पाणी
उपध दियां । तिणने आवेरे चौमासीरो दण्ड ॥
॥ बु० ॥ १७ ॥ भेला वैठ सोभाय करणी नहीं ।
नही करणोरे त्यांरे साथ बिहार ॥ यांरो संग पर
चोकरतां थकां । ज्ञानदर्शणरे चारित्ररो विगार ॥
॥ बु० ॥ १८ ॥ एतो चरित्र कह्यो एकलतणो ।
भवजीवानेरे प्रतिबोधण काज ॥ इम सुणने नर ना-
रिया । सतगुर सेव्यारे पामे मुगतनोराज ॥बु०॥१९॥

इति श्री एकलरो चोढ़ालियो समाप्त ।

शुद्धाशुद्ध पत्र ।

पृष्ठांक	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
२	१७	तुंहो	तुंही
२	२०	दसमो	दशमी
४	१	जिस्तवन	जिनस्तवन
५	१८	घ्यायने	ध्यायने
७	६	जिन	जन
१०	१६	द्वेग	द्वेष
१२	५	वंवीत	वंछित
१२	१८	श्रेणो	श्रेणी
१३	९	तोड़ो	तोड़ी
१५	७	लागोछोजो	लागोछोजी
१९	१६	संगमे	संगम
२७	१४	अश्र:	अथ:
३२	१२	अजोवाका	अजीवका
३३	१	लैगा पुन्नं	लैनपुन्न
३३	१५	आव	आस्रव
३३	१६	घ्राणा	घ्राणा
३४	१०	घ्राणा	घ्राणा

पृष्ठांक	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
३७	३	अन्तराहित	अंतरहित
४०	६	भांगा १२	भांगा ९
४४	६	धर्मांस्तिकाय	धर्मास्तिकाय
५०	२१	जीव	जीव
५५	१४	जीव निर्जरा	जीव संवर निर्जरा
५८	१७	एकको	एकक्रे
७८	२०	उगणीस	तेवीस
८४	७	वंधे	वधे
८५	४	आस्रत	आस्रव
९८	१४	निवद्य	निर्वद्य
१०५	१	द्रव्यता	द्रव्यतो
१०५	१६	रहित	सहित
१०६	१	रहित	सहित
११०	१०	आदराबा	आदरवा
११०	१५	आनरवा	आदरवा
१२३	१०	ओदरिक	ओदारिक
१२८	११	ल्पयोपम	पल्योपम
१३२	६	उत्तकुरुकां	उत्तरकुरुका
१५०	२०	आलाउ	आलोउं
१५१	४	तस्म	तस्स
१५२	१५	अनेक क्रिडा	अनंग क्रिडा

पृष्ठांक	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
१६४	१४	धम्मामंगलं	धम्मोमंगलं
१७३	६	त्यारो	त्यांरो
१७८	१	कीधी	किधी
१८३	१	जान	दान
१८३	६	किघी	किधी
१८४	४	क्रोड़मम	क्रोड़मग
१८५	११	युही	युंही
२०१	२	पुन्या	पुन्य
२०१	४	विविघ	विविध
२०२	६	उत्म	उत्तम
२०३	१७	इूद्रादिक	इन्द्रादिक
२०६	१०	दूध	दूघ
२०६	२०	होसी धणेरा	होसी घणेरा
२०६	२१	जिमस्यु	जिभस्युं
२०७	२०	प्रमु	प्रभु
२१४	१३	अस्तुति	स्तुति
२२६	७	दवबन्ती	दवदन्ती
२३२	१०	पटघटषट	पट षट थट
२३९	१५	सुगत	सुगत
२४१	२१	विचरितां	विचरतां
२५२	८	सुनिसक	मुनिसक

पृष्ठांक	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
२५३	६	मुन्दि	मुनिन्द
२५४	५	बोलिणो	बोलणो
२५४	७	गीतगावाणो	गीत गावणो
२५६	१२	मामधी	माघधी
२७४	१७	पुजा श्रधा	पुजा श्लाघा
२७६	१५	कोजिय	कीजिय
२८७	१	भाल	भोल

पाठकों से सविनय प्रार्थना है की पेज नम्बर २५७ में भुलसे श्री सिद्ध भगवानकी पैंतीस वाणी छप गई है उसे पाठकगण श्री अरिहन्त भगवानकीं पैंतीस वाणी पढ़ें और अपनी पुस्तक मे भुल शुद्धा-रलें।

पेज नं २२४ में अथ: मरियादा उपर ढाल छपी हैं उसे मुनिगुण वर्णनकी ढाल पढ़ें।

सन्तमलजी स्वामीकृत

श्रीडाल गणी के गुणाको ढाल

(चलोरी सखी छवि देखनकु रथमे चढे रघुनन्दन आवत है एदेशी)

पेखोरी भविजिन राज समी । गणी राज छटा दरसावत है ए आंकडी ॥ भिक्षू सप्तम पाटे सोहत । मघवा सम गणी राज कहावत है ॥ पेखोरी ॥ १ ॥ तात कनइया मात जडावें । तसुनन्दण मन भावत है ॥ पेखोरी ॥ २ ॥ थिर सुमेर गम्भिर स्वयंभु । वचमहावीर सोधरावत है ॥ पेखोरी ॥ ३ ॥ बाण सुधामृत वाग्रत स्वामी । भवि सुण सुण हर्षावत है ॥ ४ ॥ भविजन पेखत गणी तुम, आनद देखत । तनुलोम लोम हुलसावत है ॥ पेखोरी ॥ ५ ॥ कल्प तरु सम नाथ हमारो । सेवत वंछित पावत हैं ॥ पेखोरी ॥६॥ उगणीसे पैसठ पट मोत्सवमें । सन्तमल गुण गावत है ॥ पेखोरी भविजिन राज समी गणी राज छटा दरसावन है ॥ ७ ॥ इति समाप्त ॥

सवैया

रुप अनुप सवे जगछादित वाणी सुधासम है मनमानी ।
तेज दिवाकर है जगमोहन साहर्नी वाच सदा सुभध्यानी ॥
देव तरु सम दीन दयालजी वंछित पुरण हें सुभ ज्ञानी ।
दीन उधारण पोत सु जाहिर डाल गणीन्द वडोवरदानी ॥

इति

प्रस्तावना

मैंने जो यह पुस्तक श्रावक ईसरचन्दजी चोपड़ा मु० गंगाशहरवालों के कहने से स्वामीजी श्रीभीखणजी कृत चर्चाके बोलोंके थोकडा व पूज्य गणीराज के गुणोंके स्तवन सज्झाय ढाल छन्द सवैया वगैर. सग्रह करके मेरी बुद्धि प्रमाण व श्रावक नथमलजी चोपड़ा की सहायता से यथार्थ रीति सुधार कर भव्यजीवों के सीखने व पढ़ने के लिये "जिनज्ञान दर्पण" छपवाकर प्रगट करी है सो जो कोई भूल चूक रही हो उसे गुणीजन शुद्धकर पढ़ें पढ़ावेंगे । आशा है कि मेरी तुच्छ बुद्धि की तरफ ख्याल न करेंगे । जयणायुक्त पढ़ें पढ़ावे अगर मेरी भूल से श्रीजिनेश्वरदेव के वचनों के विरुद्ध वचन भूलसे छपा हो तो मुझे मिच्छामि दुक्कड ।

आपका हितेच्छु—

श्रावक महालचन्द बयद ।

पुस्तक मिलने के पते :—

भैरुंदान ईसरचन्द चोपड़ा

मु० गंगाशहर, जि० बीकानेर ।

भैरुंदान ईसरचन्द चोपड़ा

नं० २ पोर्चुगीज चर्च ष्ट्रीट, कलकत्ता ।